समाज के स्तम्भ

(मूल लेखक—हेनरिक इब्सन)

अनुवादक—श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र,

बी० ए०

ग्रंथ-संख्या—५६

प्रकाशक तथा विक्रेता

भारती-भण्डार

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण

वि० '९९

मूल्य १)

मुद्रक

कृष्णाराम मेहता,

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

यह पुस्तक यूरोप के प्रसिद्ध नाटककार हैनरिक इब्सन के नाटक "पिलर्स आफ सोसाइटी" का अनुवाद है। इब्सन के नाटको ने अपने समय मे बड़ी सनसनी पैदा की थी और यूरोप की आधुनिक नाट्य कला पर उन का विशेष प्रभाव पड़ा है। इस से भी बड़ी बात यह कि उन का यूरोप की विचारधारा पर ही नही बल्कि नैतिकता पर भी काफी प्रभाव पड़ा है। इब्सन की रचनाओ की मुख्य विशेषता यह है कि वे भावुकताप्रधान न हो कर बुद्धि-प्रधान है और उन मे से प्रत्येक मे किसी न किसी समस्या पर प्रकाश डाला गया है। इब्सन ने ऊपरी सदाचार का परदाफाश करने मे संकोच नहीं किया है, परन्तु इस का अर्थ यह नही है कि वे सदाचार अथवा नैतिकता के विरोधी हैं। वे ढोंग और बाह्याडम्बर के विरोधी हैं और सदा सत्य तक पहुँचने के लिए प्रयत्नशील रहते है।

इस नाटक के अनुवादक पंडित लक्ष्मी नारायण मिश्र, बी० ए०, स्वयं एक आधुनिक शैली के सफल नाटककार हैं। इब्सन के मर्म को समझ सकने की उन मे एक विशेष क्षमता है और इसलिए उन्हे हिन्दी संसार को भेट करने के लिए वे विशेष रूप से उपयुक्त हैं।

—प्रकाशक

नाटक के पात्र

कारस्ते बर्निक—एक जहाज के कारखाने का मालिक।

मिसेज बेत्ती बर्निक—उसकी स्त्री।

ओलाफ—उनका तेरह साल का लडका।

मिस मर्था वर्निक—कारस्ते वर्निक की बहिन।

जान त्वांसे—मिसेज वर्निक का छोटा भाई।

लोना हस्सेल—मिसेज वर्निक की पास के रिश्ते की बहिन।

हिल्मा त्वांसे—मिसेज वर्निक का चचेरा भाई।

दीना दोर्फ—एक नौजवान लडकी जो वर्निक परिवार के साथ रहती है

रारलुन्त—स्थानीय विद्यालय का अध्यापक।

रुम्मेल—एक व्यापारी।

विजलान्त—एक व्यवसायी।

सान्स्तात—एक अन्य व्यवसायी।

क्राप—वर्निक का विश्वासपात्र क्लार्क।

आउन—वर्निक के कारखाने का फोरमैन।

मिसेज रुम्मेल।

हिल्दा रुम्मेल—उसकी पुत्री।

मिसेज हाल्त।

नेत्ता हाल्त—उसकी पुत्री।

मिसेज लीञ्ज।

(स्थान—नारवे के सागर-तटवर्ती एक कस्बे में वर्निक का घर)

पहला—अंक

[वर्निक के मकान में बगीचे की ओर एक बड़ा कमरा । आगे की बाईं ओर वर्निक के दफ़्तर का दरवाज़ा है । उसी दीवार में आगे की तरफ़ बढ़ कर एक और उसी तरह का दरवाज़ा । दूसरी ओर की दीवार के बीचों बीच बाहर जाने के लिए एक बड़ा फाटक, जिसके उस ओर सड़क है । पीछे की दीवार बिलकुल शीशे से मढ़ी है । इसके बीच के दरवाजे से होकर बगीचे में जाने को सीढ़ियां—सीढ़ियां के ऊपर धूप रोकने का छज्जा । सीढ़ियों के नीचे की ओर बगीचे का कुछ भाग देख पड़ता है—चहारदीवारी से घिरा हुआ उसमें छोटा सा दरवाज़ा । चहारदीवारी की दूसरी ओर सड़क—सड़क के उस किनारे लकड़ी के छोटे छोटे मकान, अच्छी तरह पालिश किये हुए । गर्मी का दिन है—सूरज तेजी से चमक रहा है । जब तब आदमी देख पड़ते हैं—सड़क से चलते हुए और कभी कभी खड़े होकर बातें करते हुए और कोने पर की एक दूकान में आते जाते हुए इत्यादि.. इत्यादि ।

कमरे में कई स्त्रियाँ मेज़ के चारों ओर बैठी हैं । मिसेज वर्निक सभा-नेत्री की जगह पर हैं । उनकी बाईं ओर मिसेज हालत और उसकी लड़की नेत्ता हैं । उनके बाद मिसेज रुम्मेल और हिल्दा रुम्मेल हैं । मिसेज वर्निक के दाएँ मिसेज लीञ्ज, मर्था वर्निक और दीना दोर्फ हैं । सभी स्त्रियाँ व्यस्त हैं । मेज़ पर बहुत से कपड़े रक्खे हैं और पोशाक की ओर भी कई चीजें हैं, कुछ तो अधसिली और कुछ अभी कटी हुई । और पीछे की ओर छोटी मेज, उस पर दो फूलदान और एक ग्लास शरबत रक्खे हैं । रारलुन्त बैठा हुआ एक सुन्दर किताब पढ़ रहा है, लेकिन बस इतने ही ऊंचे स्वर

में जिसमे कि वहा बैठी हुई स्त्रिया कभी कभी कुछ सुन पाती हैं। बगीचे के भीतर श्रोलाफ वर्निक दौड रहा है—खेलने के धनुप से निशाना लगाता है।

थोडी देर के बाद धीरे से आउन का प्रवेश, दाहिनी ओर के दरवाजे से। पढने मे थोडा देर बाधा। मिसेज वर्निक उसको सिर झुकाती है और बायी ओर के दरवाजे की ओर सकेत करती है। आउन धीरे से निकल जाता है और धीरे धीरे वर्निक के दरवाजे पर धक्का देता है। थोडी देर रुक कर फिर थपथपाता है। क्राप कमरे के बाहर आता है, हाथ मे हैट और बगल में कुछ पत्र दबाये हुए।]

क्राप—अरे आप दरवाज़ा खटखटा रहे थे?

आउन—मिस्टर वर्निक ने मुझे बुलाया था।

क्राप—हां बुलाया तो था लेकिन वे इस समय मिल नहीं सकते। उन्होंने मुझे आपसे यह कहने को भेजा है .

आउन—आप को भेजा है? फिर भी मैं तो यही चाहता

क्राप—मुझे भेजा है आपसे वही कह देने के लिए जो कि वह कहते। आप मज़दूरों मे शनिवार को जो भाषण दिया करते हैं उसे बन्द कर दीजिये।

आउन—सचमुच? मैने तो समझा था कि मै अपने खाली समय का जैसा चाहूं वैसा उपयोग कर सकता हूं।

क्राप—लेकिन अपने समय का ऐसा उपयोग न कीजिए कि काम करने के घटो मे मजदूर निकम्मे बन जायँ। उस शनिवार को आप मजदूरो को बता रहे थे कि हमारी नई मशीनो से मजदूरों की क्या हानि होगी और कारखाने के नये तरीको से भी उनकी क्या हानि होगी। किस लिये आप यह सब करते है?

आउन—समाज की भलाई के लिये मै यह करता हूँ।

क्राप—बड़ी विचित्र बात है। मिस्टर वर्निक कहते हैं कि तुम्हें समाज को छिन्न-भिन्न करना है।

आउन—मेरा समाज मिस्टर वर्निक का समाज नहीं है, मि० क्राप ! मजदूर-संघ के सभापति की हैसियत से मेरा कर्तव्य

क्राप—आपका सब से पहला और मुख्य कर्तव्य मिस्टर वर्निक के जहाज के कारखाने के फोरमैन की हैसियत से है और सब से पहले आपको अपना कर्तव्य पूरा करना है उस समाज के प्रति जिसे कहते हैं 'वर्निक एण्ड कम्पनी'। यही हम लोगों में से हर एक का कर्तव्य है। खैर, अब आप समझ गये कि मिस्टर वर्निक को आप से क्या कहना था ?

आउन—मिस्टर वर्निक इस तरह न कहते, मिस्टर क्राप ! लेकिन मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि इसका कारण क्या है। ये कमबख्त अमेरिकन जहाज वाले ! वे यहा भी वैसे ही सब काम कराना चाहते हैं जैसे कि उनके यहां होता है, और यह .

क्राप—हाँ, हाँ, लेकिन मैं इन सब बातों में नहीं पड़ूंगा। अब आप जान गये कि मि० वर्निक का क्या मतलब है और यह काफी है। कृपा कर कारखाने में जाइये, शायद वहां आपकी जरूरत होगी। थोड़ी देर में मै भी आऊंगा—क्षमा करना देवियो ! [स्त्रियों की ओर सिर झुका कर बगीचे के बाहर सड़क की ओर निकल जाता है। आउन धीरे से दाहिनी ओर जाता है। रारलुन्त जो इन बातों के होते हुए भी जो धीरे धीरे हुई हैं पढ़ता रहा है, किताब समाप्त होने पर उसे ज़ोर से बन्द करता है।]

ररलुन्त—अच्छा, देवियो ! यह समाप्त हो गई।

मिसेज़ रुम्मेल—कैसी शिक्षाप्रद कहानी है !

मिसेज़ हाल्त—और उससे कैसा सुन्दर उपदेश मिलता है !

मिसेज़ बॉनिक—ऐसी पुस्तक वास्तव में कुछ विचार करने का मसाला देती है।

रारलुन्त—बिलकुल ठीक। दुर्भाग्य से हम लोगो की ऑखों से जो पत्रो और पत्रिकाओं मे गुज़रता है उसका यह बिलकुल प्रतिकूल पहलू सामने उपस्थित कर देती है। किसी भी बड़े समाज के ऊपरी चमकीले आवरण को देखिये और विचार कीजिये कि उसके नीचे क्या छिपा हुआ है। वास्तव में शून्य और सड़ा हुआ, अगर मै ऐसा कह सकूँ। कोई भी नैतिक नींव नही—उसके भीतर। वास्तव मे आज के बड़े बड़े समाज ऊपर से पुती हुई क़ब्र के समान है।

मिसेज़ हाल्त—आपने कैसी सच्ची बात कही है!

मिसेज़ रुम्मेल—और उदाहरण के लिये हमे दूर जाने की ज़रूरत नही। इन अमेरिकन नाविको को देखिये जो इस समय यहाँ ठहरे हुए है।

रारलुन्त—ओह! अच्छा हो कि मैं मनुष्यता की इस हीन श्रेणी की बाबत कुछ न कहूँ। लेकिन ऊँची श्रेणी मे भी—वहाँ क्या दशा है? सभी ओर सन्देह और बेचैनी की हवा, मस्तिष्क कभी भी शान्त नही, और उसके सारे व्यवहार मे अस्थिरता की झलक। देखिये वहाँ पारिवारिक जीवन कितना नीचे पहुँच चुका है। गम्भीर से गम्भीर सत्यो की ओर भी सन्देह की दृष्टि से देखने के लज्जाहीन आचरण को तो देखिये।

दीना—[अपना काम न छोडकर, सिर न उठाती हुई] लेकिन क्या वहाँ बहुत से बड़े कार्य भी नहीं होते?

रारलुन्त—बड़े काम? मै तो समझ नही सका।

मिसेज हाल्त—[विस्मय से] अरे दीना! क्या कहती हो?

मिसेज़ रुम्मेल—[उसी साँस मे] दीना ! तुम ऐसी बातें कैसे . ?

रारलुन्त—मै तो समझता हूँ कि शायद ही हम लोगो के लिये यह अच्छी बात होगी अगर ऐसे "बड़े काम" यहाँ भी होने लगे। नहीं, वास्तव मे तो हम लोगों को बहुत अनुग्रहीत होना चाहिये कि इस देश मे जैसी बाते है वैसी ही हैं। यह सच है कि यहाँ हमारे विचार मे भी काई जम जाती है, क्या कहूँ, लेकिन हम लोग भरसक जहाँ तक हम लोगो से बन पड़ता है उसे अलग करने की कोशिश करते हैं। आवश्यक बात तो है समाज को पवित्र रखना, देवियो—उन सभी बुरे प्रयोगो को दूर रखना जिन्हे कि यह अशान्त युग हम लोगों पर डाल देने का प्रयत्न कर रहा है।

मिसेज़ हाल्त—दुःख की बात तो यह है कि हवा मे ही ऐसा बहुत कुछ आ गया है।

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, आपको मालूम है पारसाल हम लोग अपने नजदीक रेलवे चल जाने से बाल बाल बचे थे।

मिसेज़ बर्निक—ओह ! मेरे पति ने इसे रोक दिया।

रारलुन्त—ईश्वर की दया, मिसेज बर्निक। आपको विश्वास करना चाहिये कि आपके पति इस आयोजन को अस्वीकार करते समय किसी महान शक्ति के उपकरण थे।

मिसेज़ बर्निक—और इस पर भी पत्रों मे उनके विरुद्ध ऐसी भयानक बाते कही गई ! लेकिन हम लोग आपको धन्यवाद देना बिल्कुल भूल गई मिस्टर रारलुन्त ! वास्तव मे हम लोगो के लिये अपने इतने समय का व्यय करना आपके लिये मित्रता से बढ़कर बात है।

रारलुन्त—बिल्कुल नहीं, आज तो छुट्टी है और .

मिसेज़ वर्निक—हाँ, लेकिन तब भी यह त्याग है मिस्टर रारलुन्त ।

रारलुन्त—[अपनी कुर्सी नजदीक खींचते हुए] इसकी बात न कहिये श्रीमती जी । क्या आप सभी किसी बड़े उद्देश्य के लिये त्याग नहीं कर रही हैं ? और कितनी इच्छा से ! कितनी प्रसन्नता से ! यह अभागे पतित प्राणी, जिनकी मुक्ति के लिये हम लोग इतना प्रयत्न कर रहे हैं, इनकी तुलना युद्ध क्षेत्र मे आहत सैनिको से की जा सकती है । आप महिलाये दया की स्नेहमयी बहिने है, जो इन चोट खाये हुओ के लिये मरहम तैयार करती है, इनके घावो पर धीरे से पट्टी रखती हैं, उन्हे भर देती हैं, उन्हे चंगा कर देती हैं .

मिसेज़ वर्निक—यह वास्तव में विस्मयजनक विभूति है—सब चीजो को इस सुन्दर रूप में देखना ।

रारलुन्त—बहुत कुछ तो यह मनुष्य के स्वभाव मे रहता है, लेकिन बहुत कुछ प्राप्त भी किया जा सकता है । ज़रूरत इस बात की है कि सभी बातों को जीवन के चरम-लक्ष्य के प्रकाश मे देखा जाय । [मर्था से] आप क्या कहती हैं, मिस वर्निक ? आपको अनुभव नहीं हुआ है कि जब से आपने अपने को स्कूल के कामो मे लगा दिया है आप किसी दृढ भूमि पर खड़ी हो गई हैं ?

मर्था—वास्तव मे क्या कहना चाहिये मैं समझ नहीं पाती । ऐसा समय भी आता है जब स्कूल के कमरे मे रहते हुए मुझे ऐसी इच्छा होती है मैं कि बहुत दूर अशान्त समुद्र पर होती ।

रारलुन्त—यह केवल प्रलोभन मात्र है, प्रिय, मिस

बर्निक ! ऐसे अशान्त कर देने वाले अतिथियो के लिये आपको अपने मस्तिष्क का द्वार बन्द कर देना चाहिये । "अशान्त समुद्र" से, मैं समझता हूँ, आप का मतलब है बाहरी दुनिया की अशान्त लहरो से, जहाँ बहुतो का जीवन नष्ट हो जाता है । बाहर जीवन का जो प्रवाह तेजी से बह रहा है, क्या उसे आप इतना महत्व देती हैं ? केवल वहाँ सड़क पर देखिये । वे जा रहे है, धूप मे चलते हुए, पसीने से तर-बतर, अपनी छोटी मोटी समस्याओ से परेशान । नहीं, निस्सन्देह इसमें बहुत कुछ हमें मिला है जो यहाँ इस ठंडक मे बैठ सकते हैं और उस ओर अपनी पीठ फेर सकते है जहाँ से अशान्ति की लहर चलती है ।

मर्था—हाँ, मुझे कोई सन्देह नही कि आप बिल्कुल सच कह रहे हैं ।

रारलुन्त—और किसी ऐसे घर मे—ऐसे सुन्दर पवित्र घर में, जहाँ पारिवारिक जीवन अपना सब से सुन्दर रूप दिखलाता है, जहाँ शान्ति और सामञ्जस्य का राज्य है । [मिसेज बर्निक से] आप क्या सुन रही हैं मिसेज बर्निक ?

मिसेज बर्निक—[जो बर्निक के कमरे के दरवाजे की ओर देख रही हैं] वे सब वहाँ बड़े जोर से बाते कर रहे है ।

रारलुन्त—कोई विशेष बात हो रही है ?

मिसेज बर्निक—पता नहीं । इतना सुनाई पड़ता है कि मेरे पति के साथ कोई और है ।

[हिल्मा त्वासे, सिगार पीते हुए, दाईं ओर के दरवाजे पर दीख पडता है, लेकिन एकदम खडा हो जाता है, स्त्रियों को देख कर]

हिल्मा—अरे, क्षमा कीजिये—[लौट जाने के लिये घूमता है]

मिसेज़ बर्निक—नहीं, हिल्मा ! आ जाओ। हम लोगो को बाधा नही होगी। क्या कुछ चाहते हो ?

हिल्मा—नहीं, मै केवल यहाँ आना चाहता था। नमस्कार देवियो। [मिसेज बर्निक से] क्यो, क्या फल रहा ?

मिसेज़ बर्निक—किस बात का ?

हिल्मा—कारस्तें ने एक सभा करने की नोटिस दी है। तुम्हे पता है ?

मिसेज़ बर्निक—उन्होने ? किस लिये ?

हिल्मा—अरे, वही रेलवे की बेहूदगी फिर .

मिसेज़ बर्निक—बेचारे कारस्तें, इस विषय मे और फजीहत चाहते है क्या ?

रारलुन्त—लेकिन आप इसे कैसा समझते है मिस्टर त्वांसे ? आप जानते हैं कि पारसाल मिस्टर बर्निक ने बिल्कुल स्पष्ट कह दिया था कि वे यहाँ रेलवे नही चाहते।

हिल्मा—हाँ, यही मैं भी सोचता था। लेकिन मै उनके विश्वस्त क्लार्क क्राप से मिला, और उसने कहा कि रेलवे का आयोजन फिर प्रारम्भ हो गया है और मिस्टर बर्निक यहाँ के तीन पूंजीपतियो से राय ले रहे है।

मिसेज़ रुम्मेल—ओ ! मैं ठीक सोच रही थी कि मैंने अपने पति की बोली सुनी है।

हिल्मा—ठीक, मिस्टर रुम्मेल भी इसमे है और इसी तरह हैं, सान्स्तात् और माइकेल विजलान्त—जिन्हें लोग "सन्त माइकेल" कहते है।

रारलुन्त—उफ

हिल्मा—क्षमा कीजिये मिस्टर रारलुन्त !

मिसेज़ वर्निक—उस समय जब कि सब कुछ सुन्दर और शान्त था

हिल्मा—ख़ैर, जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मुझे कोई भी विरोध नही, उनके इस झंझट के मोल लेने मे। कुछ भी हो, इसमें कुछ मनोरंजन तो होगा।

रारलुन्त—मैं समझता हूँ ऐसे मनोरंजन के विना भी हम लोगो का काम चल सकता है।

हिल्मा—यह तो अपनी तवियत पर निर्भर है। कुछ लोगो का स्वभाव ऐसा होता है कि वे कभी कभी युद्ध की भी इच्छा करते है। लेकिन दुर्भाग्य से देहात की जिन्दगी मे वैसी वात वहुत नही मिलती, और सव के पास ऐसी शक्ति नही कि—[जिस पुस्तक को रारलुन्त पढ रहा था उसके पन्ने इधर उधर उलटता है] "समाज की सेविका स्त्री।" ऐ! यह क्या ऊटपटांग है ?

मिसेज वर्निक—हिल्मा, ऐसी वात न करो। यह निश्चय है कि तुमने यह किताब नहीं पढ़ी।

हिल्मा—नही, और इसे पढ़ने की इच्छा भी मैं नही करता।

मिसेज़ वर्निक—शायद आज तुम्हारी तवियत अच्छी नही है।

हिल्मा—नहीं, अच्छी नही . .

मिसेज़ वर्निक—शायद कल रात नींद नही आई।

हिल्मा—नहीं, सोता तो रहा लेकिन वड़ी बुरी तरह। कल शाम को स्वास्थ्य के लिये मै घूमने चला गया था। क्लब पहुँच कर घूमना समाप्त कर दिया। इसके वाद ध्रुव-यात्रा की एक किताब पढ़ता रहा। प्रकृति के साथ जो युद्ध कर रहे है, उन मनुष्यो के साहसपूर्ण कार्यों मे, कोई ऐसी वात है जो बल प्रदान करती है।

मिसेज़ रुम्मेल—लेकिन उसने आप की कोई बड़ी भलाई नहीं की है मिस्टर ल्वांसे !

हिल्मा—नहीं, वास्तव मे उसने नही की । मैं सारी रात अध-नींद मे इधर उधर उलटता पलटता रहा और सपना देखा कि मुझे एक भयंकर जन्तु खदेड़ रहा है ।

ओलाफ—[जो कि इस बीच मे बगीचे से ऊपर सीढियों पर आ गया है] मामा ! आपको भयंकर जन्तु खदेड़ रहा था ?

हिल्मा— मैंने सपना देखा, तुम बहरे ! तुम अब भी उसी नकली धनुष से खेल रहे हो । एक असली बन्दूक क्यो नही ले लेते ?

ओलाफ—चाहता तो हूँ लेकिन

हिल्मा—ऐसी चीज मे कुछ समझ की बात भी है । हर बार जब फायर करते हो, कुछ जोश आता है ।

ओलाफ—और तब मै भालू मार सकूंगा मामा ! लेकिन दादा दिलावेंगे नहीं ।

मिसेज़ बर्निक—उसके दिमाग मे ऐसी बात न भरो, हिल्मा !

हिल्मा—हूँ, वाह ! आज कल हम लोग कैसी अच्छी नस्ल तैयार कर रहे हैं ! है न यही बात ? पुरुषत्व और साहस के बारे मे हम लोग बातें तो बड़ी लम्बी चौड़ी हाँकते हैं, लेकिन सच तो यह है कि इस समस्या के साथ हम लोग केवल खेल करते हैं; वास्तव मे कोई दृढ़ विचार नही होता, उस कठोर नियमन के लिये जो पुरुषत्व के साथ खतरे के सामने खड़े होने का साहस पैदा करता है । मेरी तरफ निशाना लगा कर न खड़े हो, उद्धत! कहीं छूट न जाय ।

ओलाफ—नही मामा, इसमे तीर नही है ।

हिल्मा—तुम नहीं जानते कि उसमे कुछ नही है—शायद कुछ हो, कुछ हो भी सकता है। हटा लो, कह रहा हूँ। तुम अमेरिका क्यो नही गये, अपने पिता के किसी जहाज पर ? तब तुम भैसे का शिकार देखे होते या रेड-इण्डियनो के साथ कोई युद्ध।

मिसेज बर्निक—अरे रे ! हिल्मा

ओलाफ—मैं तो यह बहुत पसन्द करता मामा। और तब शायद मै मामा जान और मौसी लोना को भी देख पाता।

हिल्मा—हूँ, पगले !

मिसेज बर्निक—बगीचे मे फिर जाओ ओलाफ।

ओलाफ—मैं सड़क पर भी बाहर जा सकता हूँ माँ ?

मिसेज बर्निक—हाँ, लेकिन बहुत दूर नहीं, ख्याल रहे।

[ओलाफ बगीचे में दौड जाता है और दरवाजे के बाहर चहारदीवारी के उस पार निकल जाता है।]

रारलुन्त—ऐसी कल्पना की बातें लड़के के दिमाग़ मे नहीं भरनी चाहिएं मिस्टर त्वांसे !

हिल्मा—नहीं, निश्चय ही बहुतेरे अभागो की तरह उसे भी घर का बँधुआ होना है।

रारलुन्त—लेकिन ऐसी यात्रा आप ही क्यो नही कर लेते ?

हिल्मा—मैं ? अपने इस बिगड़े हुए स्वास्थ्य से ? यह सच है कि मैं इस बात का अधिक विचार नही करता। उसे अलग रख कर भी, आप भूल रहे है कि हर एक व्यक्ति के उस समाज के प्रति कुछ कर्तव्य होते है, जिस समाज का वह एक अंग होता

है। आदर्श का झंडा ऊँचा रखने के लिये भी तो किसी को यहाँ होना चाहिये। ओह! फिर शोर कर रहा है।

स्त्रियाँ—कौन शोर कर रहा है?

हिल्मा—मैं ठीक नहीं जानता। वे इतना शोर कर रहे है कि उसका बड़ा बुरा असर मेरे नाड़ी-जाल पर पड़ रहा है।

मिसेज़ रुम्मेल—शायद मेरे पति हैं मिस्टर त्वांसे! लेकिन आप को याद रखना चाहिये कि उनकी बड़ी-बड़ी सभाओं में ऐसे ही बोलने की आदत है।

रारलुन्त—मैं दूसरो को भी धीमी बोली वाला नहीं कह सकता।

हिल्मा—हे ईश्वर, नहीं, किसी भी ऐसी बात पर नही जो उनकी थैली छूती हो। सभी बातें यहाँ समाप्त होती हैं—इन्ही रुपये पैसे के नीचे विचार मे। ओफ!

मिसेज़ बर्निक—किसी भी हालत मे यह उससे तो अच्छा है जब कि सभी बातें समाप्त होती थीं छिछोड़पन में।

मिसेज़ लीञ्ज—क्या यहाँ भी ऐसी बुरी बाते होती थी?

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, होती थीं, वास्तव मे मिसेज लीञ्ज! आप अपने को भाग्यवान समझ सकती हैं कि तब आप यहाँ नहीं थीं।

मिसेज़ हाल्त—हाँ समय तो बदल गया है, निस्सन्देह। जब मैं उस समय की याद करती हूँ जब मैं लड़की थी

मिसेज़ रुम्मेल—ओह! पन्द्रह या चौदह वर्ष पीछे जाने को जरूरत नही। ईश्वर क्षमा करे कैसी जिन्दगी हम लोगो ने बिताई! नृत्य-मण्डल हुआ करता था और संगीत-मण्डल

मिसेज़ वर्निक—और नाट्य-समाज भी मुझे खूब याद है।

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, वही आपका नाटक खेला गया था मिस्टर त्वांसे।

हिल्मा—[कमरे के पीछे से] क्या, क्या ?

रारलुन्त—मिस्टर त्वांसे का एक नाटक ?

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, आपके आने के वहुत पहले मिस्टर रारलुन्त। और वह केवल एक ही वार खेला गया।

मिसेज़ लीञ्ज—वह वही नाटक तो नहीं था, जिसके वारे में आपने कहा था मिसेज रुम्मेल, कि उसमें आपने किसी युवक की प्रेमिका का स्थान लिया था।

मिसेज़ रुम्मेल—[रारलुन्त की ओर देखती हुई] मैंने ? मुझे विलकुल याद नहीं है मिसेज लीञ्ज। लेकिन हाँ यह याद है कि वड़ा आनन्द और आमोद-प्रमोद रहता था।

मिसेज़ हाल्त—हाँ, मुझे भी याद है। ऐसे भी घर थे जहाँ एक ही सप्ताह मे दो दो वार वड़ी वड़ी दावतें हो जाती थीं।

मिसेज़ लीञ्ज—हाँ ठीक है और मैंने सुना है कि एक घूमने वाली नाटक-मण्डली यहाँ भी आई थी !

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, सव से बुरी वात तो यही हुई।

मिसेज़ हाल्त—[वेचैन हो कर] उहँ !

मिसेज़ रुम्मेल—आपने नाटक-मण्डली कहा ? मुझे तो कुछ ऐसा नहीं याद है।

मिसेज़ लीञ्ज—जी हाँ, और मैंने यह भी सुना है कि वे सव तरह की गन्दी चीजें दिखलाते थे। इन कहानियो में सचाई कितनी है ?

मिसेज़ रुम्मेल—उनमे कुछ भी सत्यता नही है मिसेज़ लीञ्ज !

मिसेज़ हाल्त—दीना, प्यारी, वह कपड़ा मुझे देना।

मिसेज़ बर्निक—[उसी समय] प्यारी दीना, ज़रा जाकर कैटराइन से कहवा लाने के लिये कह दो !

मर्था—मै तुम्हारे साथ चलूँगी दीना !

[मर्था और दीना उधर वाले बायें दरवाजे से निकल जाती हैं]

मिसेज बर्निक—[उठती हुई] थोड़ी देर के लिये क्षमा चाहती हूँ। मै सोचती हूँ बाहर कहवा पिया जाय। [बरामदे मे बाहर जाकर एक मेज ठीक करने का प्रयत्न करने लगती है। रारलुन्त दरवाजे पर खडा होकर उससे बातें करने लगता है। हिल्मा बाहर, बैठकर सिगरेट पीने लगता है।]

मिसेज़ रुम्मेल—[धीरे से] हे ईश्वर ! मिसेज़ लीञ्ज, तुमने मुझे कैसा डरा दिया !

मिसेज़ लीञ्ज—मैंने ?

मिसेज़ हाल्त—हाँ, लेकिन याद है तुम्ही ने यह बात चलाई थी, मिसेज़ रुम्मेल।

मिसेज़ रुम्मेल—मैंने ? ऐसी बात कैसे कह रही हो मिसेज़ हाल्त ? मेरे मुँह से एक शब्द भी नही निकला।

मिसेज लीञ्ज—लेकिन इसका मतलब क्या है ?

मिसेज रुम्मेल—किस बात पर यह सब कहने लगी ? सोचो। यह नही देखा कि दीना कमरे मे थी ?

मिसेज़ लीञ्ज—दीना ? कोई बुरी बात है इसमे ?

मिसेज हाल्त—और इसी घर मे भी ! तुम्हे यह मालूम नहीं था कि वे मिसेज बर्निक के भाई थे ?

मिसेज़ लीश्ज—उनके वारे मे क्या है ? मुझे तो इसकी कोई खबर नही। तुम जानती हो मैं इस जगह से बिल्कुल अपरिचित हूँ

मिसेज़ रुम्मेल—यह भी नही सुना ? उहूँ ! [अपनी लडकी से] हिल्दा ! प्यारी, थोड़ी देर वगीचे मे घूम आओ।

मिसेज़ हाल्त—तुम भी जाओ नेत्ता। और जब वेचारी दीना लौटे उस पर दया रखना। [हिल्दा और नेत्ता वगीचे में चली जाती हैं।]

मिसेज़ लीश्ज—अव कहो क्या वात है मिसेज़ वर्निक के भाई के वारे मे ?

मिसेज़ रुम्मेल—उसकी भयंकर वदनामी तुम नही जानती ?

मिसेज़ लीश्ज—भयंकर वदनामी ? मिस्टर त्वांसे की ?

मिसेज़ रुम्मेल—हे ईश्वर ! नही। मिस्टर त्वांसे उनके चचेरे भाई हैं मिसेज़ लीश्ज। मै उनके खास भाई की वात कह रही हूं।

मिसेज़ हाल्त—उस वदमाश त्वांसे की

मिसेज़ रुम्मेल—उसका नाम जान था। वह अमेरिका भाग गया।

मिसेज हाल्त—आपको जानना चाहिये उसको भागना पड़ा।

मिसेज लीश्ज—तो फिर यह वदनामी उसके वार मे है ?

मिसेज रुम्मेल—हॉ, ऐसी ही वात थी—कैसे कहूँ उसे ? कोई ऐसी वात उसके और दीना की मा के वीच मे हुई थी। मुझे तो सव याद है जैसे कल की वात हो। जान त्वांसे तव वुढ़िया मिसेज वर्निक के आफिस मे था, कारस्ते वर्निक अभी अभी पेरिस से आया था। अभी उसकी शादी भी नहीं हुई थी।

मिसेज़ लीश्ज—अच्छा, लेकिन वदनामी क्या थी ?

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ तो तुम्हे पता होना चाहिये कि उस समय ग्वालेर कम्पनी इस कस्बे मे अभिनय कर रही थी। जाड़े के दिन थे

मिसेज़ हाल्त—और दोर्फ अभिनेता और उसकी स्त्री उस मण्डली मे थे। कस्बे के सभी युवक उसके मोह मे पड़ गये थे।

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, पता नही वे उसे सुन्दरी कैसे समझते थे। अच्छा तो दोर्फ एक रात देर कर के घर लौटा ..

मिसेज़ हाल्त—और बिल्कुल अचानक

मिसेज़ रुम्मेल- और उसने देखा . नही, वास्तव मे यह बात कोई कहना नही चाहेगा।

मिसेज़ हाल्त—अरे, उसे कुछ भी तो नही देख पड़ा क्योकि दरवाजा भीतर से वन्द था ।

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, यही बात मै कहने जा रही थी। उसे दरवाज़ा वन्द मिला। और फिर सोचो इस बात को—जो पुरुष घर के भीतर था उसे खिड़की से कूदना पड़ा।

मिसेज़ हाल्त—बड़ी ऊँची खिड़की से।

मिसेज़ लीञ्ज—और वह मिसेज़ वर्निक का भाई था ?

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, वही था।

मिसेज़ लीञ्ज—और इसी लिए वह अमेरिका भाग गया ?

मिसेज़ हाल्त—हाँ, आप विश्वास कीजिए कि उसे भागना पड़ा।

मिसेज़ रुम्मेल—क्योकि पीछे ऐसी एक और बात मालूम हुई जोकि उतनी ही बुरी थी। ज़रा सोचो तो—वह कैश वाक्स मे से मनमाना रुपया निकालता रहा था।

मिसेज़ हाल्त—लेकिन आप जानती है, किसी को इसका निश्चय नही था, मिसेज़ रुम्मेल ! शायद इस अफवाह मे कोई सचाई न भी रही हो।

मिसेज रुम्मेल—अजी, मुझे कहना पड़ा ! क्या यह बात सारे कस्बे को मालूम नहीं थी ? इसके फल स्वरूप मिसेज बर्निक दीवालिया नही हो गई ? परन्तु ईश्वर क्षमा करे, मैं तो ऐसी बातो के फैलाने मे सहयोग नही दे सकती।

मिसेज हाल्त—खैर, जो भी हो, मिसेज दोर्फ को, वह रुपया नही मिला, क्योकि वह .

मिसेज लीञ्ज—हां, तो फिर दीना के मा बाप का क्या हुआ ?

मिसेज रुम्मेल—हां, दोर्फ अपनी स्त्री और लड़की दोनो को असहाय छोड़ कर चल दिया। लेकिन श्रीमती जी यहाँ साल भर तक ठहरी रही। जरा यह धृष्टता तो देखिए। इसमे तो शक नही कि रंग-मंच पर फिर कभी आने का साहस उन्होने नही किया, लेकिन वे कपड़े धोने और सीने का काम करती रही।

मिसेज हाल्त—और फिर उन्होने एक नृत्यशाला का आयोजन किया।

मिसेज़ रुम्मेल—स्वभावतः यह आयोजना सफल नही हुई। कौन मा बाप ऐसी स्त्री पर विश्वास करके अपनी सन्तान को उसके यहां नृत्य-कला का अभ्यास करने के लिए भेजता ? लेकिन यह शाला बहुत दिन तक नही रही। श्रीमती को काम करने का अभ्यास तो था नही, उनके फेफड़े मे कोई गड़बड़ी होगई और उसी से उनकी मृत्यु हो गई।

मिसेज लीञ्ज—कैसी भयंकर लज्जा का विषय है !

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ अब समझ सकती हो बर्निक परिवार के लिये यह कितना कष्टकर था ? उनके भाग्य सूर्य मे यह काला धब्बा है—जैसा कि रुम्मेल ने एक बार कहा था। अब इस घर मे यह चर्चा कभी न कीजियेगा मिसेज़ लीश्ज !

मिसेज़ हाल्त—और ईश्वर के लिये उनकी बहिन का भी कभी ज़िक्र न चलाइएगा।

मिसेज लीश्ज—तो मिसेज़ बर्निक की कोई बहिन भी है ?

मि० रुम्मेल—थी, भाग्य से उनका सम्बन्ध अब हमेशा के लिये मिट गया। वह भी विलक्षण व्यक्ति थी। क्या आपको विश्वास होगा कि उसने अपना बाल कटाकर छोटा कर लिया था ? और खराब मौसम मे वह पुरुषो जैसे जूते पहन कर बाहर निकलती थी !

मिसेज़ हाल्त—और जब उसका वह भाई, वह बदमाश, निकल गया और जब स्वभावत. सारे कस्बे मे उसकी चर्चा हो रही थी—तब जानती हो उसने क्या किया ? वह भी उसके पास अमेरिका चली गई।

मिसेज़ रुम्मेल—हाँ, लेकिन वह बदनामी तो याद करो जो उसने अमेरिका जाने के पहले उठाई थी, मिसेज़ हाल्त !

मिसेज़ हाल्त—चुप, चुप, उसके बारे मे कुछ न कहो।

मिसेज़ लीश्ज—उसने भी बदनामी कमाई ?

मिसेज़ रुम्मेल—मै समझती हूँ, आप को यह भी सुन लेना चाहिये मिसेज़ लीश्ज ! मिस्टर बर्निक की अभी अभी बेत्ती त्वांसे से शादी तै हुई थी और वे दोनो हाथ मे हाथ डाले उसकी चाची के कमरे मे यह सन्देश देने गये....

मिसेज हाल्त—मालूम है बेत्ती त्वांसे के माँ बाप मर चुके थे ?

मिसेज रुम्मेले—बस अकस्मात लोना हेस्सल ने अपनी कुर्सी से उठकर बेचारे शरीफ कारस्तेन वर्निक की कनपटी पर ऐसा घूँसा दिया कि उसका सिर चक्कर खा गया।

मिसेज लोश्ज—मुझे विश्वास है कि ऐसी बात तो मैंने कभी नहीं सुनी।

मिसेज हाल्त—यह बिल्कुल सच है।

मिसेज रुम्मेल—और तब उसने अपना सामान बांधकर अमेरिका की राह ली।

मिसेज लोश्ज—मैं समझती हूँ कि उसकी नजर बर्निक पर लगी थी, अपने ही लिए।

मिसेज रुम्मेल—वास्तव में उसकी नजर थी। उसने कल्पना कर रक्खी थी कि जब वह पेरिस से लौट आवेगा तो उसके साथ उसकी जोड़ी अच्छी रहेगी।

मिसेज हाल्त—उसका ऐसा सोचना ! यह विचार ! कारस्तेन वर्निक ऐसा समझदार पुरुष और विनम्रता की मूर्ति पूरा सज्जन—सभी स्त्रियों का प्यारा .

मिसेज रुम्मेल—और इसके साथ ही साथ ऐसा अच्छा युवक, मिसेज हाल्त !—इतना सदाचारी।

मिसेज लोश्ज—लेकिन उस मिस हेस्सल ने अमेरिका में जाकर क्या किया ?

मिसेज रुम्मेल—सुनो। यह समझो कि इसके ऊपर (जैसा कि मेरे पति ने एक बार कहा था) एक पर्दा पड़ा है, जिसे उठाने के समय किसी को भी आगा पीछा करना पड़ेगा।

मिसेज लोश्ज—तुम्हारा मतलब ?

मिसेज़ रुम्मेल—इस परिवार से अब उसका कोई सम्बन्ध नही है, जैसा कि आप अनुमान कर सकती हैं, लेकिन इतना तो सारा कस्बा जानता है कि उसने वहाँ रुपये के लिये शराबखानो मे गाना गाया है

मिसेज हाल्त—और खुले आम व्याख्यान दिये हैं

मिसेज रुम्मेल—और कोई पागलपन की किताब भी छपवायी है।

मिसेज़ लीञ्ज—क्या सचमुच ?

मिसेज रुम्मेल—हाँ, यह सच है कि लोना हेस्सल बर्निक परिवार के सौभाग्य सूर्य पर धब्बा है। अब तो आपको सभी कहानी मालूम हो गई मिसेज़ लीञ्ज ! मुझे विश्वास है कि अगर आप को सावधान करने की जरूरत न होती तो मै कभी भी यह कुछ न कहे होती।

मिसेज़ लीञ्ज—आः ! आप निश्चिन्त रहिये मै बहुत साव- धान रहूँगी। लेकिन यह बेचारी लड़की दीना दोर्फ ! मुझे उसके लिये सचमुच दुःख है ।

मिसेज रुम्मेल—अजी वास्तव मे उसके लिए यह सौभाग्य की बात थी। सोचो तो अगर उसका पालन पोषण ऐसे मा बाप द्वारा हुआ होता तो उसके लिये यह अच्छा होता ? हां, हम लोगो ने भरसक उसके लिए कुछ उठा नही रक्खा, और हम लोगो मे से हर एक ने और जहां तक हो सका उसे अच्छी सलाह दी। और अन्त मे मिस बर्निक ने उसे इस घर मे बुला लिया।

मिसेज हाल्त—लेकिन वह हमेशा ऐसी लड़की रही है जिसे वश मे रखना बड़ा कठिन रहा है। यह स्वाभाविक ही है, उसके आगे जो बुरे उदाहरण थे। ऐसी लड़की हम लोगो की लड़कियो की तरह नही हो सकती, उसपर तो दया रखनी पड़ेगी।

मिसेज़ रुम्मेल—चुप, चुप, वह आ रही है। [ऊची आवाज मे] हॉ, दीना वास्तव में चतुर लड़की है। अरे! तुम हो दीना? हम लोग अब इन वस्तुओ को हटा रही है।

मिसेज़ हाल्त—प्यारी दीना! तुम्हारा कहवा कैसा बढिया महक रहा है। ऐसे बढ़िया कहवे का एक प्याला

मिसेज़ बर्निक—[बरामदे से पुकारती हुई] आप लोग यहॉ बाहर आयेंगी? [इस बीच में मर्था और दीना ने नौकरानी की सहायता से कहवा का प्रबन्ध कर दिया है। सभी स्त्रियॉ बरामदे मे बैठती है और दीना की ओर बडी कृपा दिखलाती हुई बातें कर रही है। थोडी देर में दीना कमरे मे आती है और अपनी सिलाई देखती है।]

मिसेज़ बर्निक—[कहवे की मेज से] दीना! तुम नहीं ?

दीना—नहीं, धन्यवाद! [सिलाई करने बैठ जाती है। मिसेज बर्निक और रारलुन्त थोडी सी बातें करते है, थोडी देर बाद वह कमरे के भीतर आता है, किसी बहाने से मेज तक जाता है और धीरे धीरे दीना से बाते करने लगता है।]

रारलुन्त—दीना!

दीना—कहिये।

रारलुन्त—तुम औरो के साथ बैठना क्यो नहीं चाहती?

दीना—जब मैं कहवा लेकर आई तो मुझे उस नवागन्तुक स्त्री के चेहरे से मालूम हो गया कि वे सब मेरे बारे मे बाते कर रही थी।

रारलुन्त—लेकिन तुमने यह भी नहीं देखा कि वह बाहर तुम्हारी ओर कितनी उदार थी।

दीना—यही बात तो मै नहीं सह सकती।

रारलुन्त—दीना ! तुम वहुत ही हठी हो !

दीना—हॉ।

रारलुन्त—लेकिन क्यो ?

दीना—क्योंकि मेरा स्वभाव ही ऐसा है।

रारलुन्त—तुम अपना स्वभाव वदलने का प्रयत्न न कर सकोगी ?

दीना—नही।

रारलुन्त—क्यो नही ?

दीना—[उसकी ओर देखती हुई] क्योंकि, मै 'अभागे पतित प्राणियो' में से एक हूॅ। समझे ?

रारलुन्त—शर्म आनी चाहिये दीना !

दीना—और ऐसी ही मेरी मा थी।

रारलुन्त —किसने तुम्हे यह सब वतलाया ?

दीना—किसी ने नही। ऐसा वे कभी नहीं करती। क्यो नहीं करती ? वे मेरे साथ ऐसा दिखावे का व्यवहार करती हैं—मानो वे सोचती हैं कि मैं टुकड़े टुकड़े होकर गिर पड़ूॅगी ..अगर वे .. ओह ! मै इस उदारता को कितनी घृणा करती हूॅ !

रारलुन्त—प्रिय दीना ! मै खूब समझता हूॅ कि तुम यहॉ दवी हुई सी अनुभव करती हो लेकिन

दीना—हॉ अगर मैं यहॉ से निकल कर दूर चली जाऊं, मैं अपना रास्ता स्वयं अच्छी तरह निकाल लूॅगी, अगर मैं ऐसे जीवो के वीच मे न रहूॅ जो कि...

रारलुन्त—कैसे हैं ?

दीना—इतने शिष्ट और इतने सदाचारी।

राख्लुन्त—लेकिन दीना तुम्हारा मतलव यह तो नहीं है।

दीना—आप अच्छी तरह से जानते है कि मैं किस मतलव से कह रही हूँ। हिल्दा और नेत्ता यहाँ रोज आती है, मेरे लिये सुन्दर उदाहरण वन कर मुझे दिखलाई जाने के लिये। मैं इतनी सुशील कभी नहीं वन सकती जैसी कि वे हैं। मै वह वनना भी नही चाहती। अगर मै केवल यहाँ से निकल सकूं, तो मै वढ़ कर किसी योग्य हो सकूंगी।

राख्लुन्त—लेकिन तुम्हारा मूल्य वहुत है, प्यारी दीना।

दीना—उससे मुझे यहाँ क्या लाभ है?

राख्लुन्त—यहाँ से निकल जाना, तुम कहती हो? तुम यह गंभीरता के साथ कह रही हो?

दीना—मैं यहाँ एक दिन भी न ठहरती, अगर आपके कारण न होता।

राख्लुन्त—वताओ दीना! तुम क्यो मेरे साथ रहना पसन्द करती हो?

दीना—क्योकि आप मुझे इतनी सुन्दर शिक्षा देते है।

राख्लुन्त—सुन्दर? जो कुछ ज़रा सा मैं तुम्हे वता देता हूँ उसे तुम सुन्दर समझती हो?

दीना—जी हाँ। और शायद, सच तो यह है कि आप मुझे कुछ सिखलाते नहीं, लेकिन जव मैं आप की बातें सुनती हूँ, मैं सुन्दर स्वप्न देखने लगती हूँ।

राख्लुन्त—जव तुम किसी चीज़ को सुन्दर कहती हो तो तुम्हारा असल मतलव क्या होता है?

दीना—मैंने कभी इस पर विचार नहीं किया।

रारलुन्त—तब अब विचार कर लो। सुन्दर चीज़ तुम किसे समझती हो ?

दीना—सुन्दर चीज़ वह है जो महान है और बहुत दूर. .

रारलुन्त—हूँ, दोना ! तुमसे मेरा इतना गहरा सम्बन्ध है, प्यारी !

दीना—बस इतना ही ?

रारलुन्त—तुम खूब जानती हो कि जितना मै स्वयं कह सकता हूॅ उससे कही अधिक तुम मुझे प्रिय हो।

दीना—अगर मै हिल्मा या नेत्ता होती तो आप इस बात को अन्य लोगो पर प्रकट होने देने मे डरते नहीं।

रारलुन्त—ओफ़, दोना, बाध्य होकर मुझे कितनी बातों का ख़्याल करना पड़ता है, इसकी तनिक भी जानकारी तुम्हे नहीं है। जब किसी पुरुष को भाग्य से समाज के सदाचार का स्तम्भ बन कर रहना पड़ता है, तो उसे हर बात मे अत्यन्त सतर्क रहना जरूरी हो जाता है। अगर मुझे इतना भी विश्वास होता कि लोग मेरे उद्देश्य को ठीक ठोक समझ सकेंगे . लेकिन इसकी कोई चिन्ता नही—तुम्हारे उत्थान मे अवश्य सहायता करनी होगी। दीना यह हम लोगो की शर्त है कि जब मै आऊं, जब परिस्थितियॉ मुझे इस बात का अवसर दे कि मैं आऊं और कहूॅ "मै तुम्हारा पाणि-ग्रहण करना चाहता हूँ" तब तुम मेरा हाथ पकड़ लोगी और मेरा पत्नीत्व स्वीकार करोगी। इसका वचन देती हो, दीना ?

दीना—हॉ।

रारलुन्त—धन्यवाद, धन्यवाद, क्योकि अपने हृदय मे ओह, दीना ! मै तुम्हे बहुत प्रेम करता हूॅ। चुप—कोई आ रहा

है। दीना! मेरी खातिर उन सबके पास बाहर चली जाओ।
[वह कहवा की मेज पर बाहर चली जाती है। उसी समय रुम्मेल, सान्स्तात और विजलान्त वर्निक के कमरे से निकलते हैं—उनके पीछे कागजात का एक पुलिन्दा लिये हुए वर्निक है।]

वर्निक—हाँ, तो यह बात निश्चित होगई?

विजलान्त—मै भी यही आशा करता हूं कि तै हो गई।

रुम्मेल—यह निश्चित होगया वर्निक! आप जानते हैं नारवे के निवासी की बात इतनी दृढ़ होती है जितनी कि पहाड़ को चट्टान।

वर्निक—कोई भी कमजोरी न दिखावे, कोई भी इस बात से न हटे, चाहे हम लोगों का कितना भी विरोध हो।

रुम्मेल—या तो हम लोग निर्द्वन्द खड़े ही रहेगे या गिरेंगे तो साथ ही।

हिल्मा—[बरामदे से भीतर आते हुए] क्या गिरेगा? अगर मै पूछ सकूँ, क्या वही रेलवे की स्कीम तो नहीं है जो गिरने जा रही है?

वर्निक—नही, वल्कि वह आगे बढ़ रही है।

रुम्मेल—बड़ी तेजी से, मिस्टर त्वांसे!

हिल्मा—[नजदीक पहुचकर] सचमुच?

रारलुन्त—क्या बात है?

मिसेज वर्निक—[बरामदे के दरवाजे पर] कारस्ते, प्रिय, यह क्या है जो

वर्निक—प्यारी वेत्ती, इसमे तुम्हे क्या दिलचस्पी हो सकती है? [उन तीन पुरुषों से] हिस्सेदारो की सूची हमे बना लेनी चाहिये

और जितना ही जल्दी हो सके उतना ही अच्छा। हम लोगों के चार नाम तो, स्पष्ट है, ऊपर रहेगे ही। समाज मे हमारा जो स्थान है, उससे हम लोगो का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि इस कार्य मे जहां तक सम्भव हो सके हम सब से आगे रहे।

सान्स्तात्—यह तो स्पष्ट है मिस्टर वर्निक!

रुम्मेल—यह आयोजना अवश्य सफल होगी वर्निक! मैं शपथ लेता हूं, जरूर होगी।

वर्निक—अरे! मुझे असफलता की जरा भी आशंका नहीं है। हम लोगो को केवल यह करना है कि हम जी तोड़कर काम करे, हर एक अपनी परिचित परिधि मे। और अगर हम लोग यह बात दिखला सकें कि समाज की प्रत्येक श्रेणी मे यह स्कीम लाभदायक समझी जाती है तो यह बात स्पष्ट मालूम होती है कि हमारे म्यूनिसिपल कारपोरेशन को भी अपने हिस्से का धन देना होगा।

मिसेज़ वर्निक—कारस्ते, यहाँ आओ और हम लोगो को भी बतलाओ

वर्निक—प्यारी, यह एक ऐसी बात है जिसका सम्बन्ध स्त्रियों से बिल्कुल नहीं है।

हिल्मा—तो अन्त में आप इस रेलवे स्कीम का अनुमोदन करने जा रहे है?

वर्निक—हॉ, स्वभावतः।

रारलुन्त—लेकिन पारसाल मिस्टर वर्निक।

वर्निक—पारसाल दूसरी बात थी। तब तो समुद्र के किनारे किनारे लाइन बनाने की बात थी।

विजलान्त—जो कि बिलकुल व्यर्थ होता मिस्टर रारलुन्त, क्योकि वहां तो हमारे स्टीमर चलते ही हैं।

सान्स्तात—और फजूल ही उस मे खर्च भी वहुत वैठता।

रुम्मेल—हाँ, और उस से कस्बे का वहुत सा अहित हुआ होता।

वर्निक—मुख्य वात तो यह थी कि उससे समष्टि रूप से समाज का लाभ न होता। इसीलिये मैंने उसका विरोध किया, जिसका फल यह हुआ कि फिर भीतरी लाइन वनाने का निश्चय हुआ।

हिल्मा—हाँ, लेकिन वह इस देहात के कस्बो को तो न छू पायेगी?

वर्निक—यहाँ तो आखिर आही जायेगी, क्योकि हम लोग यहां एक ब्रांच लाइन वनाने जा रहे हैं।

हिल्मा—हॉ? तो एक नई स्कीम...

रुम्मेल—यह उपयोगी स्कीम है न?

रारलुन्त—हूँ।

विजलान्त—यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि हमारे इस देहात की प्रकृति ने रचना ही इस प्रकार की है जैसे वह उसे एक ब्राञ्च लाइन के योग्य वनाना चाहती रही हो।

रारलुन्त—क्या सचमुच आपका यह मतलव है मिस्टर विज-लान्त?

वर्निक—हॉ, मुझे मान लेना चाहिये कि इसमे जैसे अदृश्य का हाथ था जिसकी प्रेरणा से इस साल वसन्त में रोजगार के लिये मुझे एक यात्रा करनी पड़ी जिसमे कि मुझे एक ऐसी घाटी पार करनी पड़ी जहां मैं पहले कभी नहीं पहुंचा था। मेरे मस्तिष्क में यह वात अकस्मात झलक उठी कि यही स्थान है जहां से हम लोग अपने कस्बे तक एक ब्रांच लाइन ले जा सकते है। मैंने आस

पास की सर्वे एक इंजीनियर से करा ली और यह अन्दाजन हिसाव है खर्च का। अब ऐसी कोई बात नहीं जो बाधा डाल सके।

मिसेज़ वर्निक—[जो और स्त्रियों के साथ अब भी बरामदे के दरवाजे पर हैं] लेकिन प्यारे, कारस्ते, यह विचार भी कि तुम हम लोगो से यह सब छिपाओगे .

वर्निक—प्यारी बेत्ती, मै जानता था कि परिस्थिति को तुम ठीक ठीक समझ न सकोगी। और इसके अतिरिक्त आज के पहले यह बात मैंने किसी भी जीव से नहीं कही। लेकिन अब वह मुहूर्त आ गया है और अब हमें खुलकर और शक्ति भर काम करना चाहिये। हॉ, अगर इसके लिये मुझे अपना सब कुछ भी ख़तरे में डालना पड़े, तो भी अब यह काम कर डालना है।

रुम्मेल—और हम लोग आपका साथ देंगे, वर्निक! आप हम लोगो का विश्वास करें।

रारलुन्त—तो आप वास्तव मे हम लोगो को यह वचन देते है कि इस उपक्रम से इतना लाभ होगा ?

वर्निक—हॉ, निस्सन्देह। सोचिये अपने सारे समाज की दशा को ऊपर उठा देने मे इस से कितनी सहायता मिलेगी! उन बड़े बड़े जंगलो का विचार कीजिये जहां हम लोगो की अबाध गति हो जायेगी। उन महँगे खनिज पदार्थों का विचार कीजिए जिनकी खानो को काम मे लाना सम्भव हो जायगा। और नदी के एक के बाद एक जलप्रपात! हमारा रोजगार और हमारी उत्पादक शक्ति कितनी बढ़ जायेगी!

रारलुन्त—बाहरी दुनिया की नीचता को यहां आने का सरल रास्ता मिल जायगा, इसका डर आपको नही है ?

वर्निक—नहीं, इस बारे मे अपना संशय दूर कर डालिये

मिस्टर रारलुन्त। आज कल हमारे छोटे रोजगार का छत्ता ऐसे नैतिक आधार पर स्थित है, ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये—हम सबने इसके लिए उद्योग किया है, अगर मैं कह सकूँ और हम लोग अपनी अपनी शक्ति भर यह करते ही रहेंगे। आप मिस्टर रारलुन्त अपनी दैवी विभूतियों का परिचय देते रहेंगे हमारे स्कूल में और घरो मे। हम अनुभवी कारबारी आदमी समाज के आधार रहेंगे, इसकी भलाई के उपकरणो को अधिक से अधिक विस्तार देकर। और हमारी महिलाए—हाँ, देवियो पास चली आओ, आप लोग यह सुनना चाहेंगी—हमारी नारियाँ—मेरा मतलब है हमारी स्त्रियाँ और लड़कियाँ—तुम महिलाओ शान्त भाव से दया और दान के सेवा कार्य मे लगी रहोगी, और अपने सगे सम्बन्धियो को सहायता और सुख पहुँचाती रहोगी जैसे कि प्यारो बेत्ती और मर्था मुझे और ओलाफ को [चारों ओर देख कर] आज ओलाफ कहां है ?

मिसेज बर्निक—छुट्टी के दिन उसे घर रख लेना असम्भव है।

बर्निक—सन्देह नहीं वह समुद्र के किनारे फिर पहुँच गया है। देखना वहाँ कुछ हानि उठाकर तब वह मानेगा।

हिल्मा—वाह! प्रकृति की शक्तियो के साथ थोड़ा सा खेल लेना .

मिसेज रुम्मेल—मिस्टर बर्निक, आपका परिवार-प्रेम सराहनीय है।

बर्निक—परिवार ही समाज का आधार है। अच्छा परिवार, सज्जन और विश्वासपात्र मित्र, परिवार की छोटी किन्तु शान्त परिधि जहां अशान्ति की छाया नहीं पड़ती—[क्राप दाहिनो ओर से भीतर आता है, अखबार और पत्र लिये हुए।]

क्राप—विदेशी डाक है मिस्टर वर्निक और न्यूयार्क का एक तार।

वर्निक—[तार लेकर] अरे—"इण्डियन गर्ल" के मालिकों के यहाँ से

रुम्मेल—डाक आगई ? ओ, तब क्षमा करें मुझे।

विजलान्त—मुझे भी !

सान्स्तात—सलाम मिस्टर बर्निक !

वर्निक—सलाम, याद रहे हम लोगों को एक सभा करनी है आज शाम को पांच बजे।

तीनो व्यक्ति—हाँ, निस्सन्देह। [दाहिनी ओर से सब निकल जाते हैं]

बर्निक—[जोकि तार पढ़ चुका है] यह सब ओर से अमेरिकन है। बिल्कुल चोट पहुँचाने वाला।

मिसेज़ वर्निक—प्यारे कारस्तें, क्या है यह ?

बर्निक—यह देखो क्राप, पढ़ो तो।

क्राप—[पढ़ता है] " कम से कम मरम्मत करो। 'इण्डियन गर्ल' ज्योंही चलने के लायक हो जाय भेज दो, साल का उपयोगी समय। " मुझे कहना पड़ता है कि .

रारलुन्त—देखते हो इन बड़े बड़े, प्रसिद्ध समाजों की दशा, इनका व्यवहार ?

वर्निक—ठीक कहते हो, मनुष्य की ज़िन्दगी का ख़्याल एक क्षण के लिये भी नही—जहां फायदा उठाने की बात आ जाती है। [क्राप से] 'इण्डियन गर्ल' चार पांच दिन के भीतर समुद्र मे चल सकता है ?

क्राप—हाँ, अगर मिस्टर विजलान्त इस बीच मे "पाम ट्री" का काम वन्द कर देना स्वीकार कर लें।

बर्निक—हूँ। वे नहीं मानेगे। कृपा कर पत्रों को पढ़ जाओ। और सुनो, तुमने ओलाफ को समुद्र के किनारे देखा था?

क्राप—नहीं मिस्टर बर्निक। [बर्निक के कमरे में चला जाता है।]

बर्निक—[तार को फिर देखते हुए] इन भलेमानुसों को आठ आदमियों की जान जोखिम में डालने की जरा भी परवाह नहीं है।

हिल्मा—अजी खतरे का सामना करना सच्चे नाविक का काम है। अपने और अगाध सागर के बीच केवल एक पतले तख्ते को देख कर हृदय में कैसा साहस भर जाता होगा!

बर्निक—क्या हमारे समाज मे भी कोई ऐसा जहाज़ का मालिक है जो ऐसी बात से सहमत हो सके? कोई ऐसा नहीं कर सकता—कोई भी नहीं। [ओलाफ को घर में आता हुआ देखकर] वाह, ईश्वर की कृपा, यह आ रहा है सकुशल और सुरक्षित। [ओलाफ मछली फँसाने की वंसी लिए बगीचे से दौडता हुआ बरामदे में आता है।]

ओलाफ—हिल्मा मामा, मैं वहाँ गया था, स्टीमर देखा।

बर्निक—तुम किनारे पर फिर गये थे?

ओलाफ—मैं थोड़ी दूर तक नाव मे गया था। लेकिन देखिये तो हिल्मा मामा, एक सर्कस की कम्पनी किनारे उतरी है। घोड़े हैं, और जानवर हैं और बहुत से आदमी हैं।

मिसेज़ रुम्मेल—नहीं, क्या हमारे यहाँ सर्कस सचमुच होगा?

रारलुन्त—हमारे यहाँ ? मुझे तो यह देखने की कोई भी इच्छा नही है।

मिसेज़ रुम्मेल—नही, मेरा मतलब यह नही था कि हम लोगो के लिए, लेकिन

दीना—मै तो सर्कस देखना वहुत पसन्द करूंगी।

ओलाफ—मैं भी।

हिल्मा—तुम वेवकूफ हो। यह भी कोई देखने की चीज़ है ? केवल चालाकी। हाँ, वह देखने योग्य दृश्य होता होगा जब अमेरिका के जंगलो मे लोग जंगली घोड़ो को काबू मे करके उन्हे सरपट दौड़ाते हैं। लेकिन इन छोटे कस्वो मे

ओलाफ—[मर्था का कपडा खींचता हुआ] देखो, मर्था वूआ ! वह देखो आ रहे हैं।

मिसेज़ हाल्त—हे ईश्वर ! आ तो रहे हैं।

मिसेज लीञ्ज—छीः कैसे भयंकर जीव हैं !

[वहुत से आदमी और वहुत सा सामान सडक से जाता हुआ देख पडता है]।

मिसेज़ रुम्मेल—ये ढोगियो के गरोह हैं। उस स्त्री को देखो भूरे लिबास मे, मिसेज़ हाल्त ! वह जिसके कन्धे पर बेग है।

मिसेज़ हाल्त—हाँ, देखो वह उसे अपने ऊपर लादे है। मैं अनुमान करती हूँ, मैनेजर की स्त्री है।

मिसेज़ रुम्मेल—और वह देखो—मैनेजर है, कोई सन्देह नही। डाकू जैसा मालूम पड़ता है। उसकी ओर न देखो, हिल्दा !

मिसेज़ हाल्त—तुम भी नहीं, नेत्ता।

ओलाफ—माँ, मैनजर हम लोगो को सलाम कर रहा है।

बर्निक—क्या ?

मिसेज़ वर्निक—क्या कह रहे हो, बच्चा।

मिसेज रुम्मेल—हाँ, अरे वह स्त्री भी हम लोगो को सलाम कर रही है।

वर्निक—यह तो बहुत सूखा सलाम है।

मर्था—[अकस्मात बोल उठती है] अरे।

मिसेज़ वर्निक—क्या है मर्था ?

मर्था—कुछ नहीं, कुछ नही, अकस्मात् मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे

ओलाफ़—[प्रसन्नता से उछलता हुआ] देखो, देखो, और सब वे हैं, घोड़ो और जानवरो के साथ। और वे अमेरिकावाले भी हैं, 'इण्डियन गर्ल' के सभी मल्लाह [ढोल और कई तरह का बाजा और गाना सुनाई पड़ता है।]

हिल्मा—[अपने कानों में उगली डाल कर] उफ़! उफ़! उफ़!

रारलुन्त—महिलाओ, हम लोगों को सामने से ज़रा हट जाना चाहिए। ऐसी बातो से हम लोगो को कुछ नहीं करना है। चलिये फिर अपने काम पर चलें।

मिसेज़ वर्निक—पर्दा गिरा देना आप पसन्द करेंगे ?

रारलुन्त—हाँ, मैं भी ठीक यही चाहता था।

[स्त्रियाँ सिलाई की मेज पर बैठती हैं, रारलुन्त बरामदे का दरवाजा बन्द करता है और दरवाजे पर और खिडकियों पर पर्दा डाल देता है। कमरे में अँधेरा हो जाता है।]

ओलाफ—[पर्दे के बाहर झाँक कर] माँ, मैनेजर की स्त्री फ़व्वारे के पास खड़ी होकर अपना मुँह धो रही है।

मिसेज़ वर्निक—क्या, बीच बाजार मे ?

मिसेज़ रुम्मेल—और दिन दोपहर को !

हिल्मा—खैर मुझे तो कहना पड़ेगा कि अगर मुझे रेगिस्तान में चलना पड़ता और मुझे एक कुआँ मिल जाता तो मुझे विश्वास है मैं यह विचार करने न बैठता कि यह...उफ ! यह भयावह बाजा !

रारलुन्त—तब तो यही अवसर है पुलिस के बाधा देने का।

बर्निक—नही, नही, विदेशियो पर कठोर नही होना चाहिये। इन लोगो मे सुरुचि के भाव सचमुच बहुत गहराई तक नहीं हैं जो मर्यादा की सीमा में रखते हैं। मान लो उनका व्यवहार भद्देपन का होता है तो हम लोगों को क्या ? भाग्य से उथल पुथल को यह लहर जो सत्य और नियम के ऊपर से होकर निकल जाना चाहती है, हमारे समाज मे अभी नही आ सकी है। लेकिन यह क्या ? [लोना हेस्सल दाईं ओर के दरवाजे से तेज़ी के साथ भीतर आती है।]

स्त्रियॉ—[धीरे से डरी हुई आवाज में] सर्कस की स्त्री ! मैनेजर की स्त्री !

मिसेज़ बर्निक—हे ईश्वर, यह क्या ?

मर्था—[उछल पड़ती है] ओह

लोना—कैसी हो बेत्ती प्यारी ? कैसो हो मर्था ? सब कुशल है, जीजा ?

मिसेज़ वर्निक—[चिल्ला कर] लोना !

वर्निक—[पीछे हटते हुए] निश्चय ही ..

मिसेज़ हाल्त—हे ईश्वर ! हम लोगो पर कृपा हो।

मिसेज रुम्मेल—यह सम्भव नहीं।

हिल्मा—अरे, ओफ !

मिसेज़ बर्निक—लोना ! क्या सचमुच तुम हो ?

लोना—हाँ सचमुच ? तबियत चाहे तो मेरे गले से लग सकती हो।

हिल्मा—ओफ ! ओफ !

मिसेज़ बर्निक—और यहाँ इस तरह से लौटना .

बर्निक—और इस रूप मे प्रकट होने की इच्छा .

लोना—प्रकट होना ? प्रकट होना किस रूप मे ?

बर्निक—मेरा मतलब है सर्कस में।

लोना—अरे, अरे, जीजा पागल हो गये हो क्या ? तुम समझते हो कि मै सर्कस वालो मे हूँ ? नही। इसमे सन्देह नहीं कि मैंने बहुत से काम किए है, लेकिन .

मिसेज़ रुम्मेल—हूँ ॐ

लोना—लेकिन सर्कस की घुड़दौड़ का प्रयत्न मैंने कभी नहीं किया।

बर्निक—तब तुम सर्कस के साथ नहीं हो ?

मिसेज़ बर्निक—ईश्वर को धन्यवाद है।

लोना—नहीं। हम लोग और भले आदमियों की तरह इसी जहाज से आए हैं। हाँ, दूसरे दर्जे से आये, हैं, लेकिन हम लोगों को इसकी आदत है।

मिसेज़ बर्निक—"हम लोग" तुमने कहा ?

बर्निक—[एक क़दम आगे बढ कर] 'हम लोग' से तुम्हारा मतलब किनसे था ?

लोना—मैं और बच्चा।

स्त्रियाँ—[उद्वेग से] बच्चा ?

हिल्मा—क्या ?

रारलुन्त—तो मैं जरूर कहूँगा कि

मिसेज़ बर्निक—तुम्हारा मतलब क्या है लोना ?

लोना—मेरा मतलब जान से है; मेरा कोई दूसरा बच्चा नहीं है—जहाँ तक मुझे पता है—तुम्हारे जान के सिवाय।

मिसेज़ बर्निक—जान ?

मिसेज़ रुम्मेल—[दबी हुई जबान में मिसेज लीञ्ज से] भागा हुआ भाई।

बर्निक—[सकोच से] जान तुम्हारे साथ है ?

लोना—हाँ, है। मैं उसके बिना, निश्चित है, नही आती। इतने हैरान क्यो देख पड़ते हो ? और तुम यहाँ अँधेरे में बैठी सफेद चीजें क्या सी रही हो। परिवार मे कोई गमी तो नहीं हुई ?

रारलुन्त—श्रीमती जी ! इस समय आप 'पतित नारी सहायक संघ' मे है।

लोना—[अर्ध स्वर में अपने ही से] क्या ? ये सुन्दर शान्त आकृति की महिलायें क्या पतित हो सकती हैं ?

मिसेज रुम्मेल—खैर, वास्तव मे

लोना—ओह ! मै समझी। और यह तो जरूर मिसेज रुम्मेल है। और वह मिसेज हाल्त भी बैठी हैं। पिछली बार जब हम मिली थी तब से हम तीनो कुछ बूढ़ी ही हुई हैं। लेकिन देखो भले मानसो "पतित नारी सहायक संघ" का काम एक दिन और रहने दो, इससे उनकी कोई बड़ी हानि नहीं होगी। इस तरह के आनन्द का अवसर

रारलुन्त—घर आना सदैव आनन्द का ही अवसर नहीं होता।

लोना—वास्तव में? खैर पादरी साहब आप अपनी बाइविल कैसे पढते हैं?

रारलुन्त—मैं पादरी नहीं हूँ।

लोना—तव आप हो जायँगे। लेकिन वाह! आपका यह सदाचार द्योतक वस्त्र कुछ बेढब महक रहा है जैसे कफन। मै यह बतला दूँ कि मुझे खुली हवा में रहने की आदत है।

वर्निक—[अपना ललाट पोंछते हुए] हाँ, यहाँ सचमुच हवा की कमी है।

लोना—जरा ठहरिये। हम लोग ज़रा इस अंधेरे से तो निकलें। [पर्दे एक ओर खींच देती है] बच्चा के आने के समय यहाँ दिन का प्रकाश होना चाहिये। बच्चा अभी नहा-धो कर आ रहा है।

हिल्मा—ओफ!

लोना—[बरामदे का दरवाज़ा और खिड़कियाँ खोलती हुई] वह होटल में स्नान कर रहा होगा। जहाज पर वड़ा गन्दा हो गया था।

हिल्मा—उफ! उफ!

लोना—उफ! क्या यह [हिल्मा की ओर सकेत करती है और दूसरों से पूछती है] हिल्मा नहीं है? क्या यह अव भी 'उफ़ उफ' करता हुआ यहाँ मक्खो मार रहा है?

हिल्मा—["उफ" कहता हुआ] मैं मक्खी नहीं मारता—मेरे स्वास्थ्य की दशा मुझे यहाँ रक्खे है।

रारलुन्त—तव, देवियो मैं नहीं समझता .

लोना—[जिसने ओलाफ़ को देख लिया है] यह तुम्हारा बच्चा है बेत्ती ? आओ बाबू एक मिट्टी तो दो। या तुम अपनी भद्दी बुड्ढी मौसी से डरते हो ?

रारलुन्त—[अपनी किताब बगल मे दबा कर] मैं समझता हूँ हममे से कोई भी अब कुछ और अधिक काम करना नहीं चाहता—किसी की इच्छा नहीं है। मै समझता हूँ अब हम लोग कल मिलेंगे।

लोना—[जब कि दूसरे उठ उठकर छुट्टी लेते हैं] हाँ, कल ठीक रहेगा। मैं यहीं हूँगी।

रारलुन्त—आप ? क्षमा कीजिये मिस हेस्सल, हमारे समाज मे आप क्या करेंगी ?

लोना—पादरी साहब ! मैं इसमे साफ और ताज़ी हवा लादूँगी।

दूसरा अंक

[दृश्य—वही कमरा। मिसेज बर्निक मेज पर अकेली बैठ कर सिलाई कर रही है। बर्निक हैट और दस्ताने पहने दाईं ओर से भीतर आता है—उसके हाथ में छडी है।]

मिसेज़ बर्निक—बड़ी जल्दी आगये, कारस्तें ?

बर्निक—हॉ, एक आदमी को मैंने मिलने के लिए बुलाया है।

मिसेज बर्निक—[हिचकिचा कर] हॉ, शायद जान यहॉ फिर आ रहा है।

बर्निक—मैंने 'एक आदमी' कहा था। और स्त्रियो को आज क्या हो गया ?

मिसेज बर्निक—मिसेज रुम्मेल और हिल्दा को आने का समय नहीं मिला।

बर्निक—ओ ! क्या उन्होंने कोई बहाना किया ?

मिसेज़ बर्निक—हॉ, उन्होने कहलाया है कि उन्हे घर पर ही बड़ा काम है।

बर्निक—स्वभावतः, और सब भी नही आ रही है।

मिसेज बर्निक—हॉ, आज किसी बात से वे रुक गई हैं।

बर्निक—मैं यह पहले ही जानता था। ओलाफ कहॉ है ?

मिसेज बर्निक—मैंने उसे दीना के साथ थोड़ी दूर बाहर जाने दिया है।

बर्निक—हूँ। वह बड़ी चंचल है। देखा तुमने कल वह जान के साथ कैसी घुलमिल रही थी।

मिसेज़ बर्निक—लेकिन प्यारे कारस्तें, तुम जानते हो दीना इस सम्बन्ध की कोई भी बात नही जानती।

बर्निक—लेकिन किसी भी हालत मे जान के पास तो इतनी समझ होनी चाहिये थी कि उसकी ओर बहुत ध्यान न देता। मैं उसके चेहरे से समझ सकता था, विजलान्त क्या सोच रहा था।

मिसेज़ बर्निक—[सिलाई का कपडा अपनी जॉघ पर रखती हुई] कारस्तें! कुछ अनुमान कर सकते हो उसके यहॉ आने का अभिप्राय क्या होगा?

बर्निक—सुनो, उसका वहाँ एक खेत है, और मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि उसमें लाभ नहीं हो रहा है। उसने कल यह कहा था न कि उन दोनो को मजबूर होकर 'सेकिंड क्लास' मे सफर करना पड़ा।

मिसेज़ बर्निक—हॉ मुझे भी डर है कोई ऐसी ही बात ज़रूर होगी। लेकिन लोना का भी उसके साथ आना—ज़रा सोचो तो वह तुम्हारा इतना भयंकर अपमान करने के बाद भी

बर्निक—आह उस पुराने इतिहास को न याद करो।

मिसेज़ बर्निक—इस समय मै उसको भुला कैसे सकॅगी? जो भी हो, वह मेरा तो भाई है। फिर भी उसके लिये मैं परेशान नही हूँ, लेकिन तुम्हारी कठिनाइयो का ख्याल करके जो इस कारण से उठ खड़ी होगी, कारस्तें, मुझे तो बड़ा डर है कि

बर्निक—डर? किस बात का?

मिसेज़ बर्निक—क्या यह सम्भव नही कि तुम्हारी मा का रुपया चुरा लेने के अभियोग मे वे उसे जेलखाने मे डाल दे?

वर्निक—कैसी मूर्खता की बात करती हो ? कौन साबित कर सकता है कि रुपया चोरी गया था ?

मिसेज़ बर्निक—दुर्भाग्य से सारा कस्बा जानता है। तुम्हे याद है तुमने खुद कहा

वर्निक—मैंने कुछ नहीं कहा। कस्बा इस बारे मे कुछ नहीं जानता। सारी बात गप्प छोड़कर और कुछ नही थी।

मिसेज़ बर्निक—तुम कितने उदार हो कारस्ते !

वर्निक—कृपा कर अब उन बातो की याद न कराया करो। तुमको पता नही उन बातो को उठाकर तुम मुझे कितनी तक़लीफ़ देती हो। [इधर-उधर टहलता है और तब छड़ी एक ओर दूर फेंक देता है।] और अब उनका वापिस आना, ठीक इसी समय जब कि मेरे लिये यह विशेष रूप से आवश्यक है कि मैं सब ओर से दृढ़ रहूँ, नगरवासियो और अख़बारो मे मेरा सम्मान बना रहे ! हमारे लेखक यहाँ के बारे मे रिपोर्ट दूसरे अख़बारो मे भी भेजेगे। मैं उनका स्वागत अच्छी तरह से करूँ या बुरी तरह से, इस सबकी आलोचना होगी, चारो ओर चर्चा होगी। वे उन पुरानी कहानियों को ले उड़ेंगे—जैसा कि तुम करती हो। हमारे जैसे समाज मे—[मेज पर अपने दस्ताने फेंक देता है] और यहाँ कोई भी जीव ऐसा नही जिससे मै यह सब कह सकूँ और जिससे सहायता पा सकूँ।

मिसेज बर्निक—कोई भी नही, कारस्तें ?

वर्निक—नहीं, यहाँ कौन है ? और ठीक इसी समय उनका मेरे यहां आना ! निस्सन्देह किसी न किसी रूप मे वे कोई बदनामी पैदा कर देंगे। विशेष कर लोना ऐसे लोगो से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध होना हर हालत मे अभिशाप है।

जिसमें सबके ऊपर मैं हूँ, विकास मे भी मुझे अगुआ होना पड़ेगा नही तो उन्नति होगी ही नहीं।

आउन—मैं भी विकास का स्वागत करता हूँ मिस्टर वर्निक !

वर्निक—हाँ, अपनी ही संकीर्ण परिधि मे, केवल मजदूरो के लिये। मै खूब जानता हूँ तुम कितने भयंकर आन्दोलनकारी हो। आप व्याख्यान देते है, लोगो मे जोश पैदा करते है, लेकिन विकास का जब कोई निश्चित उदाहरण सामने आता है, जैसे हमारी नई मशीने, आप उनका उपयोग करना नही चाहते, आप डरने लगते हैं।

आउन—हाँ मै वास्तव मे डरता हूँ मिस्टर वर्निक। मुझे डर है उन लोगो के लिये जिनके मुँह की रोटी छिन जायगी इन मशीनो से। जनाब, समाज की आप जो चिन्ता करते है, उसके बारे में बातें करने का तो आपको बड़ा शौक है, लेकिन मैं तो सोचता हूँ कि समाज का भी कुछ कर्तव्य है। विज्ञान और पूंजीवाद मज़दूरों के भीतर इन आविष्कारों को घुसाने का साहस क्यो कर रहे हैं, जब तक कि समाज एक पीढ़ी को इनके उपयोग के योग्य बना नही देता ?

वर्निक—तुम बहुत पढ़ते और सोचते हो, आउन ! लेकिन इससे तुम्हारा कोई लाभ नही होता, इसीलिये तुम अपनी स्थिति से असन्तुष्ट हो जाते हो।

आउन—ऐसी बात नहीं है मि० वर्निक ! लेकिन मैं यह देखना सहन नही कर सकता कि एक एक कर के अच्छे मज़दूर कारखाने से निकाल दिये जायँ—इन मशीनों के कारण भूखो मरने के लिये।

वर्निक—हूँ, जब छापने की कला का आविष्कार हुआ था तो बहुत से कलम घसीटने वाले भूखो मरने लगे थे।

आउन—अगर आप उन दिनो मे कलम घसीटने वाले रहे होते तो क्या आप छापने की कला को इतना पसन्द करते ?

वर्निक—मैंने आपको यहाँ बहस करने के लिये नहीं बुलाया । मैंने आपको यह कहने के लिये बुलाया था कि "इण्डियन गर्ल" परसो तक समुद्र मे छोड़ने लायक होजाय ।

आउन—लेकिन मिस्टर वर्निक

बर्निक—कह रहा हूँ परसो, सुना आपने ? उसी समय जिस समय कि हमारा अपना जहाज, एक घंटे भी पीछे नहीं । जल्दी कराने के लिये कारण है । आज का अखबार देखा है ? तब पता होगा इन अमेरिकन मल्लाहो की बदमाशी का । ये बदमाश सारे कस्बे को ऊपर से नीचे उलट रहे हैं । कोई भी रात नहीं जाती जब कि गली मे या सड़क पर कोई न कोई बदमाशी न होती हो । कौन-कौन सी बातें कही जायँ ?

आउन—हाँ सचमुच ये बड़े पाजी हैं ।

वर्निक—इस सारी बदमाशी की जिम्मेदारी किसके ऊपर है ? मेरे ऊपर है । हाँ मुझी को इसके लिये परेशान होना है । ये अखबार वाले सौ तरह की खुराफात पैदा कर रहे हैं—इसलिये कि हम लोग अपनी सारी ताकत 'पाम ट्री' मे लगा रहे हैं । मैं, जिसका उद्देश्य है लोगो के सामने आदर्श उपस्थित करने का, इतना सह रहा हूँ । मैं यह सहन नही कर सकता । मुझे अपनी नेकनामी इस तरह बिगाड़ने की चाह नही है ।

आउन—आपका नाम इतना क्या इससे और भी अधिक सह सकने के लिये काफी है जनाब ।

वर्निक—इस समय नहीं । इस समय तो मुझे लोगो की अधिक से अधिक सहानुभूति और विश्वास की जरूरत है ।

मुझे एक बड़ा काम करना है, जो कि शायद आपने सुना हो। लेकिन अगर यह हो कि लोगों का जो मुझ पर विश्वास है उसे ये बदमाश मिटा दें तो मुझे बड़ी कठिनाई मे पड़ना पड़े। इसी लिये मैं किसी भी हालत मे अख़बारों की शिकायत को रोकना चाहता हूँ और इसी लिये मैं दिन निश्चित कर देता हूँ परसों, जितना समय मैं आपको दे सकता हूँ उसकी अन्तिम सीमा।

आउन—मिस्टर बर्निक! इस तरह तो आप आज दोपहर की ही सीमा निश्चित कर सकते हैं।

बर्निक—आप का मतलब है कि मैं कोई असम्भव बात कह रहा हूँ?

आउन—हाँ, जितने आदमी इस समय कारखाने मे हैं, उन्हें देखते हुए असम्भव ही है।

बर्निक—अच्छी बात है, तब हमें कोई दूसरा उपाय करना होगा।

आउन—तो क्या आप अपने और भी पुराने आदमियों को अलग करना चाहते हैं?

बर्निक—नहीं, मैं यह नहीं सोचता।

आउन—क्योकि मैं समझता हूँ कि इससे आपके ख़िलाफ बात फैलेगी अख़बारो मे और कस्बे के और लोगो में भी।

बर्निक—सम्भव है, इसलिये हम लोग यह नही करेंगे। लेकिन अगर परसों तक 'इण्डियन गर्ल' समुद्र मे चलने के लायक नही हो जाता, तो मै आप को अलग कर दूँगा।

आउन—[विस्मय से] मुझको? [हँसता है] आप दिल्लगी कर रहे हैं मिस्टर बर्निक।

वर्निक—अगर मैं आपकी जगह पर होता तो मैं ऐसा न समझता।

आउन—मुझे भी अलग करने की बात आप सोच सकते हैं? आपका मतलब यह है? मुझे, जिसके बाप और दादा आपके कारखाने में जिन्दगी भर काम करते रहे, जैसा कि मैंने खुद भी किया है?

वर्निक—कौन मुझे यह करने के लिये मजबूर कर रहा है?

आउन—आप जो चाहते हैं असम्भव है मिस्टर बर्निक!

वर्निक—अजी जहाँ तबियत है वहाँ रास्ता भी है। हाँ या नही? मुझे स्पष्ट और निश्चित जवाब दीजिये या अपने को इसी समय से अलग समझिये।

आउन—[एक कदम उसकी ओर बढ़कर] मिस्टर बर्निक! कभी आपने सोचा है किसी पुराने मजदूर को अलग करने का क्या मतलब होता है? आप समझते है वह कोई दूसरी नौकरी ढूँढ़ लेगा। हाँ, वह ढूंढ़ सकेगा, लेकिन क्या इतने ही से यह बात खतम हो जाती है? एक बार आप वहाँ जाइये, एक मजदूर के घर मे जो कि अलग कर दिया गया हो, जिस दिन शाम को वह अपने घर आये, अपने साथ अपने सारे औज़ार लेकर ..

वर्निक—तुम समझते हो कि मै तुम्हे खुशी से अलग कर रहा हूँ? क्या मै सदैव तुम्हारे लिये भलामानुस मालिक नहीं रहा हूँ?

आउन—यह तो और भी बुरा है मिस्टर बर्निक। इसीलिये मेरे घर वाले आपको दोष नहीं देंगे, वे मुझसे भी कुछ नहीं कहेगे क्योकि उनको हिम्मत नही होगी, लेकिन जब मेरा ख्याल उधर नही रहेगा वे मेरी ओर देखेंगे और सोचेंगे कि मैं इसी लायक रहा हूँगा। देखा आपने? यही, यही मैं नहीं सह सकूँगा। मेरी

क्या हस्ती, मैं खूब जानता हूॅ, लेकिन अपने घर मे मेरा आसन सब से ऊँचा रहा है। मेरा दरिद्र घर एक छोटा सा समाज है, मिस्टर वर्निक, एक छोटा सा समाज जो मुझपर निर्भर रहा है, क्योंकि मेरी स्त्री का मुझ पर विश्वास रहा है—मेरे बच्चो का मुझ पर विश्वास रहा है। और अब यह सब ढह जायगा।

बर्निक—तिस पर भी अगर और कोई उपाय नहीं है तो अधिक के लिए थोड़े को गिरना चाहिये; सब किसी की भलाई के लिये व्यक्ति का वलिदान हो जाना चाहिये। मै आपको कोई दूसरा जवाब नही दे सकता; और वही, दुनिया मे उसके अति-रिक्त कोई दूसरा रास्ता नही। आउन, आप हठी आदमी है—आप मेरा विरोध कर रहे है, इसलिये नही कि आप और कुछ कर नही सकते, बल्कि इसलिये कि हाथ के काम के ऊपर आप मशीन की प्रधानता नही देखना चाहते।

आउन—और आप हिलेंगे नहीं मिस्टर वर्निक! क्योकि आप समझते है कि मुझे निकाल कर आप अख़बारो को अपनी नेकनीयती का हर हालत मे सबूत दे देंगे।

बर्निक—अच्छी बात है, ऐसा ही हो? मैंने आप से कह दिया, मेरे लिये इसका क्या मतलब है—या तो अख़बारो को अपने ऊपर चढ़ाई करने देना, या उनको अपनी ओर कर लेना, ऐसे मौके पर जब कि मै एक ऐसा काम करने जा रहा हूँ जिससे सब किसी की भलाई होगी। कहो, तब मैं इस समय जो कर रहा हूॅ उसे छोड़ कर और कुछ कर सकता हूॅ? प्रश्न तो यह है कि या तो आप के घर का गुज़र हो जैसा कि आप कह रहे है या सैकड़ो नये घर बसने न दिये जायॅ—सैकड़ों घर जो कि कभी बनेंगे नहीं, जिनमें कि कभी आग नही जलेगी, जब तक कि मैं उस स्कीम मे सफलता न पाऊॅ जिसकी आज कल मै कोशिश

कर रहा हूँ। इसीलिये मैंने आप को निश्चय करने के लिये कह दिया है।

आउन—ख़ैर, अगर ऐसी बाते हैं तो मुझे अब कुछ नहीं कहना है।

वर्निक—हूँ, भाई आउन यह सोचकर मुझे बड़ा दुःख हो रहा है कि हम लोग अलग हो रहे हैं।

आउन—हम लोग अलग नहीं हो रहे है मिस्टर वर्निक।

वर्निक—यह कैसे ?

आउन—मेरे ऐसे मामूली आदमी को भी कुछ बचाना है, जिसके लिये वह मजबूर है।

वर्निक—बिल्कुल ठीक, बिल्कुल ठीक, तब मै समझता हूँ आप यह इकरार कर सकते है

आउन—परसो 'इण्डियन गर्ल' समुद्र मे चलने के लायक हो जायगा। [सिर झुका कर दाहिनो ओर से निकल जाता है।]

वर्निक—वाह, इस हठी आदमी से अच्छा काम निकाला। यह अच्छा संयोग है। [हिल्मा सिगार पीते हुए बगीचे के दरवाजे से आता है ।]

हिल्मा—[बरानदे की सीढियों पर पहुँच कर] नमस्कार बेत्ती, नमस्कार कारस्तें।

मिसेज़ वर्निक—नमस्कार।

हिल्मा—ओ, मालूम हो रहा है तुम रोती रही हो, तो मै समझता हूँ तुम भी यह सब जानती हो।

मिसेज बर्निक—क्या सब ?

हिल्मा—जो बदनामी कि ख़ूब फैल रही है ! ओफ !

बर्निक—तुम्हारा मतलब ?

हिल्मा—[कमरे में प्रवेश करते हुए] किस लिये ? यह कि हमारे अमेरिका से आये दोनो दोस्त दीना दोर्फ को साथ लेकर सड़को पर खूब धूम मचा रहे है।

मिसेज़ बर्निक—[उसके पीछे कमरे मे आती हुई] हिल्मा, यह हो सकता है ?

हिल्मा—हाँ, दुर्भाग्य से यह बिल्कुल सच है। लोना के पास इतनी समझ भी नही थी कि वह मुझे भी अपने पास बुला रही थी, लेकिन मैंने ऐसा दिखलाया जैसे मैने सुना ही नहीं।

बर्निक—और इसमे शक नही, ऐसा हो नही सकता कि लोगो ने यह सब न देखा हो।

हिल्मा—हाँ, आप यह कह सकते है। लोग सन्न होकर खड़े हो जाते थे और उनकी ओर देखने लगते थे। सारे क़स्बे मे यह बात आंधी सी फैल गई। हर एक घर मे लोग खिड़कियो के पास खड़े थे इस जुलूस को उधर से निकलने के समय देखने के लिये, चिक की आड़ से, पर्दे की आड़ से उफ, ओह! क्षमा करना बेत्ती 'उफ' कहने के लिये, लेकिन इसका मेरे स्वास्थ्य पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ा है। अगर यही होता रहा, तो मै तो यहाँ से कही चले जाने का विचार करूंगा।

मिसेज़ बर्निक—लेकिन तुम्हे जान से कहना चाहिये था, उसे समझाना चाहिये था कि

हिल्मा—खुली सड़क पर ? क्षमा करो, पर यह तो मैं नही कर सकता। मै तो यह भी नही सोच सकता था कि वह पाजी कभी भी कस्बे मे मुँह दिखाने की हिम्मत करेगा। ख़ैर, देखा जायेगा अगर अख़बार वाले उसे दुरुस्त नही कर देते। क्षमा करना, बेत्ती! लेकिन हाँ

वर्निक—अखबार वाले आप कह रहे हैं ? क्या ऐसी कोई बात आपको कहीं मिली है ?

हिल्मा—ऐसी बातें चारों ओर उड़ रही हैं। जब यहाँ से मैं शाम को निकला, क्लब चला गया, क्योंकि तबीयत कुछ उदास मालूम हो रही थी। मेरे जाते ही जो एकाएक शान्ति छा गई, इससे मुझे पता चल गया कि उसी अमेरिकन जोड़ी की बात-चीत चल रही थी। तब वह बेशर्म अखबारों का सम्वाददाता हैमर आया और उसने मेरे धनी चचेरे भाई के लौटने पर मुझे ज़ोरो से बधाई दी।

वर्निक—धनी ?

हिल्मा—यह उसके शब्द थे। इसमे शक नही कि मै उसको ऊपर नीचे कई बार देखता रह गया, जिसका कि वह पात्र था और उसे पता चल गया कि मुझे जान त्वांसे के धनी होने की कोई बात नहीं मालूम है। "सचमुच" उसने कहा "यह तो बड़ी सीधी सी बात है। लोग अमेरिका कुछ लेकर जाते है जिसके बल पर कोई काम वहाँ प्रारम्भ कर सकें और मै समझता हूँ वहाँ आपके चचेरे भाई बिल्कुल खाली हाथ तो नही गये होगे।"

वर्निक—हूँ, तो अब आप कृपाकर

मिसेज वर्निक—[घबराकर] देखते हो कारस्ते

हिल्मा—खैर, उनके कारण रात भर मुझे नींद नही आई। और यहाँ वह सड़को पर घूम रहा है जैसे कोई बात ही न हो। वह अपनी भलाई के लिये हमेशा के लिये छिप क्यो नही जाता ? सचमुच कुछ लोगो को मौत भी नहीं आती।

मिसेज वर्निक—प्रिय हिल्मा ! क्या कह रहे हो ?

हिल्मा—कुछ नही, लेकिन यहां तो यह आदमी रेलवे की

दुर्घटना से भी वाल बाल वच जाता है और कैलीफोर्निया के रीछों से और काले पैर वाले हबशियो से लड़ता है लेकिन इसे कही खरोंच भी नही आती। ओह! ये आ रहे है।

बर्निक—[सडक की ओर देखते हुए] ओलाफ भी उनके साथ है।

हिल्मा—है तो। वे हर एक आदमी को बतला देना चाहते हैं कि उनका सम्वन्ध कस्बे के सब से बड़े घराने से है। वह देखिये, वह कमीनो का गुट जो उस डाक्टर की दूकान की ओर से आकर उनकी ओर देख रहा है, व्यंग कर रहा है। मेरा शरीर तो यह सब नही सह सकेगा। ऐसी परिस्थिति मे मनुष्य आदर्श का झण्डा कैसे ऊपर रख सकता है ? मैं

बर्निक—वे यही आ रहे है । सुनो बेत्ती ! यह मेरी विशेष इच्छा है कि तुम उन सब का स्वागत जहाँ तक सम्भव हो सके स्नेह के साथ करना।

मिसेज़ बर्निक—ओह, क्या मै ऐसा कर सकती हूँ, कारस्तें ?

बर्निक—अवश्य, अवश्य, और तुम भी हिल्मा! ऐसी आशा है वे यहाँ अधिक दिन नही ठहरेंगे। और जब हम लोग एकान्त मे भी हो तब भी पिछली बातो का कोई जिक्र न होना चाहिए। हमे उनके दिल को किसी भी तरह चोट नही पहुँचानी चाहिये।

मिसेज़ बर्निक—तुम कितने महान हो कारस्तें।

बर्निक—अरे! यह न कहो।

मिसेज़ बर्निक—लेकिन मुझे धन्यवाद तो देने दो। और मुझे मेरे उतावलेपन के लिए क्षमा करो। मैं जानती हूँ कि तुमने जो कुछ कहा था उसके लिए तुम्हारे पास कारण था

बर्निक—कृपया अब इस बारे में कुछ न कहो जी।

हिल्मा—ऊफ़ !

[जान त्वासे और दीना बगीचे की ओर से आते हैं। उन दोनों के पीछे पीछे चल रहे हैं ओलाफ और लोना]

लोना—सप्रेम अभिवादन।

जान—हम लोग पुरानी जगहो को एक बार फिर देखने के लिये गये थे कारस्ते !

वर्निक—मालूम है। बहुत परिवर्तन हो गया है न ?

लोना—सर्वत्र महाशय वर्निक की कीर्ति। सभी जगह अच्छे और उपयोगी काम। कस्बे के लिये आपने जो दिल बहलाव की जगहे बनवायी है, वहाँ तक हम लोग गये थे।

वर्निक—वहाँ तक गये थे ?

लोना—" कारस्तेन वर्निक का दान " जैसा कि फाटक पर लिखा है। यहाँ की सभी चीजे आप ही की देन है।

जान—बड़े बड़े जहाज भी आप के पास है। अभी मै अपने पुराने सहपाठी से मिला था "पाम ट्री" के कैप्टेन से।

लोना—और आपने नये स्कूल के लिये मकान भी बनवाया है। और सुना है कि गैस और पानी की कल के लिए भी कस्बा आपका ही कृतज्ञ है।

वर्निक—जिस समाज मे मनुष्य रहे उसकी भलाई के लिये उके काम करना ही चाहिये।

लोना—जीजा ! यह सुन्दर भावना है। लेकिन साथ ही साथ लोग आपकी प्रशसा भी कितनी कर रहे है, यह देखना भी बड़े आनन्द की बात है। मै समझती हूँ मेरे स्वभाव में अभिमान नहीं है, लेकिन फिर भी एक या दो आदमियो से जिन से

बाते हुई, मैं यह कहना रोक नही सकी कि हम लोग आपके सम्बन्धी हैं।

हिल्मा—उफ

लोना—इसके लिये तुम 'उफ' कह रहे हो ?

हिल्मा—नही, मैने 'हूॅ' कहा था।

लोना—तुम अनाड़ी लड़के चाहो तो यह भी कह सकते हो। लेकिन आज सिर्फ तुम्हीं लोग हो ?

वर्निक—हॉ, सिर्फ हमी लोग है।

लोना—हॉ, तुम्हारे सदाचार संघ के सदस्यो की एक जोड़ी मुझे बाजार मे मिली थी। उन्होंने ऐसा दिखलाना चाहा जैसे कि वे कार्य मे बहुत व्यस्त हो। अभी तक हम लोगो को खुल कर बातें करने का मौका नही मिला। कल तो आपकी तीन मुखिया यहॉ थी और वह पादरी ..

हिल्मा—स्कूल के अध्यापक।

लोना—मै तो उसे पादरी कहती हूॅ। लेकिन यह तो कहो मेरे इधर पन्द्रह वर्ष के काम के बारे मे, कैसा रहा ? यह अब भद्र नही हो गया है ? कौन इस पागल को पहचान सकता है जो कि घर से भाग गया था ?

हिल्मा—हूॅ।

जान—लोना ! मेरे बारे मे बहुत शेखी न बघारो।

लोना—मैं तुम से कह सकती हूॅ कि इसके लिये मुझे बड़ा गर्व है। सच कहती हूॅ केवल इसी बात मे मैने अपने जीवन मे गर्व अनुभव किया है, लेकिन यह मुझे जीने के लिये एक तरह का अधिकार प्रदान करता है। जब मैं सोचती हूॅ जान ! कि

हम दोनो ने वहाँ विना किसी साधन के खाली हाथ कैसे शुरू किया, कुछ भी नही, अपनी नंगी चार मुट्ठियो के साथ

हिल्मा—हाथ ।

लोना—मैं मुट्ठी कह रही हूँ और वे गन्दी मुट्ठियाँ थीं।

हिल्मा—उफ ।

लोना—और खाली भी।

हिल्मा—खाली ? तो फिर मुझे कहना होगा...

लोना—तुम्हे क्या कहना होगा ?

वर्निक—उहँ ।

हिल्मा—मुझे कहना होगा उफ [वगीचे से बाहर निकल जाता है ।]

लोना—क्या हो गया है इस आदमी को ?

वर्निक—ओह, उसका कोई ख्याल न करो, उसका स्नायु जाल इस समय उलट पलट गया है । वगीचे को देखना नहीं चाहती ? अभी वहाँ नही गई हो, और मैं एक घंटा इस समय दे भी सकता हूँ ।

लोना—सहर्ष । मैं कह दूँ तुमसे कि मैंने इस वगीचे मे तुम्हें न मालूम कितनी वार कल्पना मे देखा है ।

मिसेज वर्निक—तुम देखोगी हम लोगो ने उसमे वहुत सी बातें वदल भी दी हैं ।

[वर्निक, मिसेज वर्निक और लोना वगीचे मे चले जाते हैं, जहाँ कि वे इस दृश्य में रह रह कर देख पड़ते हैं ।]

ओलाफ—[वरामदे के दरवाजे पर आकर] हिल्मा मामा !

जानते हो जान मामा ने मुझसे क्या कहा ? उन्होंने कहा कि क्या मैं उनके साथ अमेरिका जाना चाहूंगा ?

हिल्मा—तुम ? तुम गधे, जो कि हमेशा उस डोरी मे बँधे रहते हो जो तुम्हारी मां के हाथ में रहती है ?

ओलाफ—लेकिन मैं ऐसा बहुत दिन नहीं रहूँगा। तुम देखोगे जब मैं बड़ा हो जाऊँगा

हिल्मा—ओ, लचकती छड़ी, जिस चरित्र बल की जरूरत है, उसकी ओर तुम्हारा कोई ठीक झुकाव नही देख पड़ता।

[वे बगीचे मे चले जाते हैं। दीना इस बीच मे अपना हैट उतार कर दाये दरवाजे पर खडी है और अपने कपडो की धूल झाड रही है।]

जान—[दीना से] टहलने से तुम मे कुछ जान आ गई है।

दीना—बड़ा सुन्दर टहलना रहा। इतना अच्छा टहलना कभी नही मिला था।

जान—तुम बराबर सबेरे टहलने नही जातीं ?

दीना—हाँ, जाती तो हूँ लेकिन केवल ओलाफ के साथ।

जान—समझा, यहाँ रहने की अपेक्षा बगीचे मे नहीं चली जाओगी ?

दीना—नहीं, मैं यही रहूँगी।

जान—मै भी यही रहूंगा। तो क्या हम लोग इसे एक समझौता समझेंगे, आजही की तरह रोज़ सबेरे घूमने जाना ?

दीना—नही, मिस्टर त्वांसे! यह न करना।

जान—क्या न करना ? तुमने प्रतिज्ञा की है, तुम्हे मालूम है ?

दीना—हाँ, लेकिन फिर विचार करने पर, आपको मेरे साथ बाहर नही जाना चाहिये।

जान—लेकिन । क्यो नहीं ?

दीना—सच है, आप विदेशी है, आप नही समझ सकते। ।किन मै कह दूँ ?

जान—अच्छा ।

दीना—नहीं, मै इस वारे मे कुछ नही कहना चाहती ।

जान—लेकिन तुम्हे जरूर कहना होगा, तुम मुझसे जो कुछ ाहो कह सकती हो ।

दीना—अच्छा, मुझे आप से कह देना ।चाहिये कि मैं यहाँ ी और लड़कियो की तरह नहीं हूँ । कोई वात है इसमे, कोई । कोई वात मेरे वारे मे । इसी लिये आप को मेरे साथ नही घूमना ाहिए ।

जान—लेकिन मैं तो यह कुछ समझ नही सका । तुमने कोई ालती तो नहीं की ?

दीना—नहीं, मैंने तो नही, लेकिन नहीं अव इस वारे मे मै कुछ नहीं कह सकती । निश्चय है दूसरों से आप वहुत कुछ सुन लेगे ।

जान—हूँ ।

दीना—लेकिन एक वात और है जो मै आपसे जान लेना चाहती हूँ ।

जान—क्या है वह ?

दीना—अमेरिका मे अपने लिये जगह वना लेना आसान है मैं अनुमान करती हूँ ।

जान—नहीं, हमेशा आसान तो नही है । शुरू मे तो वड़ी तकलीफ पडती है और वड़ा काम करना पड़ता है ।

दीना—मैं यह करने को तैयार रहूँगी।

जान—तुम ?

दीना—मैं अब काम कर सकती हूँ, मै मजबूत हूँ और स्वस्थ भी और बुआ मर्था ने मुझे बहुत कुछ सिखला भी दिया है।

जान—अच्छा, तो इसे रहने दो, हम लोगो के साथ अमेरिका चलो।

दीना—ओह ! तो आप मेरा मजाक बना रहे हैं। आपने यही ओलाफ से भी कहा। लेकिन मै यह जानना चाहती थी कि क्या वहाँ के आदमी भी इतने अधिक—इतने अधिक सदाचारी हैं।

जान—सदाचारी ?

दीना—हाँ, मेरा मतलब है कि क्या वे इतने ..इतने ठीक और इतने सुसंस्कृत हैं जैसे कि यहाँ के लोग ?

जान—अजी किसी भी हालत मे वे इतने बुरे नही हैं जितना कि यहाँ के लोग कहा करते है। इस बात के लिये तुम्हे डरना नही चाहिये।

दीना—आपने मुझे समझा नही। मैं यही सुनना चाहती हूँ कि वे इतने ठीक और इतने सदाचारी नही है।

जान—नही ? तब तुम उन्हें कैसा होना पसन्द करोगी ?

दीना—मैं उन्हे स्वाभाविक होना पसन्द करूँगी।

जान—तब मुझे विश्वास है वे वैसे ही है।

दीना—क्यो कि उस हालत मे अगर मै वहाँ जाऊँ तो मै सुख से रह सकूँगी।

जान—तुम सुख से रहोगी, निश्चय है, और इसी लिये तुम्हे हम लोगो के साथ अवश्य चलना चाहिये।

दीना—नहीं, मैं आपके साथ नहीं चलना चाहती। मैं अकेले जाऊँगी। मैं अपने जीवन का कुछ बनाऊँगी, मैं बढ़ती रहूँगी...

वर्निक—[लोना और अपनी स्त्री से बगीचे की सीढ़ी पर बातें करते हुए] थोड़ी देर ठहरो—मैं ला दूँगा बेत्ती! प्यारी, तुम्हें सर्दी लग जायगी। [कमरे में आता है और अपनी स्त्री का शाल खोजने लगता है।]

मिसेज़ वर्निक—[बाहर से] तुम भी बाहर आओ, जान! हम लोग बाहर जा रहे हैं।

वर्निक—नहीं, मैं चाहता हूँ जान यहीं रहे। इधर सुनो दीना, मेरी स्त्री का शाल लेकर उन लोगों के साथ जाओ। जान मेरे साथ यहाँ रहेंगे बेत्ती प्यारी। मैं जानना चाहता हूँ कि ये वहाँ कैसे रह रहे हैं।

मिसेज वर्निक—अच्छी बात है। फिर तुम भी हम लोगों के पीछे आओगे न? समझे न कहाँ मिलेंगे? [मिसेज वर्निक, लोना और दीना बाईं ओर से बगीचे के बाहर निकल जाती हैं। वर्निक थोड़ी देर उनकी ओर देखता रहता है और तब बाईं ओर के दरवाजे तक जाकर उसे बन्द करता है। इसके बाद जान के पास पहुँच कर उसके दोनों हाथ पकड़ लेता है और प्रेम से उन्हें हिलाने लगता है।]

वर्निक—जान, अब हम लोग अकेले हैं अब तुम मुझे धन्यवाद देने दो।

जान—क्या व्यर्थ की बातें करते हो?

वर्निक—मेरा घर बार, मेरा सारा आराम और चैन, यहाँ तक कि नागरिक की दृष्टि से मेरी हैसियत, यह सब तुम्हारी कृपा है। इसके लिये मैं तुम्हारा ऋणी हूँ।

जान—अच्छा तो मुझे इसकी खुशी है कारस्तेन ! तो उस झूठे अपवाद से कुछ भलाई हो गई ?

बर्निक—[उसके हाथ फिर पकड़ कर] लेकिन फिर भी मुझे धन्यवाद तो देने दो। तुमने तो मेरे लिये जो किया दस हज़ार मे एक भी वैसा न कर सका होता।

जान—व्यर्थ की बातें ! क्या हम दोनो अल्पवयस्क और विचारहीन नही थे ? किसी न किसी को तो कलंक लेना था। तुम जानते हो

बर्निक—लेकिन अपराधी को कलंक उठाना चाहिये था।

जान—चुप रहो। उस समय निरपराध इसके लिये सबसे उपयुक्त हो उठा। याद करो, मेरे लिये कोई बन्धन नही था। मै निस्सहाय था। आफिस के झंझटो से छुट्टी पाने के लिये वह सौभाग्य का अवसर था। दूसरी ओर तुम्हारी बूढ़ी मां अभी जी रही थी, और इसके अतिरिक्त छिपे तौर पर बेत्ती से तुम्हारा संबंध भी तै होगया था, जो तुमको हृदय से प्रेम करती थी। यह अगर उसे मालूम होजाता तो तुम्हारे और उसके बीच क्या होता ?

बर्निक—यह तो सच है लेकिन तब भी

जान—और क्या बेत्ती के लिये ही तुमने मिसेज़ दोर्फ से अपना सम्बन्ध नही तोड़ लिया ? उस दिन शाम को तुम उसके पास सब मामले का ख़ातमा करने ही को तो गए थे।

बर्निक—हॉ, उस अभागी शाम को जब वह पियक्कड़ घर आया। हॉ जान, बेत्ती के लिये, लेकिन साथ ही साथ यह तुम्हारी महानता थी, अपने को बदनाम हो जाने देना और निकल भागना।

जान—प्यारे कारस्तेन ! अपनी कृतज्ञता को विश्राम करने दो।

हम लोगों मे यही तै हुआ था। तुम्हारी रक्षा करनी थी और तुम मेरे मित्र थे। मैं तुमसे कहूँ—उस मित्रता का मुझे असाधारण गर्व था। यहां मैं कीचड़ मे फॅसी छड़ी की तरह अपने को घसीट रहा था, जब तुम अपने प्रसिद्ध देशाटन से लौटे। तुम्हारा चारों ओर शोर था, तुम लन्दन और पेरिस देख कर लौटे थे। और तुमने मुझे अपना साथी बनाया, मैं जो कि तुमसे चार वर्ष छोटा था। यह सच है कि इसका कारण यह था कि तुम बेत्ती से प्रेम करते थे, मै अब यह समझता हूँ। लेकिन मुझे इसका गर्व था। किसे न होता? उसके लिये कौन खुशी से बलिदान न करता? विशेषत: जब कि इसका फल होता कस्बे मे एक महीने की चर्चा और मुझे विस्तृत संसार मे प्रवेश करने की स्वतंत्रता।

वर्निक—प्यारे जान! मुझे स्पष्ट होना चाहिये और कहना चाहिये कि वह बात कस्बे मे अब भी नहीं भूली।

जान—अब तक नही? खैर मुझसे क्या मतलब, जब मैं एक बार फिर वहाॅ लौट कर अपने काम पर चला जाऊँगा?

वर्निक—तो तुम लौट जाना चाहते हो?

जान—अवश्य।

वर्निक—लेकिन जल्दी तो नहीं, मैं समझता हूँ।

जान—जितना जल्दी हो सके। केवल लोना के मनबहलाव के लिये मैं यहाँ आया—जानते हो न?

वर्निक—सचमुच? कैसे?

जान—लोना अब लड़की नहीं है और बहुत दिनों से वह घर के लिए घबराने लगी। लेकिन वह कभी यह बात मानेगी नहीं। [मुस्कराता है] मेरे ऐसे अस्थिर व्यक्ति को वह अकेला कैसे छोड़ सकती थी, जो कि जब उन्नीस का भी नहीं हुआ था तभी बदनामी कमा चुका था?

बर्निक – ख़ैर, तब ?

जान—कारस्तेन ! मै अब एक ऐसी बात स्वीकार करने जा रहा हूँ जिस की मुझे लज्जा है ।

बर्निक—क्या तुमने उसे असली बात बता दी ?

जान—हॉ, यह मेरी गलती थी, लेकिन मै और कुछ कर ही नही सकता था । तुम्हे पता नही लोना ने मेरे लिये क्या क्या किया है । उसके साथ तुम कभी न रह सकते, लेकिन वह मेरे लिये तो मां रही है । पहले साल जब हम लोग वहां गये, जब सभी बाते हम लोगो के प्रतिकूल होती रही, तुम जानते नहीं उसने कितना परिश्रम किया । और जब मै बहुत दिनों के लिये बीमार पड़ गया, और कुछ कमा नही सका और उसे रोक भी नही सका, वह मंच पर गाने का काम करने लगी । उसने व्याख्यान दिये जिन्हे सुन कर लोग हॅसते थे और उसने एक किताब लिखी जिसे देख देख कर वह हॅस भी लेती है और रो भी लेती है । यह सब किया उसने मुझे जीवित रखने के लिए । मै कैसे अवहेलना कर सकता था जब वह जिसने मेरे लिये यह सब किया था रोज़ कमज़ोर होती जा रही थी ? नही कारस्तेन ! मैं अवहेलना नही कर सका । और इस लिये मैने कहा "तुम एक बार देश हो आओ लोना—मेरे लिये न डरो, मै ऐसा अस्थिर नहीं हूँ जैसा तुम समझती हो ।" और इसका परिणाम यह हुआ कि मुझे उसे सारी बात बतला देना पड़ी ।

बर्निक—और उस पर इसका क्या असर पड़ा ?

जान—उसने सोचा, जो कि सच भी था, कि जब मै जानता हूँ कि मै निर्दोष हूँ, तब उसके साथ यहॉ आने मे मेरे लिये कोई बाधा नही है । लेकिन परेशान न होना । लोना कुछ

नही कहेगी और मै तो अपना मुह बन्द ही रखूँगा जैसा कि मै बराबर करता रहा हूँ।

वर्निक—हां, हां, मुझे इसका विश्वास है।

जान—हाथ मिलाओ। और अब हम लोग उस बीती बात की चर्चा नहीं करेंगे। भाग्य से यही एक अनुचित बात है, जिसके लिये कि हम दोनो मे से कोई न कोई अपराधी है। मुझे विश्वास है कि हम दोनों मे से किसी ने और कोई अनुचित कार्य नहीं किया है। जो दो चार दिन मै यहॉ रहूँ चैन से रहना चाहता हूँ। तुम नही जानते आज सबेरे का हम लोगो का घूमना कितना मजे का रहा। मैने तो इस बात की कल्पना भी न की थी कि जो बच्ची रंग मंच पर इधर उधर भागी फिरती थी, वह अब ऐसी.. लेकिन प्यारे भाई, यह तो कहो उसके मा बाप पीछे क्या हुए?

वर्निक—आह! प्रिय बन्धु! मैने तुम्हारे निकल भागने के साथ ही तुम्हे जो लिखा था उससे अधिक कुछ नही बता सकता। क्यो, मेरे दो पत्र तुम्हे मिले थे न?

जान—हाँ, दोनो मेरे पास हैं। तो उस पियक्कड़ ने उसे असहाय छोड़ दिया?

वर्निक—और खुद नशा करते करते मर गया।

जान—और वह भी थोड़े ही दिनों पीछे मर गई?

वर्निक—वह मानिनी थी, उसने न कोई भेद खोला और न कभी कुछ मांगा।

जान—खैर, जो भी हो, तुमने दीना को अपने घर मे रख कर अच्छा किया।

बर्निक—मै भी यही समझता हूँ। लेकिन वास्तव मे मर्था ने यह सब किया।

जान—अच्छा मर्था ने ? लेकिन आज है कहाँ वह ?

बर्निक—वह ? जब उसे स्कूल की चिन्ता नही रहती है तब वह बीमारो की देख रेख मे लगी रहती है।

जान—तो मर्था ने उसकी ओर ध्यान दिया ?

बर्निक—हाँ, जानते हो मर्था को सदा से पढ़ाने का शौक रहा है, इसीलिये उसने बोर्ड के स्कूल मे नौकरी कर ली। यह उसके लिये हास्यास्पद बात थी।

जान—मुझे तो जैसे वह कल बड़ी परेशान देख पड़ी। मुझे आशंका है उसका स्वास्थ्य इसके लिये ठीक नही है।

बर्निक—जहाँ तक उसके स्वास्थ्य की बात है, वह तो बिल्कुल ठीक है। लेकिन मेरे लिये यह बुराई की बात है। इसका मतलब यह होता है कि मैं, उसका भाई, उसकी सहायता करना नही चाहता।

जान—उसकी सहायता करना ? मैंने तो समझा था कि उसके पास अपना काफी रुपया है।

बर्निक—एक पैसा भी नही। निस्सन्देह तुम जानते हो कि जिस समय तुम गये थे हमारी मां कितनी बुरी हालत मे थीं। कुछ समय तक तो मेरी सहायता से वह काम चलाती गई, लेकिन स्वभावतः मैं उस स्थिति को अधिक समय तक सहन नहीं कर सकता था। इसलिये मैंने उसके साथ अपने को भी फर्म मे शामिल कर लिया, लेकिन तब भी हालत नही सुधरी। इसलिये सारा कारबार मुझे अपने कन्धे पर उठाना पड़ा और जब हम लोगों ने हिसाब किया, तो साफ मालूम हो गया कि मेरी मां का

हिस्सा उसमे कुछ भी नहीं बचा था। और जब मा थोड़े दिन बाद मर गई तो साफ है कि मर्था के पास एक पैसा भी नहीं था।

जान—अभागिनी मर्था।

बनिक—अभागिनी? क्यों? आप यह तो नहीं समझते कि मैं उसे किसी चीज़ की तकलीफ होने देता हूँ? नहीं, मैं साहस के साथ कह सकता हूँ कि मैं उदार भाई हूँ। हम लोगो के साथ वह घर मे रहती है। उसका वेतन इतना काफी हो जाता है कि उसके कपडो का काम चल सके। और उसे चाहिये क्या?

जान—हूँ, अमेरिका मे हम लोगो के विचार इस तरह के नहीं हैं।

बनिक—नहीं, मै साहस से कह सकता हू कि उस क्रान्तिकारी समाज मे जैसा कि आपको वहा मिला है, ऐसे विचार नही हैं। लेकिन हमारी संकीर्ण परिधि मे, ईश्वर को धन्यवाद है, जिसमें तंगदिली को अभी जगह नहीं मिली है, अब तक किसी न किसी हालत में स्त्रियां अपनी साधारण और विनम्र स्थिति से संतुष्ट हैं। और वास्तव मे तो मर्था का स्वयं दोष है, मेरा मतलब यह कि उसकी सहायता स्वयं होगई होती पहले ही से, अगर वह चाहती।

जान—तुम्हारा मतलब यह है कि अगर उसने शादी कर ली होती?

बनिक—हाँ, और शादी भी अच्छी हुई होती। उसको कई अच्छे से अच्छे अवसर मिले, आश्चर्य की बात तो यह है, यद्यपि तुम समझते हो कि वह दरिद्र लड़की है, अब जवान भी नहीं, और इसके अतिरिक्त बिल्कुल साधारण व्यक्ति है।

जान—साधारण?

बर्निक—अरे, इसके लिये मैं उसे दोष नही देता। और मै स्वयं भी उसका विवाह कर लेना बहुत पसन्द न करता। मै तुम्हे बता दूॅ, ऐसे बड़े घर मे उस जैसे धैर्यवान व्यक्ति की ज़रूरत रहती है—किसी ऐसे व्यक्ति की जिसपर किसी ऐसे-वैसे मौके पर विश्वास किया जा सके।

जान—हाॅ, लेकिन उसका समय कैसा कटता है ?

बर्निक—वह कैसे ? अजी उसके लिये बहुत से काम है तबियत लगने के लिये, उसके लिये वेत्ती है, ओलाफ है, मै हूॅ। लोगो को सबसे पहले अपनी ही चिन्ता नही करनी चाहिये. और स्त्री को तो और भी नही। हम सभी लोगो के लिये अपना समाज है, छोटा या बड़ा, जिसके लिये परिश्रम किया जाय। प्रत्येक अवसर पर यह मेरा सिद्धान्त रहता है। [क्राप की ओर सकेत करता है जो कि दाई ओर से भीतर आया है।] इसका एक ठीक उदाहरण यह है, बिल्कुल सामने और स्पष्ट। तुम समझते हो कि मै अपने ही झंझटो मे बेतरह फॅसा हूँ इस समय। बिल्कुल नही। [क्राप से उत्सुकता से] कहो ?

क्राप—[धीरे से उसे कागज़ों का पुलिन्दा दिखलाते हुए] सभी हिस्से बिक चुके।

बर्निक—वाह ! क्या खूब ! जान ! इस समय तो मुझे क्षमा करो। [धीरे से उसका हाथ पकडकर] धन्यवाद जान ! धन्यवाद और विश्वास करो कि जो कुछ मै तुम्हारे लिये कर सकूॅगा क्यो शायद तुम समझते होगे। चलो क्राप। [दोनों बर्निक के कमरे में चले जाते है।]

जान—[थोडी देर उनकी ओर देखता हुआ] हूॅ ! [बगीचे में जाना चाहता है, उसी समय दाहिनी ओर से मर्था प्रवेश करती है, छोटी सी टोकरी लिए हुए] मर्था !

मर्था—ऐं ! जान ! तुम हो ?

जान—इतने सबेरे बाहर

मर्था—हाँ, थोड़ी देर ठहरो ! और सब भी आरहे हैं अभी।
[बाईं ओर के दरवाजे की ओर जाती है।]

जान—मर्था ! तुम हमेशा इतनी परेशान रहती हो ?

मर्था—मैं ?

जान—कल जैसे तुम मुझसे छुटकारा पाना चाहती थीं। इस कारण मैं तुमसे कुछ भी नहीं कह सका। हम दोनो पुराने खेल-कूद के साथी हैं।

मर्था—हाँ, जान ! न मालूम कितने वर्ष पहले।

जान—हे ईश्वर ! अभी तो पन्द्रह वर्ष बीते हैं, न तो ज्यादा न कम। तुम समझती हो मै बहुत बदल गया ?

मर्था—तुम ? हाँ तुम भी बदल गये हो, गो कि

जान—क्या मतलब ?

मर्था—कुछ नहीं।

जान—मुझसे फिर मिलने में शायद तुम्हे कोई प्रसन्नता नहीं है ?

मर्था—मैंने बहुत दिन तक प्रतीक्षा की है जान ! बहुत दिन तक। लेकिन अब

जान—प्रतीक्षा ? मेरे आने की ?

मर्था—हाँ।

जान—और तुमने यही क्यो सोचा कि मै आऊँगा ?

मर्था—तुमने जो गलती की है, उसका प्रायश्चित्त करने के लिये।

जान—मैंने ?

मर्था—भूल गये कि तुम्हारे ही कारण एक स्त्री लज्जा और अभाव के मारे मरी ? भूल गये कि तुम्हारे ही कारण एक लड़की के सब से सुन्दर वर्ष ग्लानि मे बीते ?

जान—और ऐसी बात तुम मुझसे कह सकती हो मर्था ! क्या तुम्हारे भाई ने कभी .

मर्था—कभी क्या ?

जान—क्या उसने ओ ! मेरा मतलब यह है कि उसने मेरे पक्ष मे कभी दो शब्द नही कहे ?

मर्था—जान, तुम कारस्तेन के उच्च सिद्धान्तो को जानते हो।

जान—हूँ ! ठीक है, मैं अपने पुराने मित्र कारस्तेन के महान सिद्धान्तो को जानता हूँ। लेकिन वास्तव मे यह खैर, खैर, अभी मेरी उनसे बाते हो रही थी। मुझे तो वे बहुत बदल गये से मालूम होते है।

मर्था—यह तुम कैसे कह सकते हो ? मै खूब जानती हूँ कार-स्तेन बराबर आदर्श व्यक्ति रहे है।

जान—हाँ, मेरे कहने का मतलब यह तो नहीं था। खैर, जाने दो। अब मै समझता हूँ कि तुम मुझे जिस रूप मे देखती रही हो उसके अनुसार तुम एक धूर्त के लौटने की प्रतीक्षा कर रही थी ?

मर्था—सुनो, मैंने तुम्हे किस रूप मे देखा है। [बगीचे की ओर सकेत करती है] उस लड़की को देख रहे हो जो घास पर ओलाफ के साथ खेल रही है ? वह दीना है। तुम्हे याद है वह बेहूदगी का पत्र जो तुमने भागते समय मुझे लिखा था ? तुमने मुझे तुम पर विश्वास रखने को लिखा था। मैने तुममे विश्वास किया है जान ! जो जो भयंकर बाते तुम्हारे बारे मे यहाँ तुम्हारे चले जाने के

बाद फैली थीं—ग़लत रास्ते पर चले जाने से, विचारहीनता से या पहले ही सोच न लेने से होगई होगी।

जान—तुम्हारा मतलब क्या है ?

मर्था—तुम मेरा मतलब अच्छी तरह समझते हो। इससे अधिक एक शब्द की भी आवश्यकता नही। लेकिन खैर तुम्हे बाहर जाना जरूरी था और एक नई जिन्दगी शुरू करनी थी। यहाँ के अपने जिन कर्तव्यो को तुमने कभी याद नही किया, या जिनको पूरा करने के लायक तुम थे नही, उनको मैंने पूरा किया है तुम्हारी खातिर। मै यह इसलिये कह देती हूँ कि तुम्हे कभी इस बात के लिये अपने पर क्षोभ न हो। मैं उस उत्पीड़ित लड़की की माँ बनी हूँ। जहाँ तक मुझसे हो सका है मैंने उसका पालन किया है।

जान—और इसके लिए तुमने अपना सारा जीवन बर्बाद कर दिया है।

मर्था—वह बर्बाद नही हुआ, लेकिन तुम बहुत देर करके आये जान।

जान—मर्था, अगर मै तुम से कह सकता। खैर, किसी भी दशा मे अपनी अटूट मित्रता के लिये मुझे धन्यवाद देने दो।

मर्था—[दुःख से मुस्करा कर] हूँ। क्यो अब तो हम लोगों ने एक दूसरे को समझ लिया जान! चुप रहो, कोई आ रहा है। विदा, अब मैं नहीं ठहर सकती। [बाई ओर के दरवाजे से निकल जाती है। लोना मिसेज बर्निक के साथ बगीचे से आती है।]

मिसेज़ बर्निक—लेकिन, लोना। कैसी बात सोच रही हो ?

लोना—नही, न रोको। तुमसे कह देती हूँ। अवश्य और ज़रूर उससे कहूँगी।

मिसेज़ बर्निक—लेकिन यह कितनी बड़ी बदनामी होगी? अरे जान! अभी यहीं हो?

लोना—बाहर जाओ, बाबू! यहाँ भीतर न बैठो। बगीचे में जाओ और दीना से कुछ बातें तो करो।

जान—मैं अभी यही सोच रहा था।

मिसेज़ बर्निक—लेकिन

लोना—इधर तो देखो। जान! तुमने कभी ध्यान से दीना को देखा है?

जान—मैं समझता हूँ

लोना—बाबू, उसे किसी मतलब से देखो! वह तुम्हारी कोई होगी।

मिसेज़ बर्निक—लेकिन लोना

जान—मेरी कोई?

लोना—हाँ, हाँ, देखो तो। जाओ जल्दी।

जान—अरे! मुझ पर किसी तरह का दबाव डालने की ज़रूरत नहीं है। [बगीचे में चला जाता है।]

मिसेज़ बर्निक—लोना! तुम मुझे चक्कर मे डाल देती हो। तुम शायद इस बात को गम्भीरता से नहीं कह रही हो?

लोना—क्यों नहीं? क्या वह सुन्दर, मधुर और ईमानदार नहीं है? जान के लिये वह योग्य स्त्री है। वह वही है जिसकी उसे वहाँ ज़रूरत है। यह रिश्ते की बहिन की जगह पर एक परिवर्तन का काम करेगी।

मिसेज़ बर्निक—दीना? दीना दोर्फ? लेकिन सोचो

लोना—मैं सब से पहले और सब से अधिक उस लड़के के

सुख की बात सोचती हूँ । क्योंकि उसकी सहायता तो मुझे करनी ही है । इन चीज़ों की उसे कोई जानकारी नहीं है । युवती के लिये या स्त्री के लिए उसके पास आँखें नही रही हैं ।

मिसेज बर्निक—जान के पास ? वास्तव मे मैं सोचती हूँ कि हम लोगो को इसके खिलाफ़ काफी बुरे उदाहरण मिले है ।

लोना—आह ! उन बेहूदी बातों को भाड़ मे जाने दो । कार-स्तेन कहां है ? मैं उससे बातें करूंगी ।

मिसेज बर्निक—लोना ! कह देती हूँ तुम्हे यह नहीं करना चाहिये ।

लोना—मैं करूँगी । अगर लड़का उस पर मोहित हो जाता है और वह उस पर, तब तो उनकी अच्छी जोड़ी बनेगी । कारस्तेन इतना चालाक है कि कोई न कोई रास्ता इसे पूरा करने के लिये वह निकाल लेगा ।

मिसेज़ बर्निक—और तुम समझती हो कि ये अमेरिकन गन्दी बातें यहाँ चल सकेंगी ?

लोना—चुप बेत्ती !

मिसेज़ बर्निक—तुम समझती हो कि कारस्तेन ऐसा आदमी, ऐसे कठोर नैतिक सिद्धांतों वाला आदमी

लोना—अजी, उसके नैतिक सिद्धांत इतने भयानक नहीं हैं ।

मिसेज बर्निक—तुम क्या कहने की धृष्टता कर रही हो ?

लोना—मुझे धृष्ट होकर कहना है कि कारस्तेन किसी भी दूसरे आदमी से बढ़ कर, कोई विशेष नैतिक विचार वाला नही है ।

मिसेज़ बर्निक—तो तुम अब भी उससे उतनी ही गहरी घृणा रखती हो । लेकिन अगर तुम उस बातको भूल नहीं सकीं तो फिर

यहाँ किस लिए आई हो ? मै नही समझती तुम्हे उसकी ओर देखने की हिम्मत कैसे होती है, जब तुमने उन दिनो उसका इतना घोर और लज्जास्पद अपमान किया था।

लोना—हाँ बेत्ती, उस समय मै बिल्कुल आपे से बाहर हो गई थी।

मिसेज़ बर्निक—और यह सोचो कि उसने तुम्हे कितनी महानता के साथ क्षमा कर दिया है, जिसने कि कोई अपराध नही किया। यह उसकी गलती नहीं थी, कि तुमने अपने दिल मे आशा का पहाड़ खड़ा किया। लेकिन तब से तुमने मुझसे भी घृणा की है। [रोने लगती है] तुम सदैव मेरे सौभाग्य से ईर्षा करती रही हो। और अब यहाँ यह सब मेरे सिर पर लादने के लिये आई हो, सारे कस्बे को बताने के लिये कि कैसे सम्बन्धियों के बीच मे मैंने कारस्तेन को पटक दिया है। हाँ, यह सब मेरे ऊपर पड़ता है, और यही तुम चाहती हो। ओह ! यह लज्जाजनक बात है। [रोती हुई बाई ओर के दरवाजे से बाहर निकल जाती है।]

लोना— [उसकी ओर देखती हुई] अभागिनी बेत्ती ! [बर्निक का अपने कमरे से प्रवेश। क्राप से कुछ कहने के लिये अपने दरवाजे पर खड़ा हो जाता है।]

बर्निक—हां, क्राप यह बहुत अच्छी बात रहेगी। गरीबो के भोजन के फंड मे २० पाउन्ड चन्दा भेज दो। (घूम कर) लोना ! क्या तुम अकेली हो ? क्या बेत्ती नही आ रही है ?

लोना—नही। क्या तुम चाहते हो कि मै उसे बुला लूं ?

बर्निक—नही, नही, बिलकुल नही। आह ! लोना ! तुम नहीं जानती तुमसे क्षमा मांगने और तुमसे सभी बातें साफ साफ कह देने के लिये मै कितना उत्सुक रहा हूँ।

लोना—सुनो कारस्तेन ! हम लोगो को भावुक नही होना चाहिये । यह हम लोगो को शोभा नहीं देता ।

बर्निक—मेरी भी सुनो लोना ! मै खूब जानता हूँ कि तुम्हारी धारणा मेरे प्रतिकूल है, क्योकि तुमने दीना की माँ सम्बन्धी वह सारी बात सुनी है । लेकिन मै तुमसे शपथ लेकर कहता हूँ कि वह सब एक तरह का उन्माद था । वास्तव मे तो मैं सचाई और ईमानदारी के साथ, कभी तुम्हारा प्रेमी था ।

लोना—तुम क्या समझते हो ? मै घर क्यो आई हूँ ?

बर्निक—तुम्हारे मन मे जो हो, मै तुमसे तब तक कुछ भी न करने के लिये प्रार्थना करता हूँ जब तक कि मैं अपने को मुक्त नही कर लेता । मैं वह कर सकता हूँ लोना ! किसी भी हालत में मैं अपने को अक्षम्य नहीं समझता ।

लोना—अब तुम डर गये हो । कभी तुम मुझसे प्रेम करते थे, कह रहे हो । हाँ, तुमने यह अपने पत्रो मे प्राय: कहा है, और शायद एक तरह से यह सच भी था, जब तक कि तुम महान और विस्तृत स्वतन्त्र संसार मे थे, बाहर, जिसने कि तुमको महानता और स्वतंत्रता के साथ सोचने का साहस दिया था । शायद तुमको मेरे भीतर यहाँ देश के और लोगों की बनिस्वत कुछ अधिक चरित्र बल और स्वतन्त्रता की झलक मिली थी । और जब हम दोनो इस बात को अपने तक छिपाये रहे, तुम यह भी जानते थे कि कोई तुम्हारी कुरुचि का मजाक नही उड़ा सकता ।

बर्निक—लोना ! तुम कैसे सोचती हो ?

लोना—लेकिन जब तुम लौट कर घर आये, जब तुमने मेरे विरुद्ध सब और बातें सुनी, जब तुमने देखा कि लोग मेरी जिन बातो को वे बेवकूफी समझते थे उनकी कैसी दिल्लगी उड़ाते थे ..

वर्निक—तुम उस समय लोगो के विचार का कोई ख़्याल नहीं करती थीं।

लोना—विशेषतः उन ढोंगियों को चिढ़ाने के लिये जो कस्बे के हर मोड़ पर मिला करते थे। और तब, जब तुम उस मायाविनी युवती अभिनेत्री से मिले ..

वर्निक—यह तो लड़कपन का खेल था और कुछ नही, मैं तुमसे शपथ लेकर कहता हूँ कि जितनी कानाफूसी हुई इधर उधर, उसका दशमांश भी सच नही था।

लोना—हो सकता है। लेकिन तब जब बेत्ती घर आई—सुन्दर युवती, हर एक जिसके मोह मे पड़ जाता था, और यह मालूम हो गया कि उसे उसकी चाची की सारी सम्पत्ति मिलेगी और यह कि मुझे कुछ नही मिलेगा

वर्निक—यही तो असल बात है लोना ! और अब तुम्हे सच बात मालूम हो जायगी, बिना इधर-उधर भटकने के, तब मैं बेत्ती को प्रेम नही करता था। मैंने तुमसे सम्बन्ध किसी नये आकर्षण के लिये नहीं तोड़ दिया। यह तो केवल रुपये के लिये हुआ। मुझे उसकी जरूरत थी।

लोना—और तुम्हारा मुँह मुझसे यह कहने का होता है ?

बर्निक—हाँ, सुनो लोना !

लोना—और इतने पर भी तुमने मुझे लिखा कि बेत्ती की ओर प्रेम वासना ने तुम्हे बेकाबू कर लिया है। मेरी महानता को जगाया तुमने, मुझसे भिक्षा मांगी, बेत्ती की खातिर अपनी जबान बन्द रखने के लिये, जो कुछ भी हम दोनो के बीच मे हुआ था उसके बारे मे।

बर्निक—मुझे यह करना पड़ा।

लोना—अब ईश्वर की शपथ मुझे इस बात का कुछ भी पश्चात्ताप नहीं है कि मैं उस समय आपे से बाहर हो उठी थी।

वर्निक—मेरी उस समय क्या दशा थी मैं तुमसे साफ साफ कह दूँ। मेरी माँ तुम्हे मालूम है रोजगार की मालिक थी, लेकिन कोई भी व्यवसाय करने की शक्ति उसमे नहीं थी। मैं पेरिस से घर जल्दी बुलाया गया। परिस्थिति नाजुक थी, और लोगो ने मेरा विश्वास किया कि मैं सब कुछ ठीक कर दूँगा। मुझे मिला क्या? मुझे मिला—और तुम्हे इसे बिलकुल गुप्त रखना होगा—एक परिवार सर्वनाश के किनारे। हाँ उसी दशा मे जैसे कि सर्वनाश के किनारे, एक पुराना प्रतिष्ठित फर्म जिसमे हमारी तीन पीढ़ियाँ बीत चुकी थी। मै अपने घर का एकलौता लड़का, सिवा इसके क्या करता कि कोई न कोई उपाय इसे बचाने के लिये निकालता?

लोना—और इसलिये तुमने एक स्त्री का बलिदान कर बर्निक का घराना बचाया।

बर्निक—तुम खूब जानती हो कि बेत्ती मुझे प्रेम करती थी।

लोना—लेकिन मेरे बारे मे?

बर्निक—विश्वास करो लोना! तुम मेरे साथ कभी सुखी न रहती।

लोना—क्या तुमने मेरे सुख का विचार कर के मेरा बलि-दान किया?

बनिक—तो क्या तुम समझती हो कि मैंने केवल स्वार्थ के लिये यह सब किया? अगर मैं अकेला खड़ा हुआ होता तो मैं फिर प्रारम्भ से चलता—प्रसन्नता और साहस के साथ। लेकिन तुम नहीं समझती कि किसी व्यवसायी आदमी की जिन्दगी,

उसकी एक के बाद एक जिम्मेदारियाँ उस व्यवसाय के साथ बँधी रहती हैं, जो उसे पूर्वजो से मिलता है। तुम यह नही सोचती कि सैकड़ो की उन्नति या अवनति, हजारो की, उसी पर निर्भर रहती है। तुम इस तथ्य का विचार नही करोगी कि उस समाज की, जिसमे हम तुम दोनो पैदा हुए थे, कितनी भारी हानि होती अगर वर्निक का घराना चौपट हो जाता तो ?

लोना—तो समाज के लिये तुमने इन पन्द्रह वर्षों से असत्य के आधार पर अपनी स्थिति कायम रक्खी है ?

वर्निक—असत्य के आधार पर ?

लोना—बेत्ती उन सब बातो के बारे मे क्या जानती है, जो तुम्हारे और उसके संयोग की तह मे हैं ?

वर्निक—तो तुम चाहती हो कि बेमतलब इन सब बातो को खोल कर मै उसके हृदय को चोट पहुँचाऊँ ?

लोना—बेमतलब तुम कहते हो। खैर, खैर, तुम व्यवसायी मनुष्य हो, तुम जानते होगे क्या बेमतलब है और क्या नही है। लेकिन सुनो कारस्तेन ! मै अब स्पष्ट सत्य कहने जा रही हूँ। कहो तुम सचमुच सुखी हो ?

वर्निक—मेरे पारिवारिक जीवन से तुम्हारा मतलब है ?

लोना— जी हाँ।

बर्निक—मैं सुखी हूँ, लोना ! तुम्हारा त्याग मेरे लिये व्यर्थ नही प्रमाणित हुआ है। मैं ईमानदारी के साथ कहता हूँ कि मैं प्रत्येक वर्ष अधिकाधिक सुखी होता गया हूँ। बेत्ती सीधी और आज्ञाकारिणी है, और अगर मै तुमसे कहता कि किस तरह इन वर्षों मे, मेरे ही रास्ते पर उसने अपने चरित्र को झुकाना सीखा है .

लोना—हूँ ।

वर्निक—शुरू में तो प्रेम के बारे में उसके बड़े भावुक विचार थे। वह इस बात को बर्दाश्त नहीं कर सकती थी कि धीरे धीरे प्रेम शान्त साहचर्य के रूप मे प्रिवर्तित हो जायेगा ।

लोना—लेकिन अब उसने इस बात को बर्दाश्त कर लिया है ?

वर्निक—बिल्कुल । जैसा कि तुम अनुमान कर सकती हो, मेरे नित्य के संसर्ग का उसके चरित्र को बनाने में कम भाग नहीं रहा है। हर एक को, अगर उसे अपने समाज के योग्य बनकर रहना हो तो, अपने मनोवेगो को अपनी शक्ति के अनुसार झुकाना पड़ता है । और बेत्ती अपनी जगह पर धीरे धीरे यह समझ गई है, और इसीलिये हमारा घर हमारे अन्य नागरिक भाइयो के लिये आदर्श हो गया है ।

लोना—लेकिन तुम्हारे नागरिक भाई उस असत्य के बारे में कुछ नही जानते ।

वर्निक—असत्य ?

लोना—हाँ, वह असत्य जिसे तुमने पन्द्रह वर्षो तक दबा रक्खा है ।

वर्निक—तुम्हारे कहने का मतलब कि

लोना—मैं इसे असत्य कहती हूँ—तीन ओर असत्य कहती हूँ—पहले मेरे प्रति, फिर बेत्ती के प्रति और फिर जान के प्रति ।

वर्निक—बेत्ती ने मुझे कभी इस सम्बन्ध में कुछ कहने के लिये नही कहा ।

लोना—क्योंकि उसे कुछ पता नहीं ।

वर्निक—और तुम उसकी ख़ातिर कहने को नहीं कहोगी ।

लोना—नही, मै लोगो की कटुक्तियो को सहन करने की व्यवस्था कर लूँगी ; मेरे कन्धे मज़बूत है।

बर्निक—और जान भी मुझसे इसकी सफाई नही चाहता, उसने मुझसे प्रतिज्ञा की है।

लोना—लेकिन तुम्हारा अपने प्रति क्या कर्तव्य है, कारस्तेन ? तुम्हें अपने भीतर किसी ऐसी भावना का अनुभव नही होता जो तुम्हे प्रेरित करे इस असत्य से अपने को बचा लेने के लिये ?

बर्निक—तो क्या तुम चाहती हो कि मै स्वयं अपनी इच्छा से अपने परिवार के सुख का बलिदान कर दूँगा और साथ ही साथ संसार मे मेरी जो स्थिति है, उसका भी ?

लोना—यह सच है तुमने अपने काम से बड़ा लाभ उठाया है, अपने लिये भी और दूसरो के लिये भी। कस्बे मे तुम सबसे धनी और प्रभावशाली व्यक्ति हो। यहां कोई भी किसी बात मे तुम्हारी इच्छा के प्रतिकूल जाने का साहस नही करता, क्योकि तुम कालिमा या त्रुटिहीन समझे जाते हो, तुम्हारा परिवार आदर्श परिवार समझा जाता है और तुम्हारा चरित्र आदर्श चरित्र। लेकिन तुम्हारी इस सारी महानता की और इसके साथ ही तुम्हारी स्थिति धोखे के दलदल पर है। कोई समय आ सकता है कि एक शब्द कहा जाय, और तुम्हारे साथ तुम्हारी महानता उसी दलदल मे फँस जाय, अगर तुम अवसर रहते अपने को नही बचा लेते।

बर्निक—तुम्हारे यहाँ आने का उद्देश्य क्या है ?

लोना—कारस्तेन! मै चाहती हूँ तुम्हारी सहायता करना, तुम्हारे पैरों के नीचे दृढ़ भूमि लाने मे।

बर्निक—प्रतिहिंसा! तुम बदला चुकाना चाहती हो। मुझे

इसका सन्देह हुआ था। लेकिन तुम सफल नही होगी। यहाँ एक ही आदमी ऐसा है जो प्रामाणिक ढंग से बोल सकता है और वह चुप रहेगा।

लोना—तुम्हारा मतलब जान से है ?

बर्निक—हाँ जान। अगर कोई दूसरा मुझे दोषी कहेगा, तो मैं सब कुछ अस्वीकार कर जाऊँगा। अगर कोई मुझे कुचलना चाहेगा तो, मैं अपनी जिन्दगी के लिये युद्ध करूँगा। लेकिन मै कहता हूँ इसमे तुम्हे सफलता नहीं होगी। जो मुझे नीचे गिरा सकता है, वह कुछ नही कहेगा। और वह बाहर भी चला जा रहा है।
[रुम्मेल और विजलान्त दाहिनी ओर से आते हैं।]

रुम्मेल—नमस्कार, भाई बर्निक, नमस्कार। हम लोगो के साथ व्यवसाय-संघ तक तुम्हे चलना होगा। वहां एक सभा है रेलवे की योजना के बारे मे, तुम्हे मालूम होगा।

बर्निक—मैं नही जा सकता। मेरे लिये तो इस समय असम्भव है।

विजलान्त—आपको जरूर चलना होगा, मिस्टर बर्निक।

रुम्मेल—बर्निक जरूर चलिये। हमारा विरोध चल रहा है। हैमर और दूसरे वे सब जो समुद्र के किनारे रेलवे लाइन चाहते है, कह रहे हैं कि इस नई योजना की आड़ मे व्यक्तिगत स्वार्थ है।

बर्निक—खैर, तो उन्हें समझा दीजियेगा।

विजलान्त—हम लोगो के समझाने का कोई फल नही होगा, बर्निक !

रुम्मेल—नहीं, नही, आपको अवश्य चलना है—स्वयं। स्वभावतः कोई भी ऐसी दुरंगी का सन्देह आपके लिये करने का साहस नही करेगा।

लोना—मैं भी समझती हूँ, कोई नहीं।

बर्निक—मुझसे नही हो सकता। मैंने आपसे कह दिया, मेरी तबियत अच्छी नही है। या कम से कम ठहरो, मैं अपने को सम्हाल लूँ। [राग्लुन्त दाहिनी ओर से भीतर आता है।]

राग्लुन्त—क्षमा कीजिये मिस्टर बर्निक। लेकिन मैं तो बेहद परेशान हो गया हूँ।

बर्निक—क्यों, क्या बात है ?

राग्लुन्त—मै आपसे एक सवाल पूछना चाहता हू मिस्टर बर्निक ! क्या इसमे आपकी अनुमति है कि एक सयानी लड़की, जिसे कि आपके घर मे आश्रय मिला है, खुली सड़क पर ऐसे आदमी के साथ घूम रही है जो

लोना—कौन आदमी पादरी साहब ?

राग्लुन्त—ऐसे आदमी के साथ जिसके साथ से वह बहुत दूर रक्खी जानी चाहिये।

लोना—हाँ। हाँ।

राग्लुन्त—आपकी अनुमति है, मिस्टर बर्निक ?

बर्निक—[अपना हैट और दस्ताने खोजते हुए] मुझे इस सम्बन्ध में कुछ नही मालूम। क्षमा कीजिये, मैं बड़ी जल्दी मे हूँ। मुझे व्यवसाय-संघ पहुंचना है।

[हिल्मा बगीचे की ओर से आता है, और बाईं ओर के आखिरी दरवाजे तक जाता है।]

हिल्मा—बेत्ती। बेत्ती। इधर सुनना।

मिसेज़ बर्निक—[दरवाजे पर आकर] क्या है ?

हिल्मा—तुम्हे बगीचे में जाना चाहिये और विशेष व्यक्ति और दीना दोर्फ मे जो छेड़छाड़ चल रही है उसका अन्त करना चाहिए। उनकी बातें सुनते सुनते मेरा नाकों दम हो गया।

लोना—सचमुच ? और वह विशेष व्यक्ति कहता क्या रहा है ?

हिल्मा—ओह ! केवल यह कि वह चाहता है कि वह उसके साथ अमेरिका चली जाय। ओफ़ !

रारलुन्त—यह सम्भव है ?

मिसेज़ बर्निक—कह क्या रहे हो ?

लोना—लेकिन यह तो बड़ी अच्छी बात होगी।

मिसेज़ बर्निक—असम्भव ! तुमने ठीक सुना न होगा।

हिल्मा—तब तुम खुद उनसे पूछ लो। यह जोड़ी आ रही है। कृपाकर मुझे इसमे न घसीटना।

बर्निक—[रुम्मेल और विजलान्त से] मैं अभी आप लोगो के पीछे ही क्षण भर में चल दूँगा। [रुम्मेल और विजलान्त दाहिनी ओर से निकल जाते हैं। जान और दीना बगीचे की ओर से आते है।]

जान—वाह लोना ! यह हम लोगो के साथ चलेगी।

मिसेज बर्निक—लेकिन जान ! तुम्हारा दिमाग तो नहीं बिगड़ गया है ?

रारलुन्त—मैं अपने कानो का विश्वास करूँ ? ऐसी भयंकर बात ? बहकाने की किस कला से आपने

जान—सुनिये भी इधर, जनाब। आप कह क्या रहे हैं ?

रारलुन्त—तुम बोलो दीना ! तुम यह करना चाहती हो, अपनी ही मर्ज़ी से ?

दीना—मुझे यहाँ से दूर निकल जाना चाहिये।

रारलुन्त—लेकिन इनके साथ! इनके साथ!

दीना—क्या आप यहाँ किसी और दूसरे को बतला सकते हैं, जोकि मुझे अपने साथ ले जाने का साहस करे?

रारलुन्त—तब तुम्हे जान लेना होगा कि यह कौन है।

जान—चुप रहो।

बर्निक—अब एक शब्द भी नही।

रारलुन्त—अगर मै नही बोलता तो मै उस समाज की सेवा के अयोग्य हूँ, जिसके नैतिक जीवन का मै अभिभावक बनाया गया हूँ, और इस लड़की के प्रति बड़े अन्याय का आचरण कर रहा हूँ, जिसके पालन पोषण में मेरा काफी हाथ रहा है और जो मेरे लिये...

जान—समझ लो तुम क्या कर रहे हो।

रारलुन्त—वह जानेगी। यह वही पुरुष है जो तुम्हारी मां की सारी मुसीबत का और लज्जा का कारण था।

बर्निक—मिस्टर रारलुन्त!

दीना—यह [जान से] यह सच है?

जान—कारस्तेन! तुम जवाब दो।

बर्निक—अब एक शब्द भी नही। आज इस बारे मे हम लोगो को दूसरा शब्द न कहना पड़े।

दीना—तब यह सच है?

रारलुन्त—हाँ सच है। और इतना ही नही, यह व्यक्ति, जिसका तुम विश्वास करने जा रही थीं, घर से खाली हाथ नही

भागा। पूछो इससे बुड्ढी मिसेज़ बर्निक के कैश बाक्स की बात। मि० वर्निक उस मामले के गवाह हैं।

लोना—झूठा है।

बर्निक—ओह!

मिसेज़ वर्निक—हे ईश्वर! हे ईश्वर!

जान—[रारलुन्त पर घूंसा तान कर झपटते हुए] और तुम्हारी इतनी हिम्मत

लोना—[उसे पकडती हुई] उसे मारो न जान!

रारलुन्त—यह ठीक है। मारो मुझे! लेकिन सत्य तो प्रकट होगा ही और यह सत्य है, मिस्टर बर्निक ने इसे मान लिया है और सारा कस्बा यह जानता है। अब दीना! तुमने जाना इसे? [थोडी देर सन्नाटा]

जान—[धीरे से वर्निक की बाँह पकड कर] कारस्तेन! कारस्तेन! तुमने क्या किया?

मिसेज़ बर्निक—[रोती हुई] हाय! कारस्तेन! तुम्हे यह अपमान मेरे कारण सहना पड़ा है।

सान्स्तात—[दाहिनी ओर से तेजी से आकर और दरवाजे का हेन्डिल पकड कर बुलाते हुए] अब आपको अवश्य आना चाहिये मिस्टर वर्निक! सारी रेलवे का भविष्य अब कच्चे सूत पर लटक रहा है।

वर्निक—[खोया हुआ सा] क्या है? मुझे क्या करना.

लोना -[गभीरता से और जोर देकर] तुम्हें जाना है और समाज का स्तम्भ होना है, जीजा!

सान्स्तात—हाँ, जल्दी आइये। हमे आपके नैतिक बल की सारी विभूति अपनी ओर चाहिये।

जान—[वनिक को एक ओर कर] कारस्तेन! इसके बारे मे हम लोग कल बातें करेंगे।

[बगीचे से होकर बाहर निकल जाता है। वनिक घबराया हुआ सान्स्तात के साथ दाहिनी ओर से बाहर निकल जाता है]

तीसरा अङ्क

[वहीं कमरा । बर्निक हाथ में बेंत लिये, भीषण क्रोध में बाईं ओर से दरवाजा अधखुला छोड़कर प्रवेश करता है ।]

बर्निक—[अपनी स्त्री से कहता है जो कि दूसरे कमरे में है] सुनती हो ? मैंने उसे आज खूब ठीक कर दिया है। मैं नहीं समझता कि वह इस मार को भूलेगा। क्या कहती हो ? और मैं कहता हूँ कि तुम बेवकूफ मां हो। तुम उसके लिये बहाना करती हो, और उसकी कोई भी बदमाशी मामूली बात समझती हो, बदमाशी नहीं। तब तुम इसे क्या कहोगी—रात को घर से निकल जाना, मछली मारने की नाव मे चढ़ जाना, और देर तक दिन मे भी बाहर रहना और जब मैं स्वयं इतना परेशान हूँ मुझे भयंकर रूप मे चिन्तित कर देना ? और इस पर भी वह बेईमान लड़का मुझे धमकाता है कि वह कहीं भाग जायेगा। अच्छा उसे भागने दो। तुम ? नहीं उसका क्या होता है इसके लिये तुम अपने को बेचैन क्यो बनाओगी ? मैं तो समझता हूँ कि अगर वह मर जाता तो भी .. सचमुच ? मुझे दुनिया में कुछ कर जाना है और मुझे निस्सन्तान होने की इच्छा नहीं है। अब विरोध न करना बेत्ती। जैसा कहता हूँ वैसाही होगा। वह घर में बन्द किया गया है। [सुनता है] चुप, किसीको कुछ पता न चले। [क्राप दाहिनी ओर से आता है।]

क्राप—क्षण भर समय न दे सकेंगे, मिस्टर बर्निक ?

बर्निक—[बेंत फेंकते हुए] जरूर, जरूर, कारखाने से आते हो ?

क्राप—हाँ ।

बर्निक—"पाम ट्री" तो ठीक है, मैं समझता हूँ ?

क्राप—"पाम ट्री" कल समुद्र में जा सकेगा, लेकिन

बर्निक—तब "इण्डियन गर्ल" की बात है ? मुझे सन्देह था कि वह हठी मनुष्य .

क्राप—"इण्डियन गर्ल" भी कल चलाया जा सकेगा । लेकिन मुझे निश्चय है वह दूर तक न जा सकेगा ।

बर्निक—तुम्हारा मतलब क्या है ?

क्राप—क्षमा कीजिये, महाशय । वह दरवाजा खुला है । मैं समझता हूँ दूसरे कमरे में कोई है ।

बर्निक—[दरवाजा बन्द करते हुए] अच्छा, अब । लेकिन वह क्या बात है जो किसी दूसरे को नहीं सुननी चाहिये ?

क्राप—यही कि मेरा विश्वास है कि आउन की मन्शा है "इण्डियन गर्ल" को डूब जाने देना, जहाज पर के हर एक माई के लाल के साथ

बर्निक—हे ईश्वर ! यह तुम कैसे सोच रहे हो ?

क्राप—मैं किसी भी दूसरी तरह नहीं सोच सकता साहब ।

बर्निक—खैर जितने थोड़े में तुम कह सको .

क्राप—अच्छी बात । आप जानते हैं जब से नई मशीनें और नये अनुभवहीन आदमी आये तब से कारखाने में कितना धीरे धीरे काम हुआ है ?

बर्निक—हाँ, हाँ ।

क्राप—लेकिन आज सबेरे जब मैं वहाँ गया, तब देखता क्या

हूँ कि अमेरिकन जहाज़ की मरम्मत आँधी की चाल से हुई है। पेंदे का वह बड़ा छेद, सड़ी हुई चकती, आप को मालूम है ?

वर्निक—हाँ, हाँ, क्या हुआ उसका ?

क्राप—बिल्कुल मरम्मत कर दिया गया था—कम से कम दीखता तो ऐसा ही था—किसी तरह भर दिया गया था, और जैसे बिल्कुल नया सा मालूम हो रहा था। मैंने सुना है कि ब्राउन स्वयं लालटेन की रोशनी में उस पर रात भर काम करता रहा है।

वर्निक—हाँ, हाँ, तब ?

क्राप—मेरे मन मे बात आगई। मजदूर जलपान करने निकल गये थे। मुझे जहाज को चारो ओर से देख लेने का मौका मिल गया, भीतर और बाहर दोनो ओर, मुझे कोई भी नही देख सका। मुझे सचाई मालूम हो गई। बडा सन्देहग्रस्त मामला है मिस्टर वर्निक।

वर्निक—मैं इसका विश्वास नही कर सकता क्राप। मैं नही कर सकता, और ब्राउन के बारे में मैं ऐसी बात का विश्वास नही करूँगा।

क्राप—मुझे बड़ा खेद है, लेकिन यह तो स्पष्ट सत्य है। कोई बड़ी सन्देह की बात हो रही है। कोई भी नया तख़्ता नहीं लगा, जहाँ तक कि मैं देख सका, केवल ऊपर से भर दिया गया है, उसके ऊपर पाल का कपड़ा सटा दिया गया है और ऐसी ही चीज़ें ज़बरदस्त बेईमानी। "इण्डियन गर्ल" न्यूयार्क नहीं पहुँच सकेगा। फूटे हुए वर्तन की तरह वह समुद्र में चला जायेगा।

वर्निक—यह तो बड़ा भयंकर है। लेकिन इसमें उसका उद्देश्य क्या हो सकता है ? कुछ समझ सकते हो ?

क्राप—शायद वह मशीनो की बदनामी करना चाहता है, प्रतिहिंसा चाहता है, आप को वाध्य करना चाहता है पुराने मज़दूरों को फिर बुलाने के लिये।

बनिंक—और इसके लिये वह जहाज़ के सभी आदमियो का प्राण लेना चाहता है ?

क्राप—उसने उस दिन कहा था "इण्डियन गर्ल" मे आदमी नही है बल्कि जंगली जानवर है।

बनिंक—हाँ, लेकिन इसके अलावा, उसे इसकी चिन्ता नही है कि कितने रुपयो का नुकसान होगा ?

क्राप—आउन पूंजी की ओर सहानुभूति से नही देखता मिस्टर बनिंक !

वनिंक—यह विल्कुल ठीक है, वह आन्दोलनकारी है और अशान्ति पैदा करने वाला, लेकिन ऐसी नीचता ! इधर देखो क्राप, एक बार तुम और इस वात का पता लगालो। दूसरे किसी से इस वारे मे एक शव्द भी नही। अगर किसी को भी इस वारे मे कुछ मालूम हुआ तो सारी वदनामी हमारे कारखाने की होगी।

क्राप—ठीक है लेकिन

वनिंक—जव मजदूर खाने चले जायेंगे, तव तुम फिर वहाँ जाने का प्रवंध कर लेना। इस वारे मे मुझे निश्चित वात मालूम हो जानी चाहिये।

क्राप—मालूम हो जायगी साहव ! लेकिन क्षमा करें, इसके वाद आप क्या करेंगे ?

वनिंक—इसकी रिपोर्ट करेंगे, सीधे तरीके पर। ऐसे वडे जुर्म मे हम लोग अपने को तो डालेंगे नही। मेरी अन्तरात्मा तो

ऐसी बात के लिये तैयार नही होगी। और विशेषतः इसका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ेगा, साधारण जनता पर भी, अखबारों पर भी—अगर यह दिखाई देगा कि मैं अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को ताक पर रखकर, न्याय होने देना चाहता हूँ।

क्राप—बिल्कुल ठीक मिस्टर वर्निक।

वर्निक—लेकिन सब से पहले मुझे निश्चित रूप मे मालूम हो जाना चाहिये। और इस बीच एक शब्द भी बाहर न हो।

क्राप—एक शब्द भी नही साहब। और आपको निश्चय भी हो जायेगा।

[बगीचे से होकर सड़क पर निकल जाता है।]

वर्निक—[कुछ जोर से] दिल दहलाने वाला! लेकिन नही, असम्भव है, कल्पना नहीं की जा सकती। [वह जैसे ही अपने कमरे में जाना चाहता है हिल्मा दाहिनी ओर से प्रवेश करता है।]

हिल्मा—नमस्कार, कारस्तेन! कल व्यवसाय-संघ ने तुम्हारी जीत पर बधाई।

वर्निक—धन्यवाद!

हिल्मा—यह महान विजय थी, मैंने सुना, बुद्धिमत्तापूर्ण सार्वजनिक भावना की स्वार्थ और मिथ्या सन्देह पर, जैसे कि किसी फ्रेंच सेना का हबशियों की सेना मे घुसकर उसे तितर बितर कर देना रहा हो। विस्मय की बात है कि यहाँ इतनी अप्रिय बात हो जाने पर भी आप वहां

वर्निक—हाँ, हाँ बिल्कुल ठीक।

हिल्मा—लेकिन अन्तिम युद्ध अभी बाकी है।

वर्निक—रेलवे के सम्बन्ध में तुम्हारा मतलब है न ?

क्राप—शायद वह मशीनो की बदनामी करना चाहता है, प्रतिहिंसा चाहता है, आप को बाध्य करना चाहता है पुराने मज़दूरो को फिर बुलाने के लिये।

बनिंक—और इसके लिये वह जहाज के सभी आदमियो का प्राण लेना चाहता है?

क्राप—उसने उस दिन कहा था "इण्डियन गर्ल" मे आदमी नही है बल्कि जंगली जानवर है।

बनिंक—हॉ, लेकिन इसके अलावा, उसे इसकी चिन्ता नही है कि कितने रुपयो का नुक़सान होगा?

क्राप—आउन पूंजी की ओर सहानुभूति से नही देखता मिस्टर बनिंक!

बनिंक—यह बिल्कुल ठीक है, वह आन्दोलनकारी है और अशान्ति पैदा करने वाला, लेकिन ऐसी नीचता! इधर देखो क्राप, एक बार तुम और इस बात का पता लगालो। दूसरे किसी से इस बारे मे एक शब्द भी नही। अगर किसी को भी इस बारे मे कुछ मालूम हुआ तो सारी बदनामी हमारे कारखाने की होगी।

क्राप—ठीक है लेकिन .

बनिंक—जब मजदूर खाने चले जायेगे, तब तुम फिर वहॉ जाने का प्रबंध कर लेना। इस बारे मे मुझे निश्चित बात मालूम हो जानी चाहिये।

क्राप—मालूम हो जायगी साहब! लेकिन क्षमा करे, इसके बाद आप क्या करेगे?

बनिंक—इसकी रिपोर्ट करेगे, सीधे तरीके पर। ऐसे बड़े जुर्म मे हम लोग अपने को तो डालेगे नही। मेरी अन्तरात्मा तो

ऐसी बात के लिये तैयार नहीं होगी। और विशेषतः इसका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ेगा, साधारण जनता पर भी, अखबारों पर भी—अगर यह दिखाई देगा कि मै अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को ताक पर रखकर, न्याय होने देना चाहता हूँ।

क्राप—बिल्कुल ठीक मिस्टर बर्निक।

बर्निक—लेकिन सब से पहले मुझे निश्चित रूप मे मालूम हो जाना चाहिये। और इस बीच एक शब्द भी बाहर न हो।

क्राप—एक शब्द भी नही साहब। और आपको निश्चय भी हो जायेगा।

[बगीचे से होकर सड़क पर निकल जाता है।]

बर्निक—[कुछ जोर से] दिल दहलाने वाला! लेकिन नही, असम्भव है, कल्पना नही की जा सकती। [वह जैसे ही अपने कमरे मे जाना चाहता है हिल्मा दाहिनी ओर से प्रवेश करता है।]

हिल्मा—नमस्कार, कारस्तेन! कल व्यवसाय-संघ मे तुम्हारी जीत पर बधाई।

बर्निक—धन्यवाद!

हिल्मा—यह महान विजय थी, मैने सुना, बुद्धिमत्तापूर्ण सार्वजनिक भावना की स्वार्थ और मिथ्या सन्देह पर, जैसे कि किसी फ्रेन्च सेना का हबशियो की सेना मे घुसकर उसे तितर बितर कर देना रहा हो। विस्मय की बात है कि यहाँ इतनी अप्रिय बात हो जाने पर भी आप वहां

बर्निक—हाँ, हाँ बिल्कुल ठीक।

हिल्मा—लेकिन अन्तिम युद्ध अभी बाकी है।

बर्निक—रेलवे के सम्बन्ध मे तुम्हारा मतलब है न?

हिल्मा—हाँ, मैं अनुमान करता हूँ कि हैमर जो आपत्ति खड़ी कर रहा है आपको मालूम है।

बर्निक—[उत्सुकता से] नहीं, क्या है ?

हिल्मा—जो चर्चा इधर उधर चल रही है उसमे वह पड़ गया है, और इस सम्बन्ध मे एक लेख तैयार कर रहा है।

बर्निक—क्या चर्चा ?

हिल्मा—ब्राञ्च लाइन के किनारे जो बहुत बड़ी सम्पत्ति खरीदी जा रही है उसके बारे में।

बर्निक—क्या ? इस तरह की कोई बात फैल रही है ?

हिल्मा—सारे कस्बे मे फैल गई है। मैंने क्लब में सुना जब वहाँ गया था। लोग कह रहे हैं कि हमारे किसी वकील ने कमीशन पर चुपके से सब खरीद लिया है—सारा जंगल, सारी खान की जमीन और सारे झरने

बर्निक—यह नहीं बतलाया उन्होंने कि किस की ओर से ?

हिल्मा—क्लब मे तो वे सोच रहे थे कि यह किसी कम्पनी का काम है, जिसका सम्बन्ध इस कस्बे से नहीं है, उसे आपकी स्कीम का पता चल गया और जल्दी करके खरीद लिया जब तक कि इन चीजों का दाम बढ़ने न पाया था। यह बदमाशी नही है ? ओफ ?

बर्निक—बदमाशी ?

हिल्मा—हाँ, हमारे पेट मे बाहर वालो का हाथ डालना, और एक हमारे स्थानीय वकील का ऐसी बातों के लिये अपने को आगे बढ़ाना। और अब तो सारा लाभ बाहर वालों का होगा।

बर्निक—लेकिन खैर, यह तो अभी गप्प है।

हिल्मा—इस बीच मे लोगो का इस पर विश्वास हो गया है, और कल या परसों मुझे कोई शक नही हैमर सभी बात तथ्य रूप मे सामने रख देगा। कस्बे में तो इसी समय इस सम्बन्ध में बड़ी बेचैनी है। बहुत से लोग कह रहे थे कि अगर यह बात सच हो तो वे अपना नाम हिस्सेदारो की लिस्ट से हटा लेंगे।

बर्निक—असम्भव!

हिल्मा—सचमुच? क्यो ये लालची आपका साथ देने के लिये इतने इच्छुक थे इस आयोजन में? आप नही समझते कि उन्होंने भी अपने लिए मुनाफा समझा था?

बर्निक—यह असम्भव है। मुझे इसमे सन्देह नही, हमारे इस छोटे समाज मे इतनी अधिक सार्वजनिक भावना है

हिल्मा—हमारे समाज मे? क्योंकि आप घोर आशा-वादी हैं, और इसलिये आप औरो की तुलना भी अपने ही से करते है। लेकिन मै, जिसने कि साधारण रूप मे कुछ देखा और अनुभव किया है, यहाँ एक भी ऐसा प्राणी नहीं देखता, हम लोगो को छोड़कर, एक प्राणी भी नही जो कि आदर्श का झण्डा लिये रहे। [बरामदे में जाता है] अरे! वे देख पड़ रहे हैं।

बर्निक—कौन देख पड़ रहे है?

हिल्मा—हमारे अमेरिका वाले मित्र। [दाहिनी ओर बाहर की ओर देखता है] और वह कौन है जिसके साथ घूम रहे हैं? ऐसा मालूम होता है, "इण्डियन गर्ल" का कैप्टन तो नहीं है? ओह!

बर्निक—उससे वे क्या चाहते होगे?

हिल्मा—वही तो उनके लिये ठीक साथी है। देखने से मालूम होता है जैसे वह गुलाम बेचने का रोजगार करता रहा हो या

समुद्री डाकू हो। और कौन जानता है दूसरे दोनो इधर कई वर्षों तक क्या करते रहे होगे ?

वनिक—सुनो, उनके वारे मे ऐसी वाते सोचना घोर अन्याय है।

हिल्मा—हाँ, आप आशावादी हैं। लेकिन ये फिर हम लोगों पर चढ़े चले आ रहे हैं। इसलिये जब तक मौका है मैं तो भाग जाऊंगा। [वाई ओर के दरवाजे की ओर जाता है, दाहिनी ओर के दरवाजे से लोना आती है।]

लोना—ऐ ! हिल्मा ! मेरे कारण भाग जा रहे हो क्या ?

हिल्मा—विल्कुल नहीं, मै जल्दी मे हूँ। मुझे वेत्ती से कुछ कहना है।

[वाई ओर के आखिरी कमरे मे चला जाता है।]

बनिक—[थोडी देर चुप रह कर] हाँ तो लोना ?

लोना—कहो।

बनिक—आज मेरे वारे मे क्या सोच रही हो ?

लोना—वही जो कल। कम या ज्यादा वही असत्य।

बनिक—इस सम्बन्ध में मैं तुम्हे और बतला दूँ। जान कहाँ है ?

लोना—आ रहा है। उसे पहले एक आदमी से मिलना है।

बनिक—कल तुमने जो सुना उसके बाद तुम समझ सकती हो कि अगर कहीं असल बात खुल गई तो फिर मेरी जिन्दगी चौपट है।

लोना—मैं यह समझती हूँ।

बनिक—खैर यह बात विवेक मे आ सकती है कि मैं उस अपराध का अपराधी नहीं था जिसकी यहाँ इतनी चर्चा थी।

लोना—हाँ, यह विवेक मे आ सकता है लेकिन चोर था कौन ?

बर्निक—कोई भी चोर नहो था। रुपया चोरी तो गया ही नहीं, एक पैसा भी नहीं।

लोना—यह कैसे ?

वर्निक—कह तो रहा हूँ, एक पैसा भी नही।

लोना—लेकिन चारों ओर की वह कानाफूसी ? यह लज्जास्पद बात कैसे फैली कि जान

वर्निक—लोना मैं समझता हूँ कि तुमसे मैं कह सकता हूँ जो कि और किसी से नहीं कह सकता, तुमसे मैं कुछ भी नहीं छिपाऊंगा। यह खबर फैलाने मे किसी अश तक मेरा ही दोष था।

लोना—तुम्हारा ? तुम उस आदमी के प्रति ऐसा कर सके जिस ने तुम्हारे लिये

वर्निक—उस समय कैसी दशा थी बिना इसे समझे मुझे दोषी न ठहराओ। इसके बारे मे मैंने तुमसे कहा था। मैं घर आया और मैंने देखा कि मेरी मा इधर उधर अनेक खतरनाक व्यवसायों में फॅसी है। हमारे लिये सारे चिन्ह दुर्भाग्य के थे। ऐसा मालूम हुआ कि हम लोगों पर दुर्भाग्य की वर्षा हो रही है, और हमारा परिवार सर्वनाश के किनारे पहुँच चुका है। मै कुछ तो निराश हो गया और कुछ विक्षिप्त। लोना! केवल अपने इन विचारो को दबाने के लिये ही मैं उस चक्र मे पड़ गया था, जिसका अन्त जान के निकल भागने से हुआ।

लोना—हूँ!

बर्निक—तुम खूब अनुमान कर सकती हो कि किस तरह से तुम दोनो के चले जाने के बाद हर तरह की खबरें उड़ीं। लोग

कहने लगे कि यह उसका पहला ही जुर्म नहीं था, और यह कि दोर्फ को बहुत सा रुपया मिल गया था, चुप रहने के लिये और निकल भागने के लिये। दूसरे लोग कहने लगे कि रुपया उसकी स्त्री को मिला है। उसी समय यह स्पष्ट था कि हमारा फर्म अपने उत्तरदायित्व को सम्हालने मे कठिनाई का अनुभव कर रहा था। इससे बढ़ कर और स्वाभाविक क्या था कि वे बदनामी उड़ाने वाले इन दोनों बातो को मिला देते ? और चूंकि कि वह स्त्री यहां रह गई दरिद्रता से जिन्दगी बिताती हुई, लोगो ने कहा कि जान रुपया अपने साथ अमेरिका लेगया, और हर बार जब यह झूठी खबर उड़ी रुपये की रकम बराबर बढ़ती गई।

लोना—और तुम कारस्तेन ?

बर्निक—मैने इस झूठी खबर का सहारा लिया जैसे कि डूबता हुआ आदमी तिनके का सहारा लेता है।

लोना—तुमने इसके फैलाने मे और सहायता की ?

बर्निक—मैने इस का खण्डन नहीं किया। हमारे महाजन दबाने लगे, और मेरा काम था किसी तरह उनको शान्त करना। नतीजा यह हुआ कि लोगो को हमारे फर्म की विश्वसनीयता मे जो सन्देह हुआ था, उसका अन्त हो गया। लोग कहने लगे कि यह दुर्भाग्य का चन्दरोजा धक्का हम लोगो पर पड़ा है। जरूरत केवल इस बात की थी कि महाजन हमलोगो को बहुत तंग न करे, केवल हम लोगो को मौका दे और फिर सभी महाजन अपना पूरा पूरा हिसाब पा जायेंगे।

लोना—और सभी महाजन पूरा पूरा पा गये ?

बर्निक—हॉ लोना ! उस झूठी खबर ने हमारे फर्म की रक्षा की, और मुझे वह आदमी बना दिया जो कि मैं इस समय हूँ।

लोना—इसका मतलब यह कि एक असत्य ने तुम्हें वह आदमी बना दिया जो कि तुम इस समय हो।

वर्निक—उस समय इसने किसकी हानि की ? कभी लौट कर न आने की तो जान की इच्छा ही थी।

लोना—तुम पूछते हो इसने किसकी हानि की ? अपने हृदय मे देखो और तब मुझसे कहो इसने तुम्हारी ही हानि नहीं की ?

वर्निक—कृपा कर किसी भी पुरुष के हृदय में देखो और तुम बराबर देखोगी, हर एक के भीतर, कम से कम एक काला निशान, जिसे कि उसे छिपा कर रखना है।

लोना—और तुम लोग अपने को समाज के स्तम्भ कहते हो ?

वर्निक—समाज में कोई दूसरा इससे अच्छा नहीं है।

लोना—ऐसे समाज को ऊपर उठाने या न उठाने का क्या महत्व हो सकता है ? इसका निर्माण हुआ कैसे है ? दिखावटीपन और झूठ और कुछ नहीं। तुम हो इस कस्बे के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति, आराम और अमीरी में, शक्ति और सम्मान मे, तुम जिसने कि एक निरपराध आदमी को भीषण अपराध मे बदनाम कर रक्खा है।

वर्निक—तो क्या तुम समझती हो कि उसके साथ मैंने जो अपराध किया है, उसका गहरा विचार मेरे हृदय मे नहीं है ? और तुम समझती हो कि इसके लिये मैं उसे बदला देने के लिये तैयार नहीं हूँ ?

लोना—कैसे ? सच्ची बात को प्रकट कर के ?

वर्निक—इस पर जोर देने को तुम्हारा हृदय कहता है ?

लोना—ऐसे अपराध का बदला और क्या हो सकेगा ?

वर्निक—मेरे पास धन है लोना। जान जितना चाहे मांगे।

लोना—हाँ, उसे धन देने को कहो, और तब तुम सुनोगे वह क्या कहता है।

वनिक—तुम्हे मालूम है उसकी मंशा क्या है ?

लोना—नही, कल से तो वह गूंगा हो गया है। वह ऐसा दीखता है, जैसे इसने उसे एकाएक बूढ़ा बना दिया है।

वर्निक—मै उससे पूछूंगा।

लोना—वह यह आ रहा है। [दाहिनी ओर से जान आता है]।

वर्निक—[उसकी ओर बढते हुए] जान !

जान—[उसे अलग हटाते हुए] पहले मेरी सुनो। कल सबेरे मैंने तुम्हे वचन दिया था कि मैं अपनी जबान बन्द रक्खूंगा।

वर्निक—तुमने वचन दिया था।

जान—लेकिन तब मुझे मालूम नही था कि ..

वर्निक—जान ! परिस्थिति बतलाने के लिये मुझे दो शब्द कहने दो।

जान—यह अनावश्यक है। मै परिस्थिति खूब समझता हूँ। कारखाना उस समय खतरे की हालत मे था, मैं दूर चला गया था और मेरा असहाय नाम और सम्मान तुम्हारी दया पर निर्भर था। खैर, तुमने जो किया उसके लिये मै तुम्हे बहुत दोष नहीं देता, हम अभी लड़के और विचारहीन थे उन दिनो। लेकिन अब मुझे सत्य की जरूरत है। और अब तुम्हे कहना पड़ेगा।

वर्निक—और चूंकि मुझे नैतिक महत्व के लिये अपनी सभी नेकनामी की जरूरत है, इस समय, इसलिये मै नहीं कह सकता।

जान—मेरे वारे में भूठी खवरें जो तुमने उड़ाईं उनकी मैं वहुत चिन्ता नहीं करता। वह दूसरी बात है जिसका अपराध कि तुम्हे स्वीकार करना पड़ेगा। मैं दीना को अपनी स्त्री वनाऊँगा, और यहाँ—यहीं तुम्हारे कस्बे मे, मैं वस जाना और उसके साथ रहना चाहता हूँ।

लोना—तुम यही करना चाहते हो ?

वर्निक—दीना के साथ ? दीना तुम्हारी स्त्री ? इसी कस्बे में ?

जान—हां यहीं, और किसी जगह नहीं। मै यहाँ रहना चाहता हूँ इन सभी झूठों और वदमाशों को ललकारने के लिये। लेकिन पहले इसके कि मै उसे अपने वश मे कर सकूं, तुम्हे मुझे मुक्त करना होगा।

वर्निक—तुमने यह नहीं सोचा है कि अगर मैं एक वात मान लूँगा तो इसका लाजिमी मतलव यह होगा कि दूसरी वात की जिम्मेदारी भी मुझी पर है। तुम कहोगे कि हम लोग वहीखाते से दिखला सकते हैं कि कोई भी वेईमानी कभी हुई ही नहीं। लेकिन मैं ऐसा नही कर सकता। हमारा वहीखाता उन दिनों ठीक ठीक नहीं लिखा जाता था। और अगर मैं कर भी सकूँ तो इसका लाभ क्या होगा ? किसी भी हालत मे क्या मुझ पर उंगली नहीं उठेगी ? क्या यह न कहा जायगा कि मैंने झूठ से अपनी रक्षा की, और पन्द्रह वर्षों तक उसी झूठ के पीछे चलता रहा, उसके सारे फल उठाये, उसे मिटाने के लिये एक उंगली भी नहीं उठाई ? तुम हमारे समाज को अच्छी तरह नहीं जानते, नहीं तो तुम समझ जाते कि इसका मतलव मेरा सर्वनाश होगा।

जान—मैं तुमसे केवल यही कह सकता हूँ कि मैं मिसेज दोर्फ की लड़की को अपनी स्त्री वनाना चाहता हूँ और इस कस्बे मे रहना चाहता हूँ उसके साथ।

वर्निक—[अपने ललाट का पसीना पोंछते हुए] सुनो जान ! और तुम भी लोना ! मैं इस समय जिन परिस्थितियों मे हूँ वे असाधारण है। मैं ऐसी स्थिति मे हूँ कि यदि तुम यह आघात मुझपर करना चाहो, तो तुम केवल मेरा ही नाश नहीं करोगे, बल्कि एक महान भविष्य का भी नाश कर डालोगे, उसकी सारी विभूतियो के साथ, जो कि इस समय समाज के सामने उपस्थित है, वह समाज जिसमे तुम्हारा बचपन बीता था।

जान—और अगर मैं तुम पर यह आघात न करूँ, तो मैं अपने ही हाथ से अपने भविष्य का सारा सुख मिटा दूँगा।

लोना—कहो कारस्तेन !

वर्निक—तब, कह दूं तुमसे। यह रेलवे के आयोजन से लगा हुआ है और सब बातें इतनी आसान नही है जितनी कि तुम समझते हो। मैं अनुमान करता हूं, तुमने सुना होगा कि पारसाल समुद्र किनारे रेलवे लाइन की बात चल रही थी। बहुतेरे प्रभावशाली व्यक्तियो ने इस बात का समर्थन किया—कस्बे के लोग, आस पास के देहात और यहां तक कि समाचारपत्रों ने भी—लेकिन मैंने किसी तरह इस प्रस्ताव को दबा दिया, इस आधार पर कि इससे हमारी स्टीमर लाइन के रोज़गार पर धक्का लगता।

लोना—स्टीमर के रोज़गार से तुम्हारा कोई सम्बन्ध है ?

वर्निक—हॉ, लेकिन इस बात को लेकर मुझपर सन्देह करने का साहस किसी ने नहीं किया, मेरे प्रतिष्ठित नाम से इस बात में मेरी रक्षा होगई। मैं तो वह हानि सह लेता लेकिन यहां के सभी लोग नहीं सह सकते। इसलिये भीतरी लाइन का निश्चय हुआ। जब यह हुआ उसी समय मैंने निश्चय कर लिया कि कस्बे तक एक ब्राञ्च लाइन लाई जायेगी।

लोना—इसके बारे में तुमने कुछ नहीं कहा, कारस्तेन ?

वर्निक—तुमने बड़ी दूर तक जंगल, खान और झरने खरीद लिए जाने की खबर सुनी है ?

जान—हाँ, शायद किसी बाहरी कम्पनी ने खरीद लिया है।

वर्निक—इस समय सम्पत्ति की ये चीजे जिस हालत मे हैं उनके मालिकों के लिये व्यर्थ है जो कि आस पास मे इधर-उधर फैले हैं। इस लिये ये बहुत सस्ती बिक गई हैं। अगर खरीदने वाला तब तक ठहर गया होता जब तक कि ब्राञ्च लाइन की चर्चा चल जाती, तब तो मालिक बड़ा कड़ा दाम माँगते।

लोना—खैर तब ?

वर्निक—मैं तुमसे कोई ऐसी बात कहने जा रहा हूँ जिस के कई अर्थ लगाए जा सकते हैं—एक ऐसी बात जिसे हमारे समाज मे कोई भी आदमी तभी स्वीकार कर सकता है जब कि उसका विश्वास और सम्मान बहुत अधिक हो, जिस पर कि वह खड़ा हो सके।

लोना—तब ?

वर्निक—वह मैंने ही खरीदा है।

लोना—तुमने ?

जान—अपनी ही ताकत से ?

वर्निक—अपनी ही ताकत से ? अगर ब्राञ्च लाइन निकल जाय तो मैं करोड़पती हूँ, और अगर नहीं—बस सर्वनाश।

लोना—यह तो बड़ा खतरे का काम है, कारस्तेन।

वर्निक—मैंने अपना भाग्य इस खतरे में डाल दिया है।

लोना—मैं तुम्हारी किस्मत की बात नहीं सोचती हूँ, लेकिन अगर यह मालूम हो जाय कि .

बर्निक—हाँ यही तो इसका मर्म-स्थान है। अपने सम्मान और विश्वास के पद के साथ जो मेरा अब तक रहा है, मैं सब कुछ अपने कन्धे पर उठा कर चल सकता हूँ और अपने नागरिक भाइयों से कह सकता हूँ "देखो मैंने यह जोखिम उठाई है समाज की भलाई के लिए।"

लोना—समाज की भलाई के लिए ?

बर्निक—हाँ, और कोई भी प्राणी मेरे उद्देश्य पर सन्देह नही करेगा।

लोना—तब कुछ थोड़े लोग।जिनका इससे सम्बन्ध है, अधिक खुल कर काम करते रहे हैं, विना किसी भी गुप्त उद्देश्य या विचार के।

बर्निक—कौन ?

लोना—क्यो ? रुम्मेल, सान्स्तात् और विजलान्त।

बर्निक—उनको अपनी ओर करने के लिये मै ने उन्हे इस रहस्य का पता दे दिया था।

लोना—और वे ?

बर्निक—मुनाफा का पाँचवां हिस्सा, वे अपना हिस्सा मान गये हैं।

लोना—आह ! ये समाज के स्तम्भ !

बर्निक—क्या समाज स्वयं हम लोगो को ऐसी छिपी कार्रवाई करने के लिये मजबूर नही करता ? अगर यह छिपे छिपे न किया होता तो क्या हुआ होता ? हर एक आदमी इस आयोजन मे हाथ बॅटाने के लिये कमर कसने लगता, सब कुछ बॅट जाता—बुरा इन्तज़ाम होता और ढह पड़ता। कस्बे मे मुझे छोड़ कर कोई

भी दूसरा आदमी इस योग्य नहीं है जो इतना बड़ा काम, जितना बड़ा कि यह होगा, उठाकर पार लगा सके। इस देश मे, सब कहीं, बिना किसी अपवाद के, केवल विदेशी जो यहाँ आकर बस गये हैं बड़े बड़े कारबार करने में समर्थ हैं। इसीलिये मेरी अन्तरात्मा इस बात के लिये मुझे क्षमा करती है। केवल मेरे ही हाथों में ये चीज़ें उन बहुतो के लिये वास्तविक रूप से उपयोगी हो सकती हैं, जिनको कि रोज की रोटी कमानी है।

लोना—मैं समझती हूँ, यह तुम ठीक कह रहे हो कारस्तेन!

जान—मुझे बहुतो से कोई सम्बन्ध नहीं, मेरे जीवन के सुख की बाज़ी लग रही है।

बर्निक—तुम्हारे जन्मस्थान की भलाई की भी बाजी लगी है। अगर ऐसी बातें मालूम हो जायँ जो मेरे पहले के आचरण पर धब्बा लगावे तो मेरे सभी विरोधी मिलकर झपटेंगे। हमारे समाज मे जवानी की गलती कभी भुलाई नहीं जाती। वे मेरी सारी बीती हुई जिन्दगी को छान डालेंगे, हजारों मामूली बातें उस समय की बटोर लेगे और जो प्रकट होगा उसी के अनुसार हर एक का मतलब लगायेंगे। वे झूठी बातो और बदनामी के नीचे मुझे कुचल देगे। मुझे मजबूर होकर रेलवे स्कीम छोड़नी पड़ेगी और अब अगर मै इसमे से अपना हाथ निकाल लूं, तो सब चौपट हो जायेगा, मेरा सर्वनाश हो जायेगा और नागरिक की हैसियत से मेरी जिन्दगी भी ख़तम हो जायेगी।

लोना—जान! हम लोगो ने जो अभी सुना है उसके बाद तुम्हे यहाँ से ज़रूर चले जाना चाहिये और अपनी ज़बान बन्द कर लेनी चाहिये।

बर्निक—हाँ, हाँ, जान! तुम्हे ज़रूर

जान—हाँ, मैं चला जाऊँगा, और अपनी जबान भी बन्द करूँगा। लेकिन मैं फिर लौटूंगा और तब मैं कहूँगा।

बर्निक—वहीं रहो जान! अपनी जबान बन्द रक्खो और मैं खुशी से तुम्हे साझेदार बना लूँगा।

जान—अपना रुपया रक्खे रहो, केवल मेरा नाम और मेरा सम्मान लौटा दो।

बर्निक—और स्वयं अपना बिगाड़ दूँ।

जान—तुमको और तुम्हारे समाज को उसके भीतर से निकलना होगा, चाहे जैसे हो। मैं जरूर दीना को प्राप्त करूँगा अपनी स्त्री बनाने के लिये। और इसलिये मैं कल "इण्डियन गर्ल" में यात्रा कर देता हूँ।

बर्निक—"इण्डियन गर्ल" मे?

जान—हाँ, कैप्टन ने मुझे ले चलने का वचन दिया है। मैं अमेरिका चला जाऊँगा जैसा कि मैंने कह दिया है। मैं अपना फार्म बेचकर अपनी और सब चीजों का प्रबन्ध कर दूंगा। दो महीने में मैं फिर लौट आऊँगा।

बर्निक—और तब तुम रहस्योद्घाटन करोगे?

जान—तब अपराधी को अपना अपराध अपने सिर पर लेना होगा।

बर्निक—यह भूल गये हो कि अगर मैं यह करूँ तो जो अपराध मेरा नही है उसे भी मुझे अपने सिर पर उठाना होगा।

जान—वह कौन है जिसने पिछले पन्द्रह वर्ष लाभ उठाया है उस लज्जाजनक अफवाह से?

बर्निक—तुम मुझे लाचार कर दोगे? खैर, अगर तुम कुछ

कहोगे तो मैं सब अस्वीकार करूँगा। मैं कहूँगा यह मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र है, तुम मुझे यहाॅ बदनाम करने आये हो।

लोना—शर्म नही आती, कारस्तेन ?

बर्निक—मरता क्या न करता ? मैं तुमसे कह रहा हूँ मैं अपनी जिन्दगी के लिये लडूंगा। मै सब अस्वीकार करूँगा, सब।

जान—मेरे पास तुम्हारे दो पत्र हैं। मुझे वे बाक्स मे दूसरे कागजो के साथ मिल गये। आज सबेरे मैंने उन्हे पढ़ा है, बहुत साफ हैं।

बर्निक—और तुम उन्हे सब किसी को दिखाओगे ?

जान—अगर जरूरत पड़ेगी।

बर्निक—और तुम यहाॅ दो महीने मे लौट आओगे ?

जान—मैं ऐसी ही आशा करता हूँ। हवा अनुकूल है, तीन सप्ताह में मैं न्यूयार्क पहुँचूँगा, अगर "इण्डियन गर्ल" डूब नहीं जाता।

बर्निक—[विस्मय से] अगर डूब नही जाता। "इण्डियन गर्ल" क्यों डूब जावेगा ?

जान—ठीक है, क्यो डूबेगा ?

बर्निक—[बहुत धीरे से] डूब जायेगा ?

जान—खैर, कारस्तेन। अब तुम जान गये, तुम्हारे सामने क्या है। तुम्हे अपना रास्ता निकालना होगा। विदा। मेरी ओर से बेत्ती से सलाम कह देना, गोकि उसने मेरे साथ बहिन का व्यवहार नही किया है। लेकिन मर्था से मिल लेना चाहिये। वह दीना से कहेगी; उसे मुझे वचन देना होगा। [बाईं ओर के दरवाजे से बाहर निकल जाता है।]

बर्निक—[स्वत] "इण्डियन गर्ल" ? [जल्दी से] लोना, उसे रोको !

लोना—तुम खुद देखो कारस्तेन ! अब उस पर मेरा कोई प्रभाव नहीं रहा । [जान के पीछे पीछे दूसरे कमरे में चली जाती है ।]

बर्निक—[बेचैन होकर] डूब न जाय ?

[आउन दाहिनी ओर से आता है ।]

आउन—क्षमा कीजिये, लेकिन अगर अवसर हो

बर्निक—[क्रोध से घूमकर] क्या चाहते हो ?

आउन— यही जानना कि मैं आप से कुछ पूछ सकता हूँ, सरकार ?

बर्निक—जल्दी कहो भी क्या है ?

आउन—मैं पूछना चाहता था कि क्या मैं इसे निश्चित समझूँ, बिल्कुल निश्चित, कि अगर "इण्डियन गर्ल" कल समुद्र मे न चल सके तो मुझे कारखाने से अलग होना पड़ेगा ?

बर्निक—इसका क्या मतलब ? जहाज़ तो चलने के लिये तैयार है ?

आउन—हाँ है, लेकिन अगर न होता तो मुझे अलग होना पड़ता ?

बर्निक—ऐसे फजूल सवाल पूछने से लाभ क्या ?

आउन—मै सिर्फ जानना चाहता हूँ साहब, बता देंगे मुझे ? मैं निकाल दिया जाऊँगा ?

बर्निक—मै जो कहता हूँ वह करता हूँ या नही ?

आउन—तो कल मैं अपने परिवार मे और अपने सम्बन्धियों

में मेरा जो स्थान है उसे खो दिये होता। अपनी जाति के लोगों पर मेरा प्रभाव नष्ट हो गया होता। समाज के ग़रीब और अभागे लोगों की कोई भी सहायता करने का अवसर सदैव के लिये निकल गया होता ?

वर्निक—आउन इन बातों की बहस तो पहले ही हो गई है।

आउन—जी हाँ तो "इण्डियन गर्ल" कल यात्रा करेगा।

[थोडी देर के लिये सन्नाटा]

वर्निक—सभी बातों पर अपनी नजर रखना मेरे लिये असम्भव है। सब बातों की जिम्मेदारी मुझ पर नहीं हो सकती। मैं अनुमान करता हूँ तुम मुझे विश्वास दिला सकोगे कि मरम्मत ठिकाने से हुई है।

आउन—आपने मुझे बड़ा कम समय दिया मिस्टर वर्निक।

वर्निक—लेकिन मैं समझता हूँ कि मरम्मत के जिम्मेदार तुम हो।

आउन—हवा अच्छी चल रही है और यह गर्मी का दिन है।

[थोडी देर फिर सन्नाटा]

वर्निक—तुम्हें कुछ और भी कहना है मुझसे ?

आउन—मैं समझता हूँ, नहीं साहब।

वर्निक तब "इण्डियन गर्ल" समुद्र मे चलेगा ?

आउन—कल ?

वर्निक—हाँ।

आउन—अच्छी बात है। [सिर झुका कर बाहर चला जाता है। वर्निक थोडी देर तक सन्न होकर खडा रहता है, जब जल्दी जल्दी टहलने लगता है दरवाजे की ओर मानो आउन को बुलाने के लिये, लेकिन ठहर

जाता है असमञ्जस में पड़कर, अपना हाथ दरवाज़े पर रखकर। उसी समय दरवाज़ा बाहर से खुलता है और क्राप भीतर आता है।]

क्राप—[धीरे से] आहा! वह यहाँ आया था। उसने स्वीकार कर लिया?

बर्निक—हूँ! तुमने कुछ पता लगाया।

क्राप—उसकी क्या जरूरत है जनाब? आपको उस आदमी की आँखों में पिशाची प्रवृत्ति नहीं देख पड़ी?

बर्निक—बेहूदा बात! ऐसी बातें दिखलाई नही पड़तीं। मैं जानना चाहता हूँ तुमने कुछ पता लगाया?

क्राप—मैं इसका उपाय नही कर सका। बड़ी देर हो गई थी। वे किनारे से जहाज़ को पानी में ढकेलना प्रारम्भ कर चुके थे। लेकिन इस काम मे उनकी यह जल्दी ही कह रही है कि

बर्निक—यह कुछ पता नहीं देती। मुआयना हो गया है? तब

क्राप—हाँ, लेकिन

बर्निक—अब देखो। और निश्चय है कि उन्हे शिकायत की कोई बात नहीं मिली।

क्राप—मिस्टर बर्निक, आप खूब जानते हैं कि इस मुआयने का मतलब क्या होता है और वह भी ऐसे कारखाने में जो इतना मशहूर हो जैसा कि हम लोगो का।

बर्निक—कोई बात नहीं, इससे हम लोगों की ज़िम्मेदारी हट जाती है।

क्राप—लेकिन जनाब, क्या आप वास्तव में पता नही लगा सके आउन के व्यवहार से कि

बर्निक—आउन ने मुझे बिल्कुल विश्वास दिलाया है, मैं तुमसे कहूँ।

क्राप—और मै आप से कहूँ जनाब कि मुझे हृदय से विश्वास है कि

बर्निक—इसका क्या मतलब क्राप ? मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ कि तुम अपनी छुरी इस आदमी पर चलाना चाहते हो। लेकिन अगर तुम उस पर आक्रमण करना चाहते हो तो कोई दूसरा अवसर ढूंढ़ो। तुम जानते हो मेरे लिये यह कितना ज़रूरी है—या मैं कहूँ कि मालिकों के लिये—कि 'इण्डियन गर्ल' कल समुद्र में चल पड़े ?

क्राप—अच्छी बात है, तो फिर यही हो। लेकिन अगर फिर कभी हम इस जहाज़ के बारे में सुने . हूँ।

[विजलान्त दाहिनी ओर से आता है]

विजलान्त—सलाम, मिस्टर बर्निक। थोड़ा समय आप दे सकेंगे ?

बर्निक—आज्ञा कीजिए, मिस्टर विजलान्त !

विजलान्त—मैं केवल जानना चाहता हूँ अगर आपकी भी राय हो कि "पाम ट्री" कल समुद्र में चल निकले ?

बर्निक—अवश्य, मैं तो समझता था कि यह बिल्कुल निश्चित है।

विजलान्त—कैप्टन मेरे पास अभी आया था और उसने कहा कि तूफान के सिगनल दिखाये जा रहे हैं।

बर्निक।—ओ! तो क्या हमे तूफान की भी शंका करनी चाहिये ?

विजलान्त—कम से कम तेज़ हवा, लेकिन अनुकूल हवा नहीं, बिल्कुल उल्टी।

बनिक—हूँ! खैर, तब आप क्या कहते हैं?

विजलान्त—मैं वही कहता हूँ जोकि मैने कैप्टन से कहा, कि "पाम ट्री" का भाग्य दैवाधीन है। इसके अतिरिक्त अभी वे केवल उत्तरी समुद्र के उस पार जा रहे हैं और इंगलैण्ड मे इस समय जहाज़ के भाड़े की दर काफी चढ़ी हुई है।

बर्निक—हाँ अगर हमारा जहाज़ रुका रहेगा तो शायद इससे हम लोगो की हानि होगी।

विजलान्त—इसके अतिरिक्त वह मज़बूत जहाज है, और उसका बोमा भी हो चुका है। "इण्डियन गर्ल" के लिये ज़रूर ज्यादा खतरा है।

बर्निक—आपका मतलब क्या है?

विजलान्त—वह भी कल समुद्र मे चल पड़ेगा।

बर्निक—हाँ, उसके मालिको ने बड़ी जल्दी की है। और इसके अतिरिक्त .

विजलान्त—खैर, अगर वह पुराना सड़ा गला ऐसी हिम्मत कर सकता है—और वह भी ऐसे चलाने वालों के बल पर—तो यह हम लोगो के लिये शर्म की बात होगी अगर...

बर्निक—बिल्कुल ठीक। मैं समझता हूँ जहाज़ के काग़ज़ात आपके पास है?

विजलान्त—हाँ यह हैं।

बर्निक—बड़ी बात हो अगर आप क्राप के साथ मिलकर ठीक कर लें।

क्राप—जनाव, आप यहाँ आ जाइए, हम लोग जरा सी देर में उन्हे खतम कर लेंगे।

विजलान्त—धन्यवाद। और यह वात हम लोग अव सर्व-शक्तिमान के हाथो मे छोड़ देते हैं। [क्राप के साथ वर्निक के कमरे में चला जाता है। वगीचे की ओर से रारलुन्त आता है।]

रारलुन्त—ऐ ! दिन मे इस समय मिस्टर वर्निक घर पर !

वर्निक—[चिन्ता में डूवा हुआ] आप तो देख ही रहे हैं।

रारलुन्त—मैं केवल आपकी स्त्री के लिये आया था। मैंने सोचा शायद उन्हे सान्त्वना के दो शब्दो की जरूरत हो।

वर्निक—सम्भवतः उसे है। लेकिन मै भी आपसे दो शब्द कहना चाहता हूँ।

रारलुन्त—वड़ी खुशी से मिस्टर वर्निक। लेकिन आपको हो क्या गया है ? आप विल्कुल पीले और बेचैन मालूम पड़ते हैं।

वर्निक—सचमुच ? मैं ऐसा मालूम हो रहा हूँ ? खैर आप मेरे ऐसे आदमी से जो उत्तरदायित्व के बोझ से दवा जाता है, और आशा ही क्या कर सकते हैं ? यों तो मेरा कारखाना ही वहुत वड़ा है, उसके बाद यह रेलवे का निकलना। लेकिन कुछ कहिये भी तो रारलुन्त, मैं आपसे एक सवाल पूछूँ ?

रारलुन्त—खुशी से मिस्टर वर्निक।

वर्निक—यह एक विचार के वारे में है जो मुझे अभी सूझ पड़ा है। मान लीजिये कि मनुष्य को कोई ऐसा काम करना है जिससे लाखो का उपकार होगा, और मान लीजिये कि इसमे उसे एक आदमी की जिन्दगी का वलिदान करना पड़े ?

रारलुन्त—आप का मतलव क्या है, साहव ?

वर्निक—उदाहरण के लिये अगर मनुष्य एक वहुत वड़ा

कारखाना खोलने का विचार कर रहा हो। वह निश्चित रूप से जानता है, क्योंकि उसके सारे अनुभव से उसे यही शिक्षा मिली है, कि जल्दी या देर से कभी न कभी कारखाने के चलाने में कोई ज़िन्दगी ख़तम होजायगी

रारलुन्त—हाँ यह बहुत सम्भव है।

बर्निक—या कहिये कि मनुष्य खान खुदवाने के काम में लग जाता है। वह अपने काम मे लगाता है परिवारों के पिताओं को और उन लोगो को जो अभी जवान हो रहे हैं। ऐसा अनुमान कर लेना गलत नही है कि सब के सब सकुशल खान के बाहर नहीं निकल सकेंगे।

रारलुन्त—हाँ, दुर्भाग्यवश बिल्कुल ठीक है यह।

बर्निक—खैर, तो इस स्थिति मे मनुष्य पहले ही से जानता है कि जो काम वह शुरू करने जारहा है, इसमें सन्देह नहीं कि कभी न कभी उसके कारण मनुष्य के जीवन की हानि होगी। लेकिन यह आयोजन तो स्वतः सब की भलाई के लिये होरहा है, इसमे जितने मनुष्यों की ज़िन्दगी जायेगी, निस्सन्देह उससे कई सौ गुने लोगों का लाभ होगा।

रारलुन्त—ओ! हो! आप रेलवे के बारे मे सोच रहे हैं। कितने लोग दब जायेंगे, और इसी तरह की बातें।

बर्निक—हाँ, बिल्कुल ठीक, मै रेलवे के बारे मे सोच रहा हूँ। और इसके अतिरिक्त रेलवे के आ जाने का मतलब होगा खानों और कारखानो का शुरू होना। लेकिन यह न सोचो कि

रारलुन्त—भाई बर्निक! आप हद से अधिक सोच रहे हैं। मै तो समझता हूं कि अगर आप यह सब नियति की इच्छा पर छोड़ दें

वर्निक—हॉ, सच है, नियति

रारलुन्त—फिर इस बात मे आपका कोई अपराध नहीं। चलिये और आशा के साथ अपनी रेलवे निकालिये।

वर्निक—हां, लेकिन अब मैं आपको एक विशेष दृष्टान्त दूंगा। मान लीजिये कि किसी ख़तरनाक जगह मे बारूद भड़कानी पड़े और जब तक वह भड़क न उठे लाइन बनाई न जा सके। मान लीजिये कि इन्जीनियर को यह बात मालूम हो कि जो मज़दूर उसमे आग लगायेगा उसकी जान जायेगी, लेकिन चूंकि आग तो लगानी ही है, और यह इन्जीनियर का कर्तव्य है आग लगाने के लिये मज़दूर को भेजना .

रारलुन्त—हूँ।

वर्निक—मै जानता हूँ आप क्या कहेगे। यह महान काम होगा अगर इन्जीनियर खुद दियासलाई लेकर आग लगाने चल पड़े। लेकिन यह तो होने वाला नही, इसलिये इन्जीनियर को मज़दूर भेजना ही होगा

रारलुन्त—ऐसी बात यहाँ तो कोई भी इन्जीनियर नही करेगा।

वर्निक—बड़े देशो मे कोई भी इन्जीनियर यह करने के लिये दो बार नहीं सोचेगा।

रारलुन्त—बड़े देशो मे ? नही। मैं इसे समझ सकता हूँ, उन पतित और आदर्शहीन देशो मे

वर्निक—ओ! उन समाजों के पक्ष में बहुत कुछ कहा जा सकता है।

रारलुन्त—आप यह कह सकते है ? आप जो स्वयं .

वर्निक—बड़े देशों मे मनुष्य को बड़े काम करने के अवसर

मिलते हैं, बड़े उद्देश्य के लिये उसे कुछ वलिदान करने का साहस मिलता है। लेकिन यहां तो मनुष्य मामूली बातो की चिन्ता करने मे और सिद्धान्तो को देखने मे कुचल जाता है।

रारलुन्त—मनुष्य का जीवन मामूली चिन्ता है ?

बर्निक—जब मनुष्य का वह जीवन हज़ारो के उपकार में बाधा डालता है।

रारलुन्त—लेकिन आप ऐसी बातो की ओर संकेत करते हैं जो कल्पना के बाहर है मिस्टर बर्निक! आज तो मै आपको बिल्कुल नही समझ पाता। और आप बड़े देशो की बात कहते है—मनुष्य के जीवन की उनको क्या चिन्ता है? इसे भी वे पूंजी समझते है, जो खर्च करने के लिये है ही। लेकिन हम लोग सब बातो का विचार दूसरी तरह से नैतिक दृष्टि से करते हैं, मै आशा करता हूँ। हमारे प्रशंसित जहाज के कारखाने को देखिये। आप किसी भी जहाज के रोज़गारी का नाम बता सकते है जो थोड़े से लाभ के लिये मनुष्य की जान ले सकता है? और तब बड़े देशो के उन बेईमानो की ओर देखिये जो लाभ के लिये एक के पीछे दूसरे ऐसे जहाज़ो मे लोगो को भर देते हैं जो समुद्र मे चलने लायक नही हैं।

वर्निक—मै ऐसे जहाज़ के बारे मे नही कहता।

रारलुन्त—लेकिन मै कहता हूँ मिस्टर वर्निक!

वर्निक—हां, लेकिन किस लिये? उनसे इस बात से कोई सम्बन्ध नही। ओह! ये मामूली, कमजोर चिन्ताएं। अगर इस देश के किसी सेनापति को अपने सिपाहियो को गोलियो के बीच से ले जाना पड़े और उनमे से कुछ मारे जायँ तो उसको तो बहुत दिन तक रात को नींद नही आयेगी। दूसरे देशों मे ऐसा नही है। सुनो वह वहां क्या कह रहा है—

रारलुन्त—वह कौन ? वह अमेरिकन ?

वर्निक—हाँ सुनो अमेरिका मे कैसे

रारलुन्त—वह वहां है ? और आपने मुझसे बतलाया भी नहीं ? मै इसी क्षण .

वर्निक—इस से कोई लाभ नहीं; उसके साथ आप कुछ नही कर सकते।

रारलुन्त—देखा जायगा। आह! यह आ रहा है। [दूसरे कमरे से जान आता है।]

जान—[खुले हुए दरवाजे से उसी ओर घूम कर बाते करते हुए] हाँ, हाँ, दीना! जैसी तुम्हारी तबियत चाहे, लेकिन साथ ही साथ मैं तुम्हे छोड़ने का भी विचार नहीं कर सकता। मै लौटूंगा और हम लोगो के बीच की सभी बातें स्वयं ठीक हो जायेगी।

रारलुन्त—क्षमा कीजिये, लेकिन इससे आपका क्या मतलब था ? आप करना क्या चाहते हैं ?

जान—मै चाहता हूँ कि यह यह जवान लड़की, जिसके सामने आपने मेरा चरित्र कलंकित किया था, मेरी स्त्री बने।

रारलुन्त—आपकी स्त्री ? और आप वास्तव मे यह अनुमान कर सकते है कि

जान—मै उससे शादी करना चाहता हूँ।

रारलुन्त—खैर तब आप को सच बात मालूम हो जायेगी। [अधखुले दरवाजे की ओर जाता है] मिसेज बर्निक, कृपाकर आप यहां आयेगी गवाह बनने के लिये ? और मर्था और दीना को भी आने दीजिये। (लोना को दरवाजे पर देख कर) आप भी यहां हैं ?

लोना—मैं भी आऊँ ?

रारलुन्त— जैसी आप की इच्छा। जितने ही ज्यादा लोग हों, उतना ही अच्छा।

बर्निक—आप क्या करने जा रहे हैं ? (लोना, मिसेज बर्निक, मर्था, दीना और हिल्मा दूसरे कमरे से आते हैं।)

मिसेज़ बर्निक—मिस्टर रारलुन्त, मैंने बड़ी कोशिश की लेकिन मैं उन्हें रोक नहीं सकी।

रारलुन्त—मैं उन्हें रोक दूंगा मिसेज बर्निक ! दीना ! तुम मूर्ख लड़की हो लेकिन इसके लिये मैं तुम्हें दोष नहीं देता। तुमको वह नैतिक सहायता नहीं मिली है जो कि तुम्हें रोक सकी होती। मैं अपने को दोष देता हूँ तुमको वह सहायता न देने के लिये।

दीना—आप अब न बोलिये।

मिसेज़ बर्निक—यह क्या ?

रारलुन्त—अब तो मुझे जरूर बोलना चाहिये दीना ! गो कि तुम्हारे कल के और आज के व्यवहार ने मेरे लिये यह दस गुना मुश्किल कर दिया है। लेकिन और विचारों को हटना पड़ेगा तुम्हारी रक्षा करने के सामने। तुमको याद होगा मैंने वचन दिया था, तुमको याद होगा तुमने प्रतिज्ञा की थी कि जब मैं कहूँ कि उचित समय आ गया, तब तुम मुझे स्वीकार करोगी। अब मैं अधिक आगा पीछा करने का साहस नहीं कर सकता और इस लिये [जान की ओर घूमता है] यह जवान लड़की जिसका तुम पीछा कर रहे हो मेरी वाग्दत्ता है।

मिसेज़ बर्निक—क्या ?

बर्निक—दीना !

जान—वह ? तुम्हारी ?

मर्था—नही, नही, दीना !

लोना—यह झूठ है।

जान—दीना ! यह आदमी सच कह रहा है ?

दीना—[थोडी देर चुप रह कर] हाँ।

रारलुन्त—मैं आशा करता हूँ इससे तुम्हारी कलुषित प्रवृत्ति कमज़ोर होगई होगी। दीना की भलाई के लिये मैं जो करना चाहता हूँ अब खुले तौर पर सब से कह देना चाहता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि मेरे इस कार्य का गलत अर्थ न लगाया जायेगा। और अब मिसेज बर्निक हम लोगो के लिये अच्छा होगा उसे अलग हटा ले जाना और उसके हृदय को शान्त करने का प्रयत्न करना।

मिसेज बर्निक—हाँ, मेरे साथ आओ। आह ! दीना ! तुम कैसी भाग्यवती हो ! [दीना को बाईं ओर से बाहर ले जाती है, रारलुन्त उन दोनों के पीछे जाता है।]

मर्था—विदा जान ! [बाहर चली जाती है।]

हिल्मा—[बरामदे के दरवाजे पर] हूँ ! मुझे कहना होगा।

लोना—[जो दीना की ओर बराबर देखती रही है—जान से] दिल न तोड़ो, बाबू ! मैं यहाँ रहूँगी और पादरी पर अपनी नज़र रखूँगी। [बाईं ओर से बाहर निकल जाती है।]

बर्निक—जान ! अब तो तुम "इण्डियन गर्ल" मे यात्रा नहीं करोगे ?

जान—ज़रूर करूँगा।

बर्निक—लेकिन तुम लौटोगे नही ?

जान—मैं लौट आऊँगा।

वर्निक—इसके बाद ? इसके बाद तुमको यहाँ क्या करना है ?

जान—तुम सब से बदला चुकाना, तुममे से जितनों को हो सके कुचल डालना। [दाईं ओर से बाहर निकल जाता है—विजलान्त और क्राप वर्निक के कमरे से आते हैं।]

विजलान्त—कागजात दुरुस्त हो गये मिस्टर वर्निक !

वर्निक—बड़ी बात, बड़ी बात !

क्राप—[धीरे से] और मै समझता हूँ कि यह निश्चित हो चुका है कि "इण्डियन गर्ल" कल समुद्र मे चल पड़ेगा।

वर्निक—हाँ। [अपने कमरे मे चला जाता है। विजलान्त और क्राप दाईं ओर से बाहर निकल जाते है। हिल्मा उनके पीछे जाना ही चाहता है कि ओलाफ बाईं ओर के दरवाजे से झाँकता है]

ओलाफ—मामा ! हिल्मा मामा !

हिल्मा—ओफ ! तुम हो ? तुम ऊपर क्यो नही रहते ? तुम जानते हो तुम घर मे बन्द किये गये हो।

ओलाफ—[एक या दो कदम नजदीक आकर] चुप, हिल्मा मामा ! आप को यह बात मालूम हो गई है ?

हिल्मा—हाँ, मैंने सुना कि आज तुम पीटे गये।

ओलाफ—[क्रोध से अपने बाप के कमरे की ओर देखकर] अब वह फिर कभी मुझे नही पीट सकेंगे। लेकिन आप को मालूम है कि जान मामा कल अमेरिकनो के साथ समुद्र यात्रा करेंगे ?

हिल्मा—इससे तुमसे क्या मतलब ? तुम फिर ऊपर भाग जाओ।

ओलाफ—शायद मै भी भैंसे के शिकार के लिये जाऊँगा, आज ही कल मे मामा !

हिल्मा—व्यर्थ की बात ! तुम्हारे ऐसा डरपोक

ओलाफ़—हाँ, देखते रहिये। आप को कल कुछ मालूम होगा।

हिल्मा—गधा ! [बगीचे से बाहर निकल जाता है। ओलाफ़ फिर कमरे मे भाग जाता है और दरवाजा बन्द कर लेता है, क्राप को दाहिनी ओर से आते हुए देख कर।]

क्राप—[वर्निक के कमरे के दरवाजे की ओर जा कर और उसे धीरे से खोलता हुआ] क्षमा कीजिये, मैं आप को फिर तङ्ग कर रहा हूँ, मिस्टर वर्निक। लेकिन बड़े जोरों का तूफान चल रहा है। [थोडी देर ठहरता है लेकिन कोई जवाब नही मिलता।] तिस पर भी "इण्डियन गर्ल" यात्रा करेगा ? [थोडी देर के सन्नाटे के बाद यह जवाब मिलता है।]

बर्निक—[भीतर से] इतने पर भी "इण्डियन गर्ल" यात्रा करेगा। [क्राप दरवाजा बन्द करता है और फिर दाहिनी ओर से चला जाता है]

——

चौथा अङ्क

[वही कमरा। सिलाई करने की मेज निकाल ली गई है। तूफ़ान चल रहा है और बिल्कुल शाम हो गई है। ज्यों ज्यों यह दृश्य बढता जाता है रात होती जाती है। एक नोकर रोशनी जला रहा है। दो दासियाँ फूल, लालटेन और मोमबत्ती ले आ रही हैं जो कि वे मेजों पर रख देती हैं और दीवारों से लगकर खडी हो जाती हैं। रुम्मेल अच्छी तरह से कपड़े पहने, दस्ताने और सफेद टाई के साथ कमरे मे खडा होकर नौकरो को जरूरी बाते बतला रहा है।]

रुम्मेल—केवल सब मोमबत्तियाँ जैकब ? ऐसा न मालूम हो कि इस मौके के लिए यह सब सजावट हुई है। इसे तो एक प्रकार के अप्रत्याशित विस्मय की तरह होना है, समझे ? और ये सब फूल ? खैर रहने दो उन्हे; शायद ऐसा मालूम होगा कि जैसे यह यहाँ रोज़ रहते हैं। [बर्निक अपने कमरे से आता है।]

बर्निक—[दरवाजे पर रुकते हुए] इसका क्या मतलब ?

रुम्मेल—आह ! भाई, आप हैं ? [नौकरों से] हाँ, तुम लोग इस समय यहाँ से चले जाओ। [नौकर बाहर चले जाते हैं।]

बर्निक—लेकिन रुम्मेल ! यह सब हो क्या रहा है ?

रुम्मेल—इसका मतलब यह कि आपके जीवन का सब से महान अवसर आ गया है। नगर के सर्वश्रेष्ठ पुरुष को सम्मानित करने के लिये उसके नागरिक भाइयो का एक जलूस आ रहा है।

बर्निक—क्या ?

रुम्मेल—जलूस झंडे और बाजे के साथ। ज़रूरत तो

यहाँ मशालो की भी थी लेकिन इस तूफान मे इसका साहस हम लोगो को नहीं हुआ। रोशनी भी होगी—और समाचारपत्रों मे ऐसी बातो का छपना सदैव रोचक मालूम होता है।

वर्निक—सुनिये, रुम्मेल! इसमे मैं कोई भी भाग नही लूंगा।

रुम्मेल—लेकिन अब तो यह कहने का समय नही रहा—आधे घंटे मे तो वे यहां होगे।

वर्निक—लेकिन इसके बारे मे आपने पहले ही क्यों नही कहा ?

रुम्मेल—क्योकि मुझे डर था आप इसका विरोध कर बैठेंगे। लेकिन मैंने आपकी स्त्री से पूछा था। उन्होने प्रबन्ध करने का भार मुझ पर छोड़ दिया, और वे जल पान की तैयारी कर रही हैं।

वर्निक—[आहट लेकर] यह कैसा शोर है ? वे आ पहुँचे क्या ? मालूम हो रहा है जैसे मुझे गाना सुनाई पड़ रहा है।

रुम्मेल—[बरामदे के दरवाजे को जाते हुए] गाना ? ओ! वे तो सब अमेरिकन हैं। "इण्डियन गर्ल" चलने की तैयारी कर रहा है।

वर्निक—तैयारी कर रहा है ? आह! हां। नही रुम्मेल, आज की रात तो मैं यह बर्दाश्त नही कर सकता। मेरी तबियत अच्छी नही है।

रुम्मेल—सचमुच आप अच्छे नही मालूम हो रहे हैं। लेकिन आपको अपने को सम्हालना होगा जरूर। सान्स्तात, विजलान्त और मैं, हम सब इसे पूरा करा डालना बड़ा जरूरी समझते हैं। हम लोगो को लोकमत

की अधिक से अधिक अभिव्यक्ति के भार के नीचे अपने विरोधियो को कुचल डालना है। खबरे इधर उधर कस्बे मे फैल रही है। जायदाद खरीदने की बात हम लोगो को कहनी होगी, बहुत दिन तक हम इसे रोक नही सकते। अच्छा हो कि आज रात को ही, गान और व्याख्यान के बाद, ग्लासो की रगड़ मे,—एक शब्द मे, जल्से के मस्त वातावरण मे,—समाज के लिये आपने जो जोखिम उठाई है उनसे कह दीजिये। जल्से के इस मौके पर, जैसा कि मैने अभी कहा, यहाँ की जनता पर आप आश्चर्यजनक प्रभाव डाल सकते हैं। लेकिन वह वातावरण आपको जरूर बनाना होगा, नही तो यह बात कही नही जा सकेगी।

वर्निक—हाँ, हाँ।

रुम्मेल—और विशेषत. जब ऐसी नाजुक बात कहनी है। खैर, ईश्वर को धन्यवाद दीजिये वर्निक, आपका इतना नाम है कि वह शक्ति का स्तम्भ होगा। लेकिन सुनिये अब ज़रूरी प्रबन्ध कर लेना चाहिये। मिस्टर हिलमा त्वांसे ने आप पर एक कविता बनाई है। उसका प्रारम्भ बड़ी सुन्दरता के साथ इन शब्दो से होता है "ऊँची करो कीर्ति की पताका आज नभ मे" और मि० रारलुन्त ने आज व्याख्यान देना स्वीकार किया है। खैर, आपको उसका उत्तर तो देना होगा ही।

बर्निक—आज की रात तो मै नही बोल सकूँगा। आप नही कह देगे ?

रुम्मेल—असम्भव है, चाहे मुझे कितनी ही इच्छा हो, जैसा कि आप अनुमान कर सकते है, उनका व्याख्यान विशेषतः आप को सम्बोधन करके होगा। हाँ सम्भव है उसी सांस मे हम लोगो के लिये भी वे एक या दो शब्द कह दे, मैने इसके बारे मे विजलान्त और सान्स्तात से भी कहा है। हम लोगो का विचार है

कि अपने वक्तव्य मे आप "समाजहित" के लिये पान का प्रस्ताव करे। सान्स्तात समाज के भिन्न-भिन्न पहलुओ के सामञ्जस्य के विषय मे थोड़े से शब्द कहेगे और तव विजलान्त कहेगे कि यह नया आयोजन जिन नैतिक सिद्धान्तों के ऊपर हमारा यह समाज स्थित है उनमे अशान्ति नही पैदा करेगा और मैं चाहता हूँ, थोड़े सुन्दर शब्दो मे महिलाओ की ओर संकेत करना, समाज के लिये जिनका प्रयत्न गोकि ऊपर से साधारण किन्तु वास्तव मे बहुत उपयोगी है। लेकिन आप मेरी वात ध्यान से नही सुन रहे है

बर्निक—हाँ, वास्तव मे मैं सुन रहा हूँ। लेकिन तुम्हारी समझ मे वाहर समुद्र वहुत क्षुब्ध होगया है तूफान से ?

रुम्मेल—"पाम ट्री" के वारे मे आप इतने क्यो घवरा रहे है ? आप को मालूम है उसका अच्छी तरह बीमा हो चुका है।

वर्निक—हाँ, उसका बीमा हो गया है, लेकिन .

रुम्मेल—और अच्छी मरम्मत भी हो चुकी है, असल वात तो यही है।

वर्निक—हूँ। अगर किसी जहाज के साथ कोई घटना होजाय, तो इसका मतलब यह तो न होगा कि मनुष्य की जिन्दगी खतरे मे हो जायगी ? नहीं न ? जहाज और उसका माल डूब जाय, और किसी के कागजात और सन्दूक भी

रुम्मेल—हे ईश्वर ! सन्दूक और कागजात इतनी महत्वपूर्ण चीज नही।

वर्निक—वहुत महत्वपूर्ण नही। नही, नही मेरा मतलब यह था ..चुप, फिर वोली सुनाई पड़ रही है।

रुम्मेल—यह "पाम ट्री" के लोगो की आवाज है।

[दाहिनी ओर से विजलान्त आता है]

विजलान्त—हाँ, वे "पाम ट्री" का रुख ठीक कर रहे हैं। सलाम, मिस्टर बर्निक!

बर्निक—और आप समुद्र के इतने जानकार, अब भी इसी राय के है कि ..

विजलान्त—मै तो तकदीर मे विश्वास करता हूँ मिस्टर बर्निक। और मै तो अभी जहाज पर हो आया हूँ और उनको कुछ पर्चे बॉट आया हूँ, जो कि मैं समझता हूँ उनके लिये शुभ होगा।

[सान्स्तात और क्राप दाहिनी ओर से आते हैं।]

सान्स्तात—[दरवाजे पर किसी से] खैर अगर वह ठीक ठीक पार हो जाय तो कोई चीज भी पार जा सकती है। [भीतर आता है] ओ हो! नमस्कार, नमस्कार।

बर्निक—कोई बात है क्राप ?

क्राप—कुछ नहीं, मिस्टर बर्निक।

सान्स्तात—"इण्डियन गर्ल" के सभी नाविक शराब पिये हैं। वे इसमे से जीते नही निकलेंगे। मैं तो इस बात पर अपना नाम दॉव पर रख दूँगा। [दाहिनी ओर से लोना आती है।]

लोना—अच्छा तो मैं अब उसकी सलाम सब से कह दूँ।

बर्निक—क्या वह जहाज पर पहुँच चुका है ?

लोना—किसी भी हालत मे अब तक पहुंच ही गया होगा। होटल के बाहर हम एक दूसरे से अलग हुए।

बर्निक—और वह अपने विचार मे बहुत पक्का था।

लोना—हाँ, जैसे पहाड़ की चट्टान।

रुम्मेल—[जो कि खिडकी के पास खटपट कर रहा है] ये नये शोक, पर्दे मैं नहीं गिरा सकता।

लोना—आप उन्हे गिराना चाहते हैं ? मैने तो समझा था कि इसके बजाय .

रुम्मेल—हाँ, मिस हेस्सल, आप जानती हैं हवा कैसी चल रही है।

लोना—हाँ, रहिये, मै आपकी सहायता कर दूँ। [पर्दे की रस्सियाँ पकडकर] मैं जीजा पर पर्दा गिरा दूँगी, गोकि मैं तो उसे और भी ऊपर उठाना चाहती थी।

रुम्मेल—हाँ, पीछे वह भी करना। जब बगीचा बढ़ती हुई भीड़ से भर जाय, तब पर्दे उठा दिये जावेंगे और वे विस्मय से एक सुखी परिवार को देखेंगे। नागरिको का जीवन तो ऐसा होना चाहिये कि वे शीशे के घर मे भी रह सकें। [बर्निक अपना मुँह खोलता है, जैसे कुछ कहने जा रहा है, लेकिन जल्दी से घूम कर अपने कमरे में चला जाता है।]

रुम्मेल—आओ, एक बार आखिरी विचार करलें। तुम भी भीतर चलो क्राप। एक या दो बातो पर अपनी जानकारी से तुम्हे हम लोगो की मदद करनी होगी। [सभी पुरुष बर्निक के कमरे में चले जाते हैं। लोना खिडकियों पर पर्दा गिरा चुकी है, और खुले हुए शीशे के दरवाजे पर भी यही करने जा रही है कि उसी समय बगीचे की सीढी के ऊपर वाले कमरे से ओलाफ कूद पडता है—उसके कन्धे पर एक चादर और हाथ में एक बन्डल है।]

लोना—जीते रहो बच्चे ! नटखट तुमने मुझे डरा दिया।

ओलाफ—[अपना बन्डल छिपाते हुए] चुप रहो मौसी !

लोना—तुम खिड़की से कूद पड़े ? जा कहाँ रहे हो ?

ओलाफ—चुप! कुछ मत कहो। मैं जान मामा के पास जाना चाहता हूँ, केवल किनारे। समझ गईं? केवल उनसे विदा होने के लिये। प्रणाम मौसी! [बगीचे के बाहर निकल जाता है।]

लोना—नहीं, ठहरो...ओलाफ! ओलाफ! [जान यात्रा के लिये तैयार होकर, एक बैग लेकर दाहिनी ओर के दरवाजे से कुछ चिन्तित सा आता है।]

जान—लोना!

लोना—[घूमकर] क्या फिर लौट आये?

जान—अभी थोड़ा समय और है। मुझे उससे एक बार और मिल लेना चाहिये। हम लोग इस तरह अलग नहीं हो सकते। [बाईं ओर का आखिरी दरवाजा खुलता है—मर्था और दीना ओवरकोट पहने, और दीना एक छोटा यात्रा का बैग लिये आती हैं।]

दीना—मुझे उसके पास जाने दो, जाने दो मुझे।

मर्था—हाँ, उसके पास जा सकती हो दीना!

दीना—वह तो यहीं है।

जान—दीना!

दीना—मुझे अपने साथ ले चलिये।

जान—क्या?

लोना—तुम सचमुच चाहती हो?

दीना—हां, मुझे अपने साथ ले चलो। उस ने मुझे लिखा है कि वह आज रात सबसे घोषणा कर देना चाहता है

जान—दीना! तुम उसे प्रेम नहीं करतीं?

दीना—मैंने उस आदमी को कभी प्रेम नहीं किया। मैं उससे सगाई करने की अपेक्षा समुद्र में डूब जाना अच्छा समझूँगी।

ओह ! अपने उद्धत व्यवहार से उसने कल मुझे कितना अपमानित किया ! उसने कितना साफ कर दिया कि वह अनुभव कर रहा था कि वह एक पतित और असहाय प्राणी को अपने वरावर उठा रहा था। मै अव और अधिक असहाय वनना नही चाहती। मै यहां से चली जाना चाहती हूं। मैं आपके साथ चलूं ?

जान—हाँ, हाँ, हजार वार, हाँ !

दीना—मै वहुत दिनों तक आपके लिये वोझ नही रहूंगी। केवल वहाँ पहुँचा देने मे मेरी सहायता कीजिये, और शुरू शुरू मे मेरी सहायता कीजिये वहाँ ठिकाने के साथ रहने मे

जान—वाह ! खैर, अन्त मे यह अच्छा हुआ।

लोना—[वॉनक क दरवाजे की ओर इशारा कर के] चुप ! धीरे, धीरे वोलो।

जान—दीना ! मैं तुम्हारी देख रेख करूँगा।

दीना—मैं आपको ऐसा नही करने दूगी। मैं वहाँ खुद अपनी देख रेख करना चाहती हूँ, मुझे विश्वास है मै कर सकूँगी। केवल मुझे यहां से निकल भागने दीजिये। ओह ये औरते, आपको मालूम नही—आज इन्होने भी मुझे लिखा है अपने सौभाग्य पर आनन्द मनाने के लिये—मुझपर इस वात का प्रभाव डालते हुए कि उस ने कैसी उदारता दिखाई है। कल और इसके वाद रोज वे यह देखा करती कि मैंने अपने को उसके योग्य वना लिया या नही। मैं इन सव अच्छाइयो से ऊव गई हूँ और थक गई हूँ।

जान—यह तो कहो दीना ! क्या केवल इसीलिये तुम मेरे साथ चल रही हो ? मैं तुम्हारे लिये कुछ नहीं हूं ?

दीना—हाँ जान ! तुम मेरे लिये जो हो दुनिया मे और कोई भी वह नही है।

जान—आह ! दीना !

दीना—यहाँ सब कोई कहता है मुझे तुमसे घृणा करने के लिये, यही मेरा कर्तव्य है। लेकिन मैं नहीं समझ पाती कि यह मेरा कर्तव्य है, और शायद कभी यह समझने के लायक हूँगी भी नहीं।

लोना—अब, कभी नही समझ पाओगी, प्यारी !

मर्था—नही, सचमुच तुम नही समझ सकोगी और इसीलिये तुम उसके साथ उसकी स्त्री बन कर जाओगी।

जान—हाँ, हाँ !

लोना—क्या ? क्या ? मुझे चुम्बन लेने दो मरथा। तुमसे मुझे इतनी आशा नहीं थी।

मर्था—नही, मैं इसकी आशा स्वयं नहीं करती थी। लेकिन मेरा फिर जाना तो कभी न कभी निश्चित था। ओफ ! आदत और रिवाज के अत्याचार मे हम लोगो को कितना दुःख सहना पड़ता है। इसके विरुद्ध खड़ी हो दीना ! उनकी स्त्री बनो। इन सभी रूढ़ियो को तोड़ दो, मै यह देखूं।

जान—तुम्हारा जवाब क्या है दीना ?

दीना—हाँ, मै तुम्हारी स्त्री हूँगी।

जान—दीना !

दीना—लेकिन सब से पहले काम कर के मै अपने को कुछ बनाना चाहती हूँ जैसा कि तुम ने किया है। मैं कोई ऐसी चीज़ नही बनूंगी जो कि ले ली जाय।

लोना—बिल्कुल ठीक, यही तो तरीका है।

जान—अच्छी बात है, मैं तब तक रुका रहूँगा और आशा करूँगा।

लोना—और प्राप्त करना बाबू! लेकिन अब तुम्हे जहाज पर चले जाना चाहिये।

जान—हाँ, जहाज पर। आह! लोना, प्यारी बहिन! बस, दो शब्द तुमसे। इधर सुनो। [वह उसे दूसरी ओर ले जाकर जल्दी जल्दी बाते करता है।]

मर्था—दीना! तुम भाग्यवती लड़की, मैं तुम्हे देखूँ और तुम्हे चूम लूँ, एक बार और, अन्तिम बार।

दीना—अन्तिम बार नहीं, बुआ! हम लोग फिर मिलेगे।

मर्था—कभी नही, मुझे वचन दो दीना, तुम लौटकर फिर कभी नहीं आओगी। [उसके हाथ पकड लेती है और उसकी ओर देखने लगती है।] अब जाओ समुद्र के उस पार अपने आनन्द के लोक मे, रानी बिटिया। अपने स्कूल के कमरे में किस तरह मुझे अक्सर वहाँ जाने की इच्छा हो जाती थी। बड़ा सुन्दर होगा .. आकाश यहां की अपेक्षा ऊंचा और महान, तुम्हारे सिर के ऊपर उन्मुक्त वायु .

दीना—बुआ मर्था! किसी दिन तुम भी हम लोगो के साथ चलोगी।

मर्था—मै? कभी नही, कभी नही। मुझे अब छुट्टी मिल गई, और अब मुझे विश्वास है मै अपनी जिन्दगी जैसी मुझे चाहिये बिता सकूँगी।

दीना—तुम से अलग रहने की कल्पना मै नही कर सकती।

मर्था—आह ! दीना ! मनुष्य बहुत कुछ त्याग सकता है ! [उसको चूम लेती है] लेकिन मुझे आशा है तुम्हे कभी इसका अनुभव नही होगा, रानी बेटी । उन्हे सुखी रखने का वचन मुझे दो ।

दीना—मै वचन कुछ भी नही दूँगी । वचन देने को मैं घृणा करती हूँ । जैसा होगा, होगा ।

मर्था—हॉ, हाँ, ठीक है, जो हो वही रहना—अपने प्रति सच्ची और ईमानदार ।

दीना—हॉ, मैं रहूँगी बुआ !

लोना—[अपनी जेब में कागज रखते हुए जो जान ने उसे दिया है] धन्य, धन्य, बाबू ! लेकिन अब तो चले जाओ ।

जान—हॉ, अब समय नही है । विदा लोना ! और तुम्हारे प्रेम के लिये धन्यवाद । मर्था ! बिदा और तुम्हारी सच्ची मित्रता के लिये धन्यवाद ।

मर्था—बिदा जान ! बिदा दीना ! तुम दोनों अपने जीवन भर सुखी रहो । [वह और लोना इन दोनों को पिछले दरवाजे से जल्दी जल्दी निकाल देती हैं—जान और दीना तेजी से बगीचे से होकर बाहर निकल जाते हैं । लोना दरवाजा बन्द कर पर्दा गिरा देती है ।]

लोना—अब हम लोग अकेली है । मर्था ! तुमने दीना को खोया है और मैने जान को ।

मर्था—तुमने उन्हे खोया ?

लोना—आह ! आधा तो मै उसे वही खो चुकी थी । वह अपने पैरो पर खड़ा होना चाहता था, इसीलिये मैंने घर आने की इच्छा का बहाना किया ।

मर्था—यह बात थी। अब मै समझी तुम क्यो आई। लेकिन उन्हे तुम्हारी जरूरत फिर पड़ेगी, लोना।

लोना—बूढ़ी बहिन की उसे अब क्या जरूरत होगी? पुरुष अपने सुख के लिये बहुतेरे प्रिय बन्धन काट डालते हैं।

मर्था—कभी कभी होता है ऐसा।

लोना—लेकिन हम दोनों एक दूसरे मे मिल जायेंगी मर्था।

मर्था—मैं तुम्हारे लिये कुछ हो सकती हूँ?

लोना—और कौन हो सकेगा? हम दोनो बहिनें हैं। क्या हम दोनो ने अपने बच्चे नही खो दिये? अब तो हम अकेली हैं।

मर्था—हाँ अकेली। और इसलिये तुम्हे यह भी जान लेना चाहिये कि मैं उन्हे संसार की किसी भी दूसरी चीज़ से अधिक प्रेम करती थी।

लोना—मर्था। [उसकी बाँह पकड कर] यह सच है?

मर्था—इन्हीं शब्दों के भीतर मेरा सारा अस्तित्व है। मैंने उन्हे प्रेम किया और उनकी राह देखती रही। हरसाल गर्मी मे मैं उनके घर आने की प्रतीक्षा करती रही। और तब वे आये, लेकिन मेरे लिये उनके पास आंखें नहीं थी।

लोना—तुम उसे प्रेम करती थीं। और तुम्हीं ने उसका आनन्द भी उसकी मुट्ठी में रख दिया।

मर्था—मैं उन्हे प्रेम करती थी तो क्या मैं वह न होती जो उनकी मुट्ठी मे उनका आनन्द रख देती? हाँ मैंने उन्हें प्रेम किया है। जब से वे चले गये—मेरी सारी जिन्दगी उन्ही के लिये रही है। तुम जानना चाहती हो कि किस आधार पर मैंने आशा की थी? मैं समझती हूँ इसका कुछ कारण था, अवश्य। लेकिन जब

वे लौट आये तो साफ मालूम हो गया कि जैसे उनकी स्मृति से सभी बाते निकल गई है। उनकी आँखो मे मेरे लिये जगह नही थी।

लोना—तो दीना ने तुम्हारे प्रकाश को मन्द कर दिया मर्था!

मर्था—और यह वह अच्छा ही कर गई। उस समय जब वह भागे थे, हम दोनो एक ही उम्र के थे, लेकिन जब मैंने उन्हे फिर देखा, आह! वह भयानक क्षण! मुझे मालूम हुआ कि अब मै उनसे दस वर्ष बड़ी हूँ। वह तो वहाँ सूर्य के प्रखर प्रकाश मे, हर एक सांस के साथ जीवन और स्वास्थ्य की वायु लेते थे, और मै यहाँ बैठी रह गई कातती-कातती ..

लोना—उसके आनन्द का सूत कातती हुई, मर्था!

मर्था—हाँ, मैने सोने का सूत काता। किसी भी तरह की अनबन नहीं। उनके लिये हम लोग दो बहिनें रही है। रही हैं कि नही, लोना?

लोना—[उसके गले में अपनी बाहे डालती हुई] मर्था!

[बर्निक अपने कमरे से आता है]

बर्निक—[उन लोगों से जो उसके कमरे में हैं] हाँ, हाँ, जैसा चाहो ठीक करलो। जब मौका आयेगा मैं इस लायक हो जाऊँगा कि—[दरवाजा बन्द करता है] ओ, तुम यहाँ हो! इधर सुनो मर्था! मै चाहता हूँ अच्छा हो तुम अपने कपड़े बदल डालो, और बेत्ती से कहो कि वह भी यही करे। मै कोई बड़ी भड़कीली चीज नही चाहता, कोई भी घर लायक चीज, लेकिन साफ। लेकिन तुम जल्दी करो।

लोना—और सुन्दर प्रसन्नमुख हो मर्था! तुम्हारी आँखे प्रसन्न देख पड़े।

बर्निक—ओलाफ भी नीचे आयेगा, मैं उसे अपनी बगल में रक्खूँगा।

लोना—हूँ। ओलाफ ..

मर्था—मैं बेत्ती को तुम्हारा सन्देश दे देती हूँ। [बाई ओर के दरवाजे से निकल जाती है।]

लोना—अच्छा तो महान अवसर अब बिलकुल निकट है।

बर्निक—[इधर उधर परेशान टहलते हुए] हाँ, है।

लोना—मैं समझती हूँ ऐसे अवसर पर मनुष्य गर्व और आनन्द का अनुभव करता होगा।

बर्निक—[उसकी ओर देखते हुए] हूँ।

लोना—सुना है सारे कस्बे मे रोशनी होगी।

बर्निक—हाँ, वे कुछ ऐसा चाहते हैं।

लोना—सभी भिन्न भिन्न दल अपने अपने झंडे लेकर इकट्ठे होंगे। तुम्हारा नाम अग्नि के अक्षरों मे जगमगा उठेगा। आज रात को तार देश के कोने कोने मे यह खबर फैला देंगे, "अपने सुखी परिवार के बीच मिस्टर बर्निक को अपने नागरिक भाइयो से कृतज्ञता स्वरूप समाज के स्तम्भ का सम्मान मिला"।

बर्निक—हाँ, ऐसा हो। वे बाहर मेरे लिए तालियां बजावेंगे और भीड़ मेरे मकान के सामने शोर करेगी, जब तक कि मैं बाहर जाने के लिये और उनके सामने सिर झुका कर उन्हें धन्यवाद देने के लिये बाध्य नहीं हो जाऊंगा।

लोना—बाध्य होगे ?

बर्निक—तुम समझती हो कि मुझे उस समय प्रसन्नता होगी ?

लोना—नहीं मैं यह तो नहीं समझती कि तुम बहुत प्रसन्न हो जाओगे।

वर्निक—लोना, तुम मेरी अवहेलना करती हो।

लोना—नहीं, कभी तो नहीं।

वर्निक—और तुम्हे इसका अधिकार भी नहीं है, मेरी अवहेलना करने का अधिकार नहीं है। लोना! तुम्हे पता न होगा कि इस संकीर्ण और संकुचित समाज में मैं कितना अकेला खड़ा हूँ, जहाँ कि मुझे हर साल अधिक व्यापक जीवन की अपनी महत्वाकांक्षा को दवाना पड़ा है। मेरा काम कई रूपो मे भले देख पड़े लेकिन मैंने किया क्या? छोटे मोटे काम। यहाँ के लोग और कुछ पसन्द नहीं करेंगे। इस समय लोगों के जो विचार हैं या जो राय है अगर मैं उससे एक कदम भी आगे बढ़ जाऊं तो फिर मेरा प्रभाव मिट जायेगा। जानती हो हम लोग क्या हैं? हम लोग जो समाज के स्तम्भ कहे जाते है? हम लोग समाज के हाथ की लकड़ी है, न इससे ज्यादा न कम।

लोना—तुम इस बात को केवल अभी क्यों समझने लगे हो?

वर्निक—क्योकि इधर मैं बहुत विचार करता रहा हूँ—जब से कि तुम लौटी हो—और आज शाम को मैंने सब से अधिक गंभीर होकर विचार किया है। आह! लोना, मैं तुम्हें पहले ही क्यो न जान सका—बीते हुए समय मे ..

लोना—और अगर तुम पहचान सके होते?

वर्निक—मैंने तुम्हे जाने न दिया होता, और अगर मै तुम्हे पा गया होता तो आज मै जिस परिस्थिति मे हूँ, उसमें न पड़ा होता।

लोना—और तुम यह नही सोचते कि वह भी तुम्हारे लिए क्या हो सकती थी—वह जिसे तुमने मेरी जगह पर पसन्द किया था?

बर्निक—मै हर हालत मे जानता हूँ कि मुझे जिस चीज की जरूरत थी वह मेरे लिये उस तरह की कुछ नही रही है।

लोना—क्योंकि तुमने उसे कभी अपने सुख दुख में शरीक नही किया है, क्योकि तुमने उसे कभी स्पष्टता और सत्यता पूर्वक विचार-विनिमय करने का अवसर नहीं दिया है, क्योकि तुमने उस व्यक्ति को, जो उसका सगा था, लांछित करके उसे सदा आत्म-ग्लानि का अनुभव कराया है।

बर्निक—हाँ, हाँ, यह सब झूठ और धोखा के साथ ही चलता है।

लोना—तो फिर इस झूठ और धोखा से छुट्टी क्यो नही ले लेते ?

बर्निक—अब ? अब तो उसका समय नहीं रह गया, लोना ?

लोना—कारस्तेन! मुझे यह तो बतलाओ कि यह सारा ढोंग और धोखा तुम्हारे किस लाभ का है ?

बर्निक—किसी भी लाभ का नही है। मुझे और धूर्तों के इस समाज को किसी न किसी दिन लुप्त हो जाना होगा। लेकिन एक पीढ़ी उठ रही है जो हमारे पीछे चलेगी। मैं जो कुछ कर रहा हूँ अपने लड़के के लिये कर रहा हूँ, मैं उसकी जिन्दगी के लिये मार्ग प्रशस्त कर रहा हूँ। एक समय आयेगा जब समाज के शरीर में सत्य का प्रवेश होगा और उस आधार पर वह अपने पिता की अपेक्षा सुखी स्थिति का निर्माण करेगा।

लोना—इन सब के भीतर एक असत्य से ? सोचो तो तुम अपने लड़के के लिये कैसी पैतृक सम्पत्ति छोड़ रहे हो।

बर्निक—[दबाई हुई निराशा के स्वर में] तुम जितना समझती हो यह उससे हजार गुना बुरी है। लेकिन यह निश्चय है कि किसी

न किसी दिन शाप से मुक्ति प्राप्त करनी होगी। तो भी [जोर देकर] यह सब मैं अपने ही सिर पर कैसे ले सका ! खैर, अब तो यह हो ही गया, अब तो मुझे इसी के साथ चलना होगा। तुम मुझे कुचलने मे सफल नही हो सकोगी। [हिल्मा तेजी से क्षुब्ध होकर दाहिनी ओर से प्रवेश करता है, अपने हाथ में एक खुला हुआ पत्र लिए हुए।]

हिल्मा—लेकिन ..यह है . बेत्ती ! बेत्ती !

बर्निक—क्या बात है जी ? वे आ पहुँचे क्या ?

हिल्मा—नहीं, नहीं, लेकिन मुझे किसी से अभी कहना होगा। [दाईं ओर के आखिरी दरवाजे से निकल जाता है।]

लोना—कारस्तेन ! तुम हम लोगो के यहाँ आने के बारे मे कहते हो कि हम तुम्हे कुचलने के लिये आए है। तो मुझे कहने दो कि यह अभागा युवक जिसे तुम्हारा नैतिक समाज घृणा करता है किस चीज़ से बना है। वह तुम लोगो मे किसी के भी बिना अपना काम चला सकता है, क्योंकि वह अब दूर निकल गया है।

बर्निक—लेकिन उसने कहा है कि वह फिर लौटेगा।

लोना—जान अब कभी नही लौटेगा। वह हमेशा के लिये चला गया और उसके साथ दीना भी।

बर्निक—कभी नही लौटेगा ? और उसके साथ दीना भी ?

लोना—हाँ, उसकी स्त्री होने के लिये। इस तरह वे तुम्हारे सदाचारी समाज के मुँह पर तमांचा मार गए है, जैसा कि मैंने एक बार किया था, लेकिन इसका ख़्याल न करो।

बर्निक—जान चला गया, और दीना भी, "इण्डियन गर्ल" मे ..

लोना—नहीं, ऐसी बहुमूल्य वस्तु के साथ वह उन पतित नाविको का विश्वास नही कर सकता था। जान और दीना "पाम ट्री" मे हैं।

वर्निक—अहा ! तब यह सब व्यर्थ है [जल्दी से अपने कमरे के दरवाजे तक जाता है, उसे खोलता है और बुलाता है] क्राप, "इण्डियन गर्ल" को रोको, वह आज रात को समुद्र मे चलने न पाये।

क्राप—"इण्डियन गर्ल" तो अब समुद्र मे निकल गया है, मिस्टर वर्निक।

वर्निक—[दरवाजा बन्द कर धीरे से बोलते हुए] देर हो गई—और सब फिजूल

लोना—तुम्हारा मतलब क्या है ?

वर्निक—कुछ नहीं, कुछ नहीं, मुझे अकेला रहने दो।

लोना—हूँ ! इधर देखो कारस्तेन। जान ने बड़ी उदारता से अपना सम्मान और नाम जो उसने कभी तुम्हे उधार दिया था मुझ पर छोड़ दिया है और अपनी वह नेकनामी भी जो तुमने उससे चुरा ली थी जब कि वह परदेश मे था। जान तो अपनी जबान बन्द रक्खेगा, किन्तु इस सम्बन्ध मे मैं जैसा चाहूँगी, करूँगी। देखो, मेरे हाथ मे दो पत्र हैं।

वर्निक—तुम्हे वे मिल गये। और तुम्हारा मंशा है कि अभी आज ही रात को शायद जब जलूस आता हो .

लोना—मैं यहाँ तुम्हे धोखा देने के लिये नहीं आयी, बल्कि तुम्हारी अन्तरात्मा को जगाने के लिये, जिससे कि तुम अपनी स्वतन्त्र इच्छा शक्ति से बोल सको। मैं उस काम मे तो सफल नहीं हो सकी, इसलिये तुम जैसे हो वैसे ही पड़े रहो, अपने

उस जीवन के साथ जिसकी नीव ही झूठ है। देखो मैं तुम्हारे दोनो पत्रों को फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर देती हूँ। इन कलुषित चीजो को ले लो, यह लो। अब तुम्हारे विरुद्ध कोई सबूत नही है कारस्तेन। अब तुम सुरक्षित हो; प्रसन्न भी रहो अगर तुमसे हो सके।

वर्निक—[बड़े उद्वेग से] लोना। तुमने यह पहले क्यों नही किया? अब तो इसमे बड़ी देर हो गई। जिन्दगी से तबियत ऊब गई है; आज के बाद मैं जी नही सकता।

लोना—हो क्या गया?

वर्निक—मत पूछो मुझ से कुछ, लेकिन मुझे जीना तो होगा ही तिस पर भी। मैं जीता रहूंगा ओलाफ के लिये। सब कुछ वह बदलेगा, सब कुछ वह बना लेगा।

लोना—कारस्तेन। [हिल्मा तेजी से लौटता है।]

हिल्मा—कोई भी नही मिला। सब बाहर हैं, बेत्ती भी।

बर्निक—तुम्हे हो क्या गया है?

हिल्मा—मैं आप से कहने का साहस नही कर सकता।

वर्निक—क्या है? मुझसे कहना होगा।

हिल्मा—अच्छी बात है, ओलाफ "इण्डियन गर्ल" में भाग गया है।

वर्निक—[घबरा कर पीछे हटते हुए] ओलाफ "इण्डियन गर्ल" पर। नहीं, नहीं।

लोना—हाँ, वह भाग गया है। मै अब समझी। मैंने उसे खिड़की से कूदते हुए देखा था।

बर्निक—[अपने कमरे के दरवाजे से हताश होकर पुकारता है] क्राप। "इण्डियन गर्ल" को जैसे भी हो सके रोको।

क्राप—असम्भव है, साहब ! कैसे आप समझते हैं ?

बर्निक—हम लोगो को उसे रोकना है, ओलाफ उसमे चढ गया है।

क्राप—क्या ?

रुम्मेल—[बर्निक के कमरे से निकल कर] ओलाफ भाग गया ? असम्भव।

सान्स्तात—[उसके पीछे निकलते हुए] वह उसी समय लौटा दिया जायगा, मिस्टर बर्निक।

हिल्मा—नही नह उसने मुझे लिखा है [पत्र दिखलाता है।] वह लिखता है कि वह अपने को तब तक जहाज के सामान मे छिपाए रहेगा, जब तक कि जहाज समुद्र मे नही पहुँच जाता।

बर्निक—अब मै उसे कभी न देखूँगा।

रुम्मेल—कैसी नासमझी की बात करते हो। एक अच्छा मजबूत जहाज, जिसकी अभी अभी मरम्मत हुई है .

विजलान्त—[जो औरों के पीछे बर्निक के कमरे से निकल आया है] और वह भी आप ही के कारखाने मे मिस्टर बर्निक।

बर्निक—मै कह तो रहा हूँ मै अब उसे कभी न देखूँगा। मैने उसे खो दिया लोना। और अब समझ रहा हूँ कि वह कभी वास्तव मे मेरा था ही नही। [आहट लेकर] यह क्या हो रहा है ?

रुम्मेल—गाना बजाना, जलूस आ रहा है।

बर्निक—मै इसमे कोई भाग नही ले सकता, मै नही लूँगा।

रुम्मेल—आप सोच क्या रहे है ? यह असम्भव है।

सान्स्तात—असम्भव मिस्टर बर्निक ! सोचिये तो आपकी कौन सी चीज़ बनने बिगड़ने को है ?

बर्निक—अब मुझसे इससे क्या मतलब ? अब मुझे किसके लिये कार्य करना है ?

रुम्मेल—आप ऐसा पूछ सकते हैं ? आपके लिये हम लोग हैं और यह समाज है।

विजलान्त—सच कहा।

सान्स्तात्—और निस्सन्देह मिस्टर बर्निक आप यह न भूले होगे कि हम [मर्था बाईं ओर के आखिरी दरवाजे से आती है। दूर पर गाना सुनाई पडता है, सडक पर।]

मर्था—जलूस आता है, लेकिन बेत्ती घर मे नहीं है। पता नही वह कहाँ

बर्निक—घर मे नहीं ! अब देखो लोना ! मेरे लिये कोई सहारा नही, न तो सुख मे और न दुख मे।

रुम्मेल—पर्दे उठाओ। इधर आओ और मेरी मदद करो आप ! और आप मिस्टर सान्स्तात ! बड़े दुःख की बात है कि परिवार अब तक इकट्ठा नही हो सका, यह तो कार्यक्रम के बिल्कुल उल्टा हुआ। [सभी पर्दे उठाते है। सारी सडक रोशनी मे जगमगा उठती है। मकान के सामने आतिशबाजी की चर्खी में ये शब्द देख पडते हैं—"हमारे समाज के स्तम्भ कारस्तेन वर्निक दीर्घजीवी हों"।

बर्निक—[कांपते हुए] यह सब हटाओ। मैं इसे देखना नही चाहता। अलग करो, अलग करो।

रुम्मेल—क्षमा कीजिये मिस्टर बर्निक ! लेकिन आप बीमार हो गये हैं क्या ?

मर्था—इन्हे हो क्या गया है, लोना ?

लोना—चुप ! [उसके कान में कुछ कहती है ।]

बर्निक—कह रहा हूँ इन उपहास के शब्दो को हटाओ । देख नही रहे हो कि इतनी रोशनी हमारा मजाक उड़ा रही है ?

रुम्मेल—खैर, मुझे वास्तव में मानना पड़ेगा .

बर्निक—ओह ! आप कैसे समझ सकते है ? लेकिन मुझे तो यह सब मुर्दे के कमरे मे मोमबत्ती की तरह .

रुम्मेल—खैर, मैं तो कहूँगा कि आप एक साधारण सी बात को बहुत बड़ी बना रहे हैं ।

सान्स्तात्—लड़का अटलान्टिक के उस पार तक के सफर का मजा लेगा और फिर लौट कर आपके यहाँ आ जायेगा ।

विजलान्त—केवल सर्वशक्तिमान मे विश्वास रखिये, मिस्टर बर्निक ।

रुम्मेल—और उस जहाज़ मे भी बर्निक ! वह डूब नहीं सकता, मैं जानता हूँ ।

क्राप—हूँ !

रुम्मेल—वह उन कमजोर जहाजो जैसा नही है जिन्हे लोगो के प्राणो की उपेक्षा कर के, सुनते हैं, बड़े देशों मे समुद्र मे भेजा जाता है ।

बर्निक—मै जानता हूँ मेरे बाल पक रहे है । [मिसेज बर्निक अपने कन्धे पर शाल डाले बगीचे की ओर से आती है ।]

मिसेज़ बर्निक—कारस्तेन ! कारस्तेन ! जानते हो ?

बर्निक—हाँ जानता हूँ लेकिन तुम, तुम जिसे पता नही कि क्या हो रहा है, तुम जिसके पास अपने बच्चे के लिये मां की आंखे नही है .

मिसेज़ बर्निक—मेरी बात भी तो सुनो ।

बर्निक—तुमने उसकी ख़बरदारी क्यो नही की ? अब तो मैंने उसे खो दिया । मुझे उसे लौटा दो अगर तुमसे हो सके ।

मिसेज़ बर्निक—हाँ, मैं लौटा सकती हूँ, मुझे वह मिल गया है ।

बर्निक—तुम्हे वह मिल गया है ?

सब पुरुष—वाह !

हिल्मा—मैंने भी यही सोचा था ।

मर्था—तुमने उसे फिर पा लिया कारस्तेन !

लोना—हाँ अब उसे अपना बनाओ ।

बर्निक—तुम्हे वह मिल गया है, यह सच है ? कहाँ है वह ?

मिसेज़ बर्निक—जब तक तुम उसे क्षमा नही कर दोगे, नहीं बताऊंगी ।

बर्निक—क्षमा कर दिया । लेकिन तुम्हे मालूम कैसे हुआ ?

मिसेज बर्निक—तुम नही जानते कि मां बराबर देखती रहती है । इस बारे मे तुम्हे कुछ भी पता देने मे मैं बहुत डर गई थी । उसने कल ज़रा सा कह दिया था, और उसके बाद उसका कमरा खाली था, उसका बेग और उसके कपड़े नही देख पड़े—

बर्निक—तब ? तब ?

मिसेज़ बर्निक—मैं दौड़ पड़ी और आउन को पकड़ लिया, उसकी नाव मे हम लोग चल पड़े । अमेरिकन जहाज खुलने ही को था । ईश्वर की कृपा से हम लोग मौके पर पहुँच गये, जहाज़ पर चढ़ गये, खूब खोजा और उसे पकड़ लिया । आह ! कारस्तेन ! उसे दण्ड मत देना ।

बर्निक—बेत्ती !

मिसेज़ वर्निक—और आउन को भी नही।

वर्निक—आउन ? उसके बारे मे तुम क्या जानती हो ? " इण्डियन गर्ल " फिर चल पड़ा क्या ?

मिसेज़ बर्निक—नहीं, यही तो बात है।

वर्निक—कहो, कहो।

मिसेज़ बर्निक—आउन भी मेरी ही तरह घबरा गया था। खोजने मे देर होने लगी, रात होगई थी और चलाने वाले विरोध करने लगे और तब आउन ने तुम्हारे नाम से

वर्निक—क्या ?

मिसेज़ वर्निक—कल तक के लिये जहाज़ का चलाना रुकवा दिया।

क्राप—हूँ।

वर्निक—आह। मैं कितना प्रसन्न हूँ।

मिसेज़ वर्निक—तुम नाराज़ नहीं हो ?

वर्निक—मैं कह नहीं सकता मैं कितना खुश हूँ बेत्ती !

रुम्मेल—आप बेशक छोटी सी बात को बहुत बढ़ा देते हैं।

हिल्मा—हाँ जी, जहाँ ज़रा सा भी प्रकृति की शक्तियों से युद्ध करने का मौका पड़ा ओफ !

क्राप—[खिड़की की ओर जाकर] मिस्टर वर्निक, जलूस आपके बगीचे के दरवाज़े से आ रहा है।

वर्निक—हाँ, अब वे आ सकते है।

रुम्मेल—सारा बगीचा लोगो से भर गया है।

सान्स्तात—सारी सड़क भरी है।

रुम्मेल—सारा कस्बा आ गया है बर्निक ! ऐसे मौके पर कोई भी गर्व कर सकता है।

विजलान्त—इसे सिर झुका कर स्वीकार करना चाहिए, मिस्टर रुम्मेल !

रुम्मेल—सभी झंडे उठे है। क्या सुन्दर जलूस है ! यह कमेटी के सदस्य आ रहे है, रारलुन्त को अध्यक्षता मे।

बर्निक—हाँ, उनको भीतर आने दीजिये।

रुम्मेल—लेकिन, बर्निक, आप इतनी घबराहट की हालत मे ..

बर्निक—खैर, तब ?

रुम्मेल—आप की जगह मै बोलना चाहता हूँ, अगर आप पसन्द करे।

बर्निक—नही, धन्यवाद है आप को। आज रात को मै खुद बोलूंगा।

रुम्मेल—लेकिन आप को ठीक मालूम है आप को क्या कहना है ?

बर्निक—हाँ, अपनी तबियत हल्की कीजिये, रुम्मेल ! मैं अब जानता हूँ क्या कहना है। [गाना जोर से होता है। बरामदे का दरवाजा खुलता है। रारलुन्त भीतर आता है कमेटी के सदस्यों का अगुआ बना हुआ, किराये के नौकरों से घिरा हुआ, जो ढँकी हुई टोकरी लिये हैं। उनके पीछे कस्बे के सभी श्रेणियों के लोग हैं, जितने कि एक कमरे में आ सकते हैं। बहुत बडी भीड झडे हिलाती हुई बगीचे मे और सडक पर देख पडती है।]

रारलुन्त—मिस्टर बर्निक ! मै देख रहा हूँ कि आप के मुँह के आश्चर्य के भाव से यह प्रकट है कि आप को इस बात का पता न

रहा होगा कि हम अतिथि आप के सुखी परिवार मे और आप के शान्त भवन मे इस तरह आ पड़ेंगे, जहाँ कि हम लोग देखते हैं आप उत्साही नागरिकों के बीच मे घिरे हैं। लेकिन हम लोगो के हृदय ने हम लोगो को बाध्य किया है यहाँ तक आकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिये, यह सच है कि पहली ही बार नहीं, किन्तु इतनी तैयारी के साथ पहली ही बार। जिस महान नैतिक आधार पर आप ने हमारे सामाजिक भवन का निर्माण किया है उसके लिये तो हम लोगों ने आप को न मालूम कितनी बार धन्यवाद दिया है। इस अवसर पर हम लोग अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं विशेषत. उस दूरदर्शी, अथक, स्वार्थहीन, नही आत्म-त्यागी नागरिक के प्रति, जिसने कि एक ऐसे आयोजन को अग्रसर किया है जिसके बारे मे हम सब लोग विश्वास कर रहे है कि उससे समाज की भौतिक समृद्धि को भारी प्रोत्साहन मिलेगा और जो कि हमारे समाज के लिए बड़े हित की बात होगी।

अवाजे—खूब, खूब!

रारलुन्त—महोदय, आप अनेक वर्षों से इधर हम लोगों के भीतर जगमगाते हुए उदाहरण रहे है। यह जगह ऐसी नहीं है कि जहाँ मै आप के पारिवारिक जीवन के विषय मे कुछ कहूँ, जो कि हम सब के लिए आदर्श रहा है, और न आप के निष्कलक चरित्र की प्रशंसा करने का अवसर है। यह बातें मनुष्य के अपने एकान्त घर से सम्बन्ध रखती है, इस प्रकार के सार्वजनिक अवसर से नही। मुझे यहाँ आप के सार्वजनिक जीवन के विषय मे कुछ कहना है, नागरिक की हैसियत से, जो कि हर किसी की आखो के सामने है। आप के कारखाने से सजे हुए जहाज दूर दूर समुद्रो मे जाते हैं और अपने साथ हमारा झंडा फहराते रहते है। मजदूरो का एक बहुत बड़ा और सुखी समुदाय

आप को पिता की तरह मानता है। नये नये कारवार खोल कर आपने सैकड़ो परिवारो के कल्याण की नींव डाली है। एक शब्द में, आप पूर्ण रूप से हमारे समाज के प्रधान स्तम्भ हैं।

आवाज़े—वाह ! वाह ! खूब !

रारलुन्त—और महोदय यही निस्स्वार्थ वृत्ति आपके चरित्र को और भी उज्ज्वल बना देती है, और हमारे समाज के लिये इतनी उपयोगी सिद्ध हुई है, शब्द जितना व्यक्त कर सकते है उससे कही अधिक—और वह भी विशेपतः इस समय। अब आप हम लोगो के लिये तैयार कराना चाहते हैं, जिसका रूखा नाम लेने मे मुझे कोई सकोच नही है—रेलवे।

आवाज़े—धन्य ! धन्य !

रारलुन्त—लेकिन ऐसा मालूम हो रहा है जैसे कि यह आयोजन रुकना चाहता है कुछ कठिनाइयो से, जिनकी जड़ मे संकीर्ण और स्वार्थमय विचार हैं।

आवाज़े—वाह ! वाह !

रारलुन्त—क्योंकि यह बात मालूम हुई है कि कुछ लोगो ने जो हमारे समाज के नहीं है यहाँ के परिश्रमी नागरिको के साथ अन्याय किया है और कुछ उपयोगी चीज़ो को अपने अधिकार मे कर लिया है जिनको कि न्यायतः हमारे समाज के लोगो के हाथ में आना चाहिये था।

आवाज़ें—यह ठीक है ! सुनो ! सुनो !

रारलुन्त—यह खेद का विषय स्वभावतः आपको भी मालूम हो गया है, मिस्टर वर्निक। लेकिन इसका कुछ भी प्रभाव आप के आयोजन को लेकर बढ़ने पर नहीं पड़ा है, यह अच्छी तरह

जानते हुए कि एक देश प्रेमी व्यक्ति को केवल अपने स्थानीय स्वार्थों का ही विचार नहीं करना चाहिये।

आवाजें—ओ ! नहीं, नही ! ठीक, ठीक !

रारलुन्त—ऐसे ही आदमी के प्रति, उस देशप्रेमी नागरिक के लिये, जिसके चरित्र का हम सब को सम्मान करना चाहिये, हम लोग आज रात अपनी कृतज्ञता प्रकट करने आये हैं। ईश्वर करे आप का आयोजन बढ़कर वास्तविक रूप धारण करे और इस समाज के लिये सदैव कल्याणकर हो। यह सच है कि रेलवे के कारण हम लोगो में बाहरी बुराइयाँ प्रवेश कर सकती हैं, लेकिन इससे हम लोगों को उन्हे भीतर से निकाल बाहर करने का भी साधन मिल रहा है। क्योकि हम भी इस समय इस प्रकार के बाहरी प्रभावों से मुक्त होने का दावा नही कर सकते। लेकिन आज ही की रात, अगर उड़ती बातों का विश्वास करें, तो हम उस प्रकार के कुछ अवाछनीय संसर्गों से मुक्त हो रहे हैं, जितनी आशा की जाती थी उससे पहले ही।

आवाजे—सुनो सुनो।

रारलुन्त—मैं इस घटना को अपने नए कार्य के लिए एक शुभ लक्षण मानता हूँ। मेरे इस समय उस का उल्लेख करने का आशय इसी बात पर जोर देना है कि हम जिस घर में खड़े हैं उसमें रिश्तेदारी के बन्धन से भी अधिक सदाचार और नैतिकता को महत्व दिया जाता है।

आवाजें—धन्य, धन्य ! सुनो, सुनो !

बर्निक—[उसी समय] मुझे भी आज्ञा दीजिये

रारलुन्त—मुझे थोड़े से ही शब्द और कहने है, मिस्टर बर्निक ! अपने जन्म स्थान के लिये आपने जो कुछ भी किया है हम सब

लोग जानते है कि उसमे आपका कोई अपना स्वार्थ नहीं रहा है। लेकिन तिस पर भी आपको अपने नागरिक भाइयों की कृतज्ञता को अस्वीकार नही करना चाहिए, विशेषतः ऐसे महान अवसर पर जब कि समझदारो के कहने के अनुसार, हम लोग एक नये युग के द्वार के पास पहुँच गये है।

आवाजें - खूब, खूब ! सुनो, सुनो !

[रारलुन्त नौकरों को इशारा करता है। वे टोकरियाँ लेकर आगे बढ़ते है। एक ओर भाषण चलता है, दूसरी ओर कमेटी के सदस्य विभिन्न वस्तुओं को निकाल कर उपहार देते हैं।]

रारलुन्त—इसलिये मिस्टर बर्निक ! हम लोग खुशी से आप को यह चाँदी का काफी का सैट उपहार देते है। यह आपकी मेज़ पर शोभा दे जब भविष्य मे, पहले कई बार की भांति हम लोगो को आपकी उदार छत के नीचे इकट्ठा होने का आनन्द प्राप्त हो।

आप लोगो से भी महाशयो, जिन्होने इतनी उदारता से हमारे समाज के नेता का अनुमोदन किया है, हम लोग प्रार्थना करते हैं इन साधारण चीज़ो को स्वीकार करने के लिये। यह चांदी का ग्लास आपके लिये है, मिस्टर रुम्मेल ! कई वार आपने ग्लासो की रगड़ मे अपने नागरिक भाइयो के हित की रक्षा की है, सुन्दर से सुन्दर शब्दो मे। ईश्वर करे आपको वैसेही अवसर बराबर मिलते रहे, इस ग्लास को उठाकर खाली करने के, किसी देश हितैषी भोज मे। आपको मिस्टर सान्स्तात ! मै यह आपके नागरिक भाइयो के चित्रो का अल्बम उपहार देता हूँ। आपकी उदारता के फल-स्वरूप समाज की सभी श्रेणियो मे आपके मित्र मौजूद है। और आपको मिस्टर विजलान्त ! मै उपहार देता हूँ पारिवारिक प्रेम की यह पुस्तक, सुन्दर छपी और मँढ़ी हुई, आपकी पढ़ने

की मेज़ को सुशोभित करने के लिये। समय के सुन्दर प्रभाव ने आपमे जीवन की ओर गम्भीरता से देखने की वृत्ति पैदा कर दी है। अपने दैनिक कर्तव्यो का पालन करने का उत्साह बहुत समय से ऊँचे और महान विचारो के कारण पवित्र और स्वर्गीय हो गया है। [भीड की ओर घूमता है] और अब मित्रो! मिस्टर वर्निक और उनके साथियो के लिये जय घोष ! हमारे समाज के स्तम्भो के लिये जय घोष !

भीड—वर्निक की, समाज के स्तम्भ की जय हो ! जय हो ! जय हो !

लोना—मैं आपको बधाई देती हूँ जीजा !

[भीड में उत्साह फैल जाता है।]

वर्निक—[गभीरता से और धीरे से कहता है] मेरे नागरिक भाइयो ! आपके अध्यक्ष ने अभी कहा है कि हम लोग नये युग के किनारे पहुँच गये हैं। मुझे विश्वास है यह सच होकर रहेगा। लेकिन यह तभी होगा जब हम सत्य का अटूट सहारा लेगे—सत्य जो कि आज रात तक हर हालत मे और हर स्थिति मे हमारे इस समाज के लिये अपरिचित रहा है। [सुनने वालों में आश्चर्य] इस उद्देश्य से, मुझे आपकी उस प्रशंसा का विरोध करना होगा, जिससे कि मिस्टर राटलुन्त ! जैसा कि ऐसे अवसरो का नियम है, आपने मुझे लाद दिया है। मै इसका अधिकारी नहीं हूँ क्यों कि आज तक के मेरे काम केवल स्वार्थहीन ही नहीं रहे हैं। गोकि मै सदैव आर्थिक लाभ का विचार नहीं करता रहा हूँ, लेकिन यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि शक्ति, प्रभाव और हैसियत का लोभ मेरे सभी कामो की जड़ में रहा है।

रुम्मेल—[कुछ जोर से] इसके आगे ?

बर्निक—अपने नागरिक भाइयो के सामने खड़ा होकर मैं इसके लिये अपने को धिक्कार नही देता, क्योकि मैं अब भी सोचता हूँ कि अपने कर्तव्यशील भाइयो मे मैं अब भी आगे की एक जगह का अधिकारी हूँ।

आवाजे—जरूर, जरूर, जरूर।

बर्निक—लेकिन जिस बात के लिये मै अपने को दोष देता हूँ, यह है कि मै अक्सर इतना कमजोर रहा हूँ कि मैने धोखे का सहारा लिया है, क्योकि मैं जानता था और डरता था अपने समाज की प्रवृत्ति से, जो किसी भी प्रसिद्ध आदमी के काम मे बुरे उद्देश्यो को ढूँढ़ निकालने की रही है। और अब मै एक ऐसी बात पर आ रहा हूँ जो कि इसे साफ कर देगी।

रुम्मेल—[अन्यमनस्क होकर] हूँ, हूँ।

बर्निक—कस्बे के बाहर बहुत बड़ी जायदाद खरीदे जाने की खबर उड़ती रही है। यह सब मैंने खरीदी है, केवल मैंने और किसी ने नही। [धीमी आवाजे—क्या कह रहे हैं?" वे ? बर्निक?] सभी जायदाद इस समय अकेले मेरे हाथ मे है। स्वभावत मैने यह अपने साथियो को बता रक्खा है, मिस्टर रुम्मेल, मिस्टर विजलान्त, मिस्टर सान्स्तात और हम सब लोगो ने यह तै किया है कि

रुम्मेल—यह सच नही है। सावित कीजिये, साबित कीजिये।

विजलान्त—हम सब लोग अभी किसी बात पर एक मत नही हो पाए है।

सान्स्तात—खैर मुझे कहना होगा

बर्निक—यह बिल्कुल ठीक है। मै जो बात कहने जारहा था,

अभी हम सब इस बात मे सहमत नही है। लेकिन मुझे पूरी आशा है कि ये तीनो महाशय मेरे साथ बिल्कुल सहमत हो जायेंगे। अब मै घोषणा करता हूँ कि आज रात मैंने निश्चय कर लिया है कि यह सभी जायदाद एक कम्पनी के द्वारा उपयोग मे लाई जायेगी जिसके हिस्से सर्वसाधारण मे बाँट दिये जायेगे, जिस किसी की इच्छा होगी हिस्सा खरीद सकेगा।

आवाजें—वाह, वाह! बर्निक की जय हो!

रुम्मेल—[धीरे से बर्निक से] यह भयंकर विश्वासघात है!

सान्स्तात—[वह भी धीरे से] तो आप हम लोगो को उल्लू बना रहे थे!

विजलान्त—खैर, बुरा हो। हे ईश्वर! मै कह क्या रहा हूँ? [बाहर जय घोष होता है।]

बर्निक—शान्त हूजिये, महाशयो! आपकी इस कृतज्ञता का मुझे अधिकार नही, क्योकि मैने जो अभी निश्चित किया है वह मेरा जो पहले उद्देश्य था उसके अनुसार नही है। मेरी नीयत थी सब कुछ अपने ही पास रख लेने की, और अब भी मेरी राय है कि यह जायदाद तभी फायदा देगी जब यह एक आदमी के हाथ में रहेगी। लेकिन यह निश्चित करने के लिये आप पूरे स्वतन्त्र है। अगर आप चाहे, मै अपनी शक्ति भर उसकी देख रेख करने के लिये तैयार हूँ।

आवाजें—जरूर, जरूर, जरूर!

बर्निक—लेकिन सबसे पहले मेरे नागरिक भाइयो को मुझे अच्छी तरह से जान लेना चाहिये। और हर एक आदमी स्वयं अपने को भी अच्छी तरह जान ले और इस तरह यह सच हो जाय कि आज रात को हम लोग एक नया युग आरम्भ कर रहे है। बीता हुआ युग, अपने बनावटीपन, अपने ढोंग, अपनी

निस्सारता, अपनी दिखावटी नैतिकता और अपने लोकमत के लज्जास्पद भय, के साथ हम लोगो के लिये अब अजायबघर सा रहेगा—जिससे हम लोगो का मनोरंजन होगा और हम लोगो को शिक्षा मिलेगी, और उस अजायब घर को हम लोग उपहार देंगे—देंगे न सज्जनो—यह प्याला, ग्लास, अल्बम और पारिवारिक प्रेम की सुन्दर पुस्तक।

रुम्मेल—आह! क्यो नहीं?

विजलान्त—[दबी जबान से] अगर तुम ने और सब ले ले लिया है तो

सान्स्तात—जरूर!

बर्निक—और अब समाज के सम्मुख मुझे अपनी खास बात रखनी है। मिस्टर रारलुन्त ने कहा था कि आज शाम को कुछ अवांछनीय संसर्गों से हमे मुक्ति मिल गई है। मै इसमे वह और जोड़ सकता हूँ जो अभी किसी को मालूम नहीं है। जिस आदमी की बात हुई थी वह अकेला नही गया, उसके साथ उसकी स्त्री होने के लिये गई है

लोना—[जोर से] दीना दार्फ।

रारलुन्त—क्या?

मिसेज़ बर्निक—क्या? [बड़ी खलबली मचती है।]

रारलुन्त—भाग गई? उसके साथ भाग गई? असम्भव!

बर्निक—उसकी स्त्री बनने के लिये मिस्टर रारलुन्त! और मैं और भी कहूँगा। [धोरे से अपनी स्त्री से] बेत्ती! जो कहा जा रहा है उसे सुनने के लिये दिल कड़ा कर लो। [जोर से] मुझे यह कहना है, वह आदमी श्रद्धा का अधिकारी है, क्योंकि उसने महानता के साथ दूसरे का अपराध अपने कन्धे पर उठा लिया था।

मेरे मित्रो ! मैं असत्य से निकलना चाहता हूँ, इसने मेरे अस्तित्व के एक एक रेशे को जहरीला बना दिया है। आप लोगो को सब मालूम हो जायेगा। पन्द्रह वर्ष पहले मै ही अपराधी आदमी था।

मिसेज़ वर्निक—[नम्रता के साथ और कापती हुए] कारस्तेन !

मर्था—[उसी तरह से] हाय जान !

लोना—अब अन्त मे तुमने अपने को पहचाना है !

[लोगों में सन्नाटा और उद्वेग]

वर्निक—हॉ, मित्रो, मै अपराधी था और वह भाग गया। जो भयङ्कर और झूठी अफवाहे चारो ओर उड़ी, उनको मिटा देना अब मनुष्य की शक्ति के वाहर की बात है, लेकिन उसकी शिकायत करने का अधिकार मुझे नही है। पन्द्रह वर्ष तक मैं सफलता की सीढ़ी पर चढ़ता गया हूँ उन्हीं अफवाहो की सहायता से। अब वे मुझे फिर से गिरायें या नही, इस का आप लोगों मे से हर एक को अपने दिल मे निर्णय करना चाहिये।

रारलुन्त—क्या ? यह वज्र ! हमारा सर्वश्रेष्ठ नागरिक . [वेत्ती से धीमे स्वर में] आप के लिये मुझे कितना खेद है मिसेज वर्निक !

हिल्मा—कैसी स्वीकारोक्ति ! खैर, मुझे कहना होगा

वर्निक—लेकिन आज की रात आप लोग कुछ निर्णय न कर लें। मैं प्रार्थना करता हूँ हर एक से अपने घर जाने के लिये, अपने विचारो को स्थिर करने के लिये, अपने दिल को भी देखने के लिये। जब आप फिर शान्ति से विचार कर सकें तब मैं देखूँगा कि सत्य कह देने से मै जीत गया या हार। नमस्कार, मुझे पश्चात्ताप के लिये अभी बहुत कुछ है, लेकिन उसका सम्बन्ध

केवल मेरा अन्तरात्मा से है। विदा ! प्रसन्नता की इन सब चीज़ो को ले जाइये। हम सब लोगो को जानना चाहिये कि ये चीज़े यहाँ शोभा नही देती।

रारलुन्त—निस्सन्देह नही देती। [मिसेज वर्निक से धीमे स्वर मे] भाग गई ! तो वह मेरे लिये बिल्कुल अयोग्य थी। [कमेटी ,के सदस्यों से जोर से] हाँ, सज्जनो, इसके बाद जितनी शान्ति से हो सके हम लोगों को चले जाना चाहिये।

हिल्मा—इसके बाद, आदर्श के झण्डे को कैसे ऊँचा रख सकता है कोई ? ओफ !

[इसी बीच मे यह बात एक से दूसरे कानों मे चली गई है। भीड धीरे धीरे बगीचे से निकल जाती है। रुम्मेल, सान्स्तात और विजलान्त बाहर निकल जाते है, आपस मे बहस करते हुए, लेकिन धीरे धीरे। हिल्मा दाहिनी ओर हट जाता है। जब फिर शान्ति होती है तो कमरे मे केवल बर्निक, मिसेज बर्निक, मर्था, लोना और क्राप रह जाते है।]

बर्निक—बेत्ती ! तुम मुझे क्षमा कर सकोगी ?

मिसेज़ बर्निक—[उसकी ओर मुस्करा कर देखते हुए] जानते हो कारस्तेन ! तुमने मेरे लिये ऐसे आनन्द का मार्ग खोल दिया है जैसा वर्षों से नसीब नही हुआ था।

बर्निक—कैसे ?

मिसेज बर्निक—कई वर्षो तक मैने अनुभव किया है कि कभी तुम मेरे थे लेकिन अब मैं तुमको खो चुकी हूँ। अब मै जानती हूँ कि तुम मेरे कभी नही थे अब तक, लेकिन अब मैं तुम्हे पा सकूँगी।

बर्निक—[उसे अपनी बाहों मे जकडते हुए] आह ! बेत्ती ! तुमने मुझे पा लिया। सब से पहले लोना ने मुझे तुम्हे समझने के लायक बनाया था। लेकिन अब ओलाफ को मेरे पास आने दो।

मिसेज़ बर्निक—हाँ, अब वह तुम्हारे पास आयेगा। मिस्टर क्राप! [क्राप को कुछ हटा कर धीरे से उससे कहती है। वह बगीचे के दरवाजे से बाहर जाता है। तब तक मकानों की रोशनी और सजावट धीरे धीरे मिट जाती है।]

बर्निक—[धीमे स्वर मे] धन्यवाद है तुम्हे लोना! तुमने मुझ मे जो सब से सुन्दर था उसकी रक्षा की है और मेरे लिये।

लोना—तुम समझते हो कि मै कुछ और करना चाहती थी इसके अतिरिक्त ?

बर्निक—हाँ, ऐसा था—या नही ? मै तुम्हे समझ नही सकता।

लोना—हूँ!

बर्निक—तब यह घृणा नही थी ? प्रतिहिंसा नही थी ? तब तुम यहां क्यो लौट आई ?

लोना—पुरानी मित्रता कभी टूटती नही।

बर्निक—लोना!

लोना—जब जान ने मुझसे इस झूठ के बारे मे कहा, तो मैंने शपथ ली कि मेरे यौवन काल का वीर सच्चा और स्वतन्त्र होकर सिर उठायेगा।

बर्निक—मै कितना नीच हूँ! और तुमसे मुझे इसका कितना कम अधिकार था!

लोना—आह! अगर हम स्त्रियां बराबर यही देखती कि हमारा अधिकार क्या है तो कारस्तेन! [आउन ओलाफ के साथ बगीचे की ओर से आता है।]

बर्निक—[उनसे मिलने के लिये बढ़ता है] ओलाफ!

ओलाफ—पिताजी, मै प्रतिज्ञा करता हूँ, फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा ।

वर्निक —कभी नही भागोगे ?

ओलाफ—हाँ, हाँ, प्रतिज्ञा करता हूँ पिता जी ।

वर्निक—और मै प्रतिज्ञा करता हूँ कि कभी तुम्हे भागने के लिए कारण नही मिलेगा। भविष्य मे तुम्हे स्वयं बढ़ने का अवसर मिलेगा, मेरे जीवन के कार्य के उत्तराधिकारी के रूप मे नही, वल्कि उसकी तरह जिसके सामने उसके अपने जीवन का कार्य पड़ा है ।

ओलाफ—और मुझे अवसर मिलेगा कि मैं बढ़ने पर जो चाहूँ बनूँ ?

वर्निक—हाँ ।

ओलाफ—धन्यवाद है। तब मै समाज का स्तम्भ नही बनूँगा।

वर्निक—नही ? क्यो नही ?

ओलाफ—नहीं, मैं समझता हूँ यह रोचक नही है।

वर्निक—तुम स्वयं तुम बनोगे ओलाफ! और सब बातें स्वयं होती रहेगी। और तुम आउन

आउन—मै जानता हूँ मिस्टर वर्निक, मैं वरख्वास्त कर दिया गया।

वर्निक—हम दोनो इसी तरह साथ रहेंगे, आउन! और मुझे क्षमा करो

आउन—क्या ? जहाज़ तो आज रात को नही चल सका।

वर्निक—और न वह कल चल सकेगा । मैंने तुम्हे बहुत कम समय दिया था। उसकी मरम्मत खूब ठिकाने से हो जानी चाहिये।

आउन--अच्छी बात है, मिस्टर वर्निक ! यही होगा और वह भी नई मशीन से।

वर्निक—सब तरह से, लेकिन ठिकाने के साथ और ईमानदारी से। हम लोगो मे भी बहुतेरे हैं जिनकी सब ओर से और ईमानदारी के साथ मरम्मत होने की ज़रूरत है आउन ! खैर, नमस्कार।

आउन—वन्दगी हुज़ूर. और धन्यवाद है आपको, धन्यवाद है। [चला जाता है ।]

मिसेज वर्निक—अब सब चले गये।

वर्निक—और हम लोग अकेले रह गये। मेरा नाम सुनहले अक्षरो मे अब नहीं चमक रहा है, खिड़कियो की सभी रोशनी बुझ गई।

लोना—तुम उन्हे फिर जलाना चाहोगे ?

वर्निक—अब दुनिया की किसी चीज के लिये नहीं। मै कहाँ रहा हूँ, तुम सुनकर काँप उठोगी। मै अनुभव कर रहा हूँ कि जैसे मुझे अब होश हुआ है, जहर खा लेने के बाद। लेकिन मै यह भी अनुभव कर रहा हूँ कि मैं फिर जवान और स्वस्थ हो सकता हूँ। आह ! आओ। मेरे पास आओ। मेरे चारो तरफ आओ। बेत्ती ! आओ, आओ, ओलाफ ! मेरे बेटे ! और तुम भी मर्था ! मुझे मालूम हो रहा है कि जैसे कई वर्षो से मैंने तुम सब को नहीं देखा है।

लोना—नहीं देखा, मै इसका विश्वास कर सकती हूँ। तुम्हारा समाज अविवाहितो का समाज है ! तुम लोग स्त्री को नही जानते।

वर्निक—यह बिलकुल सच है, और इसीलिये यह समझौता रहा लोना ! कि तुम्हे बेत्ती को और मुझको छोड़ना नहीं चाहिये।

मिसेज बर्निक—नही लोना ! तुम्हे नही जाना चाहिये ।

लोना—नही, मेरा हृदय कैसे चाहेगा तुम जैसे अनुभवहीन स्त्री पुरुष को छोड़कर जाने के लिये, जो अभी घर बसाना सीख रहे हैं ? मै क्या तुम्हारी माँ नही हूं ? तुम और मै मर्था ! दो बूढ़ी काकी ? तुम देख क्या रही हो ?

मर्था—देखो आकाश कैसा साफ हो रहा है और समुद्र पर कैसी रोशनी पड़ रही है । "पाम ट्री"की यात्रा सौभाग्यपूर्ण होगी ।

लोना—वह अपना सुन्दर भाग्य अपने ऊपर लिये जा रहा है ।

बर्निक—और हम ? हमको ईमानदारी के साथ काम करने के लिये लम्बा दिन आ रहा है ; सबसे अधिक मेरे लिये । लेकिन वह आवे, केवल तुम हृदय से मेरे चारो ओर रहो, तुम सच्ची, स्नेह-मयी देवियो । मैने इन दो चार दिनो मे यह भी जान लिया है कि देवियो तुम्ही समाज की स्तम्भ हो ।

लोना—तब तो तुमको बड़ी मामूली समझदारी की बात मालूम हुई है, जीजा ! [अपना हाथ सम्हाल कर उसके कन्धे पर रखती है ।] नही, मेरे मित्र ! सत्य और स्वतन्त्रता के भाव, ये ही समाज के स्तम्भ है ।